भाइयो और बहिनो...

अंक १

प्रार्थना-सभाओं में गांधी जी के भाषण

दिल्ली, १२-६-४७ से २१-६-४७ तक

* *

अंक १

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
मिनिस्ट्री आफ इन्फार्मेशन ऐण्ड ब्राडकास्टिंग
गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया

*

मूल्य—चार आने

भूमिका

महात्मा गांधी की दिल्ली की प्रार्थना-सभाओं में दिये गये ७ भाषणों की यह पहली किस्त हम जनता के सामने उपस्थित कर रहे हैं। इसी प्रकार महात्मा जी के सारे भाषणों के संग्रह को निकालने का प्रबन्ध किया गया है।

महात्मा जी के सन्देश की जनता को आवश्यकता है यह कहने की बात नहीं। क्षुब्ध वातावरण को शान्त करने तथा जनता के हृदय में शान्ति स्थापित करने में ये भाषण निश्चय ही सहायक सिद्ध होंगे।

* *

१२ सितम्बर, १९४७

पहली बात तो मैं आपको यह कहना चाहता हूँ कि आज जो खबर मेरे पास सरहदी सूबे से आ गई है वह खतरनाक बात है। मेरा दिल तो उससे दुखी होता ही है। सरहदी सूबे में मैं काफी दिनों तक रहा हूँ। बादशाह खान मेरे साथ थे। डाक्टर खाँसाहब के घर पर रहता था। लीगवाले दोस्तों से मुहब्बत से मिलता था। जब मैं यह सुनता हूँ कि वहाँ अब तो कोई हिन्दू या सिक्ख आराम से नहीं रह सकता तो मुझे आश्चर्य होता है। हिन्दू और सिक्ख वहाँ काफी तादाद में थे लेकिन मुसलमानों के सामने उनकी तादाद छोटी ही थी। कितनी भी छोटी क्यों न हो, उससे क्या ? बात तो यह है कि एक भी मासूम बच्चा वहाँ रहे तो उसको भी सुरक्षित होना चाहिये।

जैसा मैं अपने लिये सोचता हूँ वैसा ही मैं आपको कह सकता हूँ कि हम कभी गुस्से में न आएं। दुःख मानना है तो मानें। हमारे दिल में हमारे दुःखी भाइयों के लिये दिलचस्पी होनी चाहिये, उनके लिये हमारे दिल में हमदर्दी होनी चाहिये। वे मारे जाते हैं तो हम मुसलमानों को क्यों न मारें, यह दिल में आ सकता है। लेकिन जिन्होंने हमारे भाइयों को मारा उन्हें तो मैं मार नहीं सकता। उनके बदले दूसरे बेगुनाहों को मारने की तैयारी करूँ ? जितनों को मार सकते हैं मारना, वहाँ जो हुआ उसका जितना हो सके बदला लेना, इसका नाम वैरभाव हुआ—मैं इस चीज़ को नहीं मानता कि कोई बुराई करता है तो उसका बदला बुरा बनकर लूँ। जो बुराई करता है, वह वहशियाना बात करता है, वह जंगली बन जाता है, मूर्ख बन जाता है, तो क्या मैं भी मूर्ख और जंगली बनूँ ? मेरे ही लोग मूर्ख बन गये, दीवाने बन गये तो क्या उनको मारूँ ? मैं आपको अपने बचपन की बात सुनाऊँ। उस वक्त मैं शायद दस वर्ष का था। मेरा

बड़ा भाई बीमार पड़ गया। दीवाना सा बन गया। मगर सब ने उस पर दया ही की। उसके लिये डाक्टर बुलाया, यह बुलाया, वह बुलाया लेकिन जेलर को नहीं बुलाया। इसको कैद में भेज दो ऐसा नहीं कहा। यह दीवाना हो गया है, फौज बुलाओ ऐसा नहीं कहा, मेरा बाप सब कुछ कर सकता था। क्यों नहीं किया? वह उसका लड़का था। बाप कहता था, क्या लड़के को मार डालूँ? तो जैसे अपना लड़का है, भाई है, ऐसे मेरे सभी भाई हैं। मैं आपको कहूँगा कि हम ऐसा न कहें कि मुसलमान हमारे दुश्मन हैं। कितने मुसलमान मैं बता सकता हूँ जो मेरे दोस्त हैं। उनके घर में मैं रह सकता हूँ। वे मेरे घर में रहते हैं। उनके घर में मैं रहूँ तो वे मेरी बड़ी हिफाज़त करेंगे। चूँकि यहाँ हिन्दुस्तान में आज पाकिस्तान बन गया हिन्दुस्तान में जो सब मुसलमान हैं उन्हें काटना इन्सान का काम नहीं है। इसलिये मैं आपको यह सुनाता हूँ और आपकी मार्फत सब को। वहाँ की, पाकिस्तान की, हकूमत तो अपना काम भूल गई। कायदे आजम जिन्ना साहब जो पाकिस्तान के गवर्नर जनरल हैं, वहाँ के जो गवर्नर हैं, उनको मैं कहूँगा कि आप ऐसा न करें। जितनी बातें अखबार में आई हैं, अगर वे सही हैं, तो मैं उनसे कहूँगा कि वहाँ हिन्दू सिख आपकी सेवा के लिये ही पड़े हैं। आज वे क्यों डरते हैं? इसलिये कि उनको और उनकी बीवियों को मर जाना पड़ेगा, उनकी बीवियों को कोई उठा ले जायगा। उन्हें खतरा है सो वे भागते हैं। वहाँ की हकूमत में ऐसा क्यों? अपने लोगों को भी मैं कहना चाहता हूँ कि आप ऐसे जाहिल न बनें। यहाँ दिल्ली में हिन्दू-सिख कहें कि चूँकि पाकिस्तान में हिन्दू-सिख मुसीबत में पड़े हैं, वहाँ उन्हें बर्बाद कर दिया गया है, करोड़ों की जायदाद वहाँ छोड़ कर ये आये हैं, उसका बदला यहाँ लेंगे तो यह जहालत है। मैंने पाकिस्तान के हिन्दू-सिखों की दशा देखी है। मैं लाहौर में रहा हूँ। क्या मुझे दुःख नहीं होता? मेरा दावा है कि मेरा दुःख किसी पंजाबी के दुःख से कम नहीं। अगर कोई पंजाबी हिन्दू या सिख मुझे आकर कहेगा कि उसकी जलन ज्यादा है क्योंकि उसका भाई मर गया है, लड़की मर गयी है, बाप मर गया है, तो मैं कहूँगा, उसका भाई मेरा भाई है, उसकी लड़की मेरी लड़की है, उसकी माँ मेरी माँ है। मेरे दिल में भी उसके जितनी ही जलन है। मैं भी इन्सान हूँ। गुस्सा आ जाता है। पर उसे पी जाता हूँ। उससे मुझ में शक्ति पैदा होती है। उस शक्ति से क्या बदला लूँ? बदला कैसे लूँ कि वे खुद अपने गुनाह के लिये पश्चाताप करें। कहें हम से बड़ा गुनाह हो गया है। जो मुसलमानों ने वेस्ट पंजाब में किया है वह सब के सामने है। वे हिन्दू-सिख ऐसा करके मारें उससे क्या? लेकिन वे धर्म को मारते हैं, उसका

वे क्या करेंगे ? उसका जवाब वे किसको देने वाले हैं ? यह सब मैं जानता हूँ। लेकिन वे जाहिल बनते हैं इस लिये मैं यह कहूँ कि दिल्ली के हिन्दू दिल्ली के सिक्ख और जो कोई भी यहाँ बाहर से आये हैं वे जाहिल बनें ? मैं उम्मीद करता हूँ कि वे ऐसा नहीं करेंगे, ऐसे पागल नहीं बनेंगे, ताकि बाद में आने वाले यह कहें कि हमारे बाप-दादे—हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान सब ऐसे पागल बन गये कि उनको एक मोटी रोटी जिसका नाम आज़ादी था वह मिल गई, पर उसको वे हज़म नहीं कर सके, खा नहीं सके। उस रोटी को उन्होंने दरिया में फेंक दिया और ऐसा कहकर हम पर थूकें। मैं आपको कहता हूँ कि हम सावधान नहीं बन जाते हैं तो ऐसा ज़माना आ रहा है।

आज मैं जुमा मस्जिद में गया था। उनकी बीवियों को मिला। कोई रोती थी, कोई अपने बच्चे को मेरे पास लाती थी कि मेरा यह हाल है। इनको मैं क्या कहूँ ? कि वहाँ वेस्ट-पंजाब में हिन्दुओं का, सिक्खों का क्या हाल हुआ है, यह सब उनको जाकर सुनाऊं कि सरहदी सूबे में क्या हुआ वह सुनाऊं ? वह सब सुना कर क्या करूं ? ऐसा करने से पंजाब के हिन्दू-सिखों का दर्द क्या मिट जायेगा ?

पाकिस्तान वाले जाहिल बने, उसके सामने हिन्दू और सिख भी जाहिल बन गये। तो एक जाहिल दूसरे जाहिल को क्या कहने वाला था ? इसलिये तो आपसे यह कहूँगा, आप सारे हिन्दू धर्म को सिख धर्म को बचाने का काम करें। हिन्दुस्तान को और पाकिस्तान को, सारे देश को बचाने का काम करें। हम आखिर तक शरीफ़ रहें तो पाकिस्तान में मुसलमानों को शरीफ़ बनना ही है। यह दुनिया का कानून है। इस कानून को कोई बदल नहीं सकता। यह आपको एक बूढ़ा सुना रहा है, जिसने धर्म का काफ़ी अभ्यास किया है। हरेक का भला करने की कोशिश की है। ७८, ७९ वर्ष में मैंने काफी तजुर्बा लिया है। मैं कोई आँखें बन्द करके दुनिया में नहीं घूमा। बीस वर्ष तक हिन्दुस्तान के बाहर रहा हूँ। दक्षिण अफरीका जैसे जंगली मुल्क में जो हब्शी लोगों से भरा हुआ है, उनके बीच में मैं रहा और राम नाम नहीं भूला। राम का नाम याद रखता था और तभी तो मैं वहाँ रह सका। इसलिये मैं आपको अपने तजुर्बे से कह सकता हूँ कि हमारा काम नहीं है कि अगर किसी ने हमारे साथ बुरा किया हो तो हम उसका बुरा करके बदला लें। बुरे का बदला हम भला करके लें, यह सच्ची इन्सानियत है। जो भले के बदले भला करता है वह तो बनियाँ बन गया और झूठा बनियाँ। मैं कहता हूँ कि मैं बनियाँ हूँ मगर सच्चा। आप झूठे बनियाँ न बनें। सच्चा वह इन्सान है जो बुरे का बदला भले से करता है।

यह मैंने बचपन से सीखा और इतना तजुर्बा होने के बाद समझ सकता हूँ कि यह सच्ची बात है। तो मैं आपको कहता हूँ कि बुरे का बदला हम भले बन कर लें।

वे लोग मस्जिद में बेहाल पड़े थे। जुमे के रोज इतने इकट्ठे हो गये, तो नाटक करने के लिये नहीं। उन्होंने सुन लिया था मैंने कलकत्ते में मुसलमानों के लिये कुछ किया, बिहार में कुछ किया, नोआखाली में हिन्दुओं के लिए कुछ किया, सो उन्होंने सोचा, अच्छा वह आ गया है। अपने आप को सनातनी हिन्दू कहता है और इसलिए मुसलमान, सिख, पारसी और क्रिस्टी होने का भी दावा करता है। तो उससे पूछो तो सही कि हमारे लिए क्या करना चाहता है?

एक माता ने कहा मेरा बच्चा मर गया है, मैं क्या करूं? मैंने कहा माँ मैं तुझे क्या बताऊं? खुदा को याद कर, ईश्वर तेरा भला करेगा। बच्चा मर गया, सब मर गए तो क्या हुआ। तू भी तो इसी रास्ते पर जाने वाली है। छुरी से नहीं तो शायद कालरे से मर जायगी। तू हमेशा जिन्दा थोड़े ही रहने वाली है? इसलिये खुदा का नाम ले और हँस—रो कर क्या करेगी?

ऐसी घटनाएँ क्यों होती हैं? ऐसे हम जाहिल क्यों बनें? हम अपने धर्म को पहिचानें। उस धर्म के मुताबिक मैं सब लोगों को कहूँगा कि यह हमारा परम धर्म है कि हम किसी हिन्दू को पागल न बनने दें, किसी सिक्ख को पागल न बनने दें। मैं कहना चाहता हूँ कि सब मुसलमान जो अपनी अपनी जगहों से हट गये हैं, उन्हें वापिस भेजो। मेरी हिम्मत नहीं है कि मैं आज उन्हें भेजूं, मगर उन्हें वापिस भेजना है यह आप अपने दिल में रक्खें। मैं तो रखता हूँ। हमें शान्ति नहीं हो सकती है जब तक सब मुसलमान जिन जगहों से निकले हैं, वहीं फिर न चले जायँ। हाँ एक बात है। आज मुझे लोग सुनाते हैं कि मुसलमान आज तो अपने घरों में छुरा रखता है, गोला बारूद रखता है, मशीनगन रखता है—स्टेन-गन मैंने तो देखी भी नहीं है, वह सब रखता है। जैसे कि सब्जी-मंडी में। मैंने सब सुना है, देखा तो नहीं, लेकिन मैं सब मानने को तैयार हूँ। पर उससे हम क्यों डरें? मैं तो मुसलमानों को कहूँगा और दिल्ली में तो सबको कहता हूँ कि आप एक एलान निकालें और खुदा को हाजिर नाजिर जानकर, ईश्वर को साक्षी करके उसमें कहें कि पाकिस्तान में कुछ भी हो उस गुनाह के लिए हमको आप क्यों मारें? हम तो आपके दोस्त हैं। हम हिन्दुस्तान के हैं और रहेंगे। दिल्ली कोई छोटी नहीं है, देश की राजधानी है, पाये तख्त है। यहां बड़ी आलीशान जुमा मस्जिद पड़ी है, यहां फोर्ट भी है वह आपने नहीं बनायी है, मैंने नहीं बनायी है, हिन्दू ने नहीं बनायी है। वह तो

मुग़लों की बनायी हुई है जो हमारे ऊपर राज्य करते थे। वे तो यहां के बन गये थे, हमारे रीति-रिवाज सब चीज़ ले ली थी। मुसलमानों को आज हम कहें कि यहां से जाओ, नहीं तो हम तबाह कर देंगे तो क्या जामा मस्जिद का कब्जा आप लेने वाले हैं ? और अगर हम कब्ज़ा लेते हैं तो उसके मानी क्या होते हैं ? आप समझें तो सही ! उस जुमा मस्जिद में क्या हम रहेंगे ? मैं तो यह कभी कबूल नहीं कर सकता। मुसलमानों को वहां जाने का हक होना ही चाहिये। वह उनकी चीज़ है। हमें भी उसका फख़र है। उसमें बड़ी कारीगरी भरी पड़ी है। हम क्या उसे ढा देंगे ? यह कभी नहीं हो सकता।

मुसलमानों से मेरा कहना है कि आप साफ़ दिल से कह दें कि आप हिन्दोस्तान के हैं। यूनियन के वफ़ादार हैं। अगर आप ईश्वर के वफ़ादार हैं और आपको इण्डियन यूनियन में रहना है तो आप हिन्दुओं के दुश्मन नहीं बन सकते। उनके साथ लड़ नहीं सकते आपको यह कहना है। पाकिस्तान में जो मुसलमान हिन्दुओं के दुश्मन बने पड़े हैं उन्हें सुनाना है कि आप पागल न बनें। अगर आप पागल बनेंगे तो हम आपका साथ नहीं दे सकते। हम तो यूनियन के वफ़ादार रहेंगे। इस तिरंगे झंडे को सलाम करेंगे। हुकूमत का जैसा हुक्म होगा, उसके मुताबिक हमें चलना है। वे सब मुसलमानों को कह दें कि जिनके पास मशीनगनें हैं गोला-बारूद है, वह सब हुकूमत को दे दें। हुकूमत का यह धर्म है कि किसी को इसके लिये सज़ा न करे। ऐसा ही मैं कलकत्ते में करवाकर आया हूँ। कलकत्ते में मेरे पास काफ़ी हथियार लोगों ने जमा कर दिये थे। ज्यादा तो हिन्दुओं ने ही दिये थे। यहाँ मुसलमानों के पास हथियार हैं तो क्या हिन्दुओं के पास नहीं हैं ? मैं हिन्दू को तो कहता हूँ कि हथियार रखना ही न चाहिये। रखना है तो इसके लिये लाइसेंस होना चाहिये, उसके लिये परवाना होना चाहिये। पंजाब में कहते हैं कि सब को हथियार रखने का हक़ दे दिया है। मैं नहीं जानता कि पंजाब में क्या हो रहा है। अगर सबको हक़ है तो सब हथियार रक्खेंगे। उससे पंजाब का कोई भला नहीं होने वाला है। सबके पास हथियार रहेंगे तो आपस-आपस में लोग लड़ेंगे और एक दूसरे को मारेंगे। सब हथियार रक्खें और सब लड़ने वाले हो जायें तो तिजारत कौन करेगा ? क्या आपस में मारने का पेशा रह जायेगा ? इसलिये मैं कहूँगा कि अगर पंजाब में या पाकिस्तान में ऐसा है तो उसमें तबदीली करनी चाहिये और कहना चाहिये कि हथियार कोई न रक्खेगा, हथियार सब हुकूमत के पास रहेंगे। शहरी को हथियार की क्या ज़रूरत है, इसकी तो हुकूमत को

ज़रूरत है। कुछ भी हो, आज तो किसी शहरी के पास हथियार नहीं होना चाहिये। मैं कहूँगा कि जितने भी हथियार मुसलमान रखते हों, सब हथियार हुकूमत को दे देना चाहिये। हिन्दुओं को भी सब हथियार दे देना चाहिये। पीछे हिन्दू-सिक्ख मुसलमानों से कहें कि आप क्यों डरते हैं। हम आपसे नहीं डरेंगे और आप हमसे न डरें। बाहिर कुछ भी हो दिल्ली में तो हम भाई-भाई होकर रहेंगे। ऐसा कलकत्ते में भी हुआ और हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई होकर रहने लगे। बिहार में भी हिन्दू ऐसा करते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि दिल्ली में भी वही होगा जो कलकत्ते में हुआ। आप लोग जल्दी दिल्ली में वैसी हालत लायें जिससे मैं जल्दी पंजाब जा सकूँ और वहाँ जाकर कह सकूँ कि दिल्ली में मुसलमान शान्ति से रह रहे हैं। उसका बदला मैं वहाँ मांगूँगा। मेरे बदला मांगने की बात कैसी है, वह मैंने आपको समझा दिया और वही सच्चा बदला है। वह बदला मैं ममदोत साहब और वहाँ की हुकूमत से माँगूँगा। ईस्ट-पंजाबमें भी मैं चला जाऊँगा। वहाँ सिक्खों को, हिन्दुओं को डाटूंगा, उन्हें कड़ी सुनाऊंगा, क्योंकि मैं सबका खादिम हूँ, दोस्त हूँ। मैं सब मज़हब का हूँ, तो मुझे सबको कहने का हक है और मैं कहूँगा कि आप पागल क्यों बनते हैं। सिक्ख इतनी बहादुर कौम है। एक सिक्ख सवा लाख इन्सान से ज्यादा कहलाता है। वह क्या किसी कमज़ोर को मारेगा? मार कर क्या पाने वाला था?

मुसलमानों को चाहिये था पाकिस्तान, उन्हें मिल गया। पीछे क्यों लड़ते हैं, किसके साथ लड़ते हैं? क्या पाकिस्तान मिल गया तो सारा हिन्दोस्तान ले लेंगे? वह कभी होने वाला नहीं। क्यों वे कमजोर हिन्दू सिखों को मारते हैं? यह सब मैं उनको कहना चाहता हूँ। मैं तो अकेला हूँ। आपके पास हुकूमत पड़ी है, दोनों हुकूमतें आमने-सामने बातें करें कि उनके यहाँ जो अल्पमत—माइनारिटी—पड़ी है, उसकी रक्षा आपको करनी है। यहाँ जो हैं उनकी रक्षा हमें करनी है। यहाँ वे नहीं तो किस मुँह से जवाहरलाल कह सकता है, किस मुँह से सरदार पटेल कहने वाले हैं कि हम बराबर अल्पमत की हिफाजत करते हैं और यहाँ कोई मुसलमान लड़का ऐसा नहीं है, जिसको कोई छू सकता है या उस पर लाल आंखें निकाल सकता है। अगर कोई ऐसा मुसलमान है, जो पागल बन जाता है, अपने घर के अन्दर मशीनगन रखता है तो हम उसको सजा करेंगे, मारेंगे। लेकिन जो मुसलमान यहाँ वफादार होकर रहता है, उसे कोई छू नहीं सकता। ऐसे हालात आप पैदा करें कि जिससे जवाहरलाल ऐसा कह सकें, सरदार वल्लभ भाई ऐसा कह सकें

कि दिल्ली थोड़े दिनों के लिये पागल बन गयी थी, लेकिन दिल्ली शुद्ध बन गयी है। आज हिन्दू कहते हैं कि मुसलमान अगर हमारे बीच रहे तो मशीनगन चलायेंगे। हमारे पास मशीनगन नहीं हम क्या करें? तो क्या हम मुसलमानों को मार डालें, या निकाल दें? यह शराफ़त नहीं। हम इस तरह डरपोक न बनें।

मुसलमान भाइयों को मैं कहना चाहता हूँ कि उन्हें एक खासा स्टेटमेंट निकालना चाहिये। दिलों को बिल्कुल साफ़ कर लेना चाहिये। सिक्खों ने भी कुछ निकाला है, हिन्दुओं ने भी। दिल और दिमाग़ साफ हो जावें तो हम मेलजोल कर सकते हैं। आखिर दिल्ली की इतनी बड़ी तिजारत, इतनी खूबसूरत इमारतें, दिल्ली की तहज़ीब यह सब हिन्दू-मुसलमान दोनों की है, महज़ एक की नहीं।

★

१३ सितम्बर, १६४७

एक ज़माना था, शायद १५ की साल में, जब मैं दिल्ली में आया था, हकीम साहब को मिला और डाक्टर अन्सारी को। मुझको कहा गया कि हमारे दिल्ली के बादशाह अंग्रेज नहीं हैं, लेकिन ये हकीम साहब हैं। डाक्टर अन्सारी तो बड़े बुजुर्ग थे, बहुत बड़े सर्जन थे, वैद्य थे। वे भी हकीम साहब को जानते थे, उनके लिये उनके दिल में बहुत कद्र थी। हकीम साहब भी मुसलमान थे, लेकिन वे तो बहुत बड़े विद्वान थे, हकीम थे। यूनानी हकीम थे लेकिन आयुर्वेद का उन्होंने कुछ अभ्यास किया था। उनके वहाँ हजारों मुसलमान आते थे, और हजारों ग़रीब हिन्दू भी आते थे। साहूकार, धनिक मुसलमान और हिन्दू भी आते थे। एक दिन का एक हज़ार रुपया उनको देते थे। जहाँ तक मैं हकीम साहब को पहचानता था, उन्हें रुपये की पड़ी न थी, लेकिन सब की खिदमत की ख़ातिर उनका पेशा था। और वह तो बादशाह जैसे थे। आख़िर में उनके बाप-दादा तो चीन में रहते थे, चीन के मुसलमान थे, लेकिन बड़े शरीफ़ थे। हिन्दू लोग जितने मेरे पास आये, उनसे पूछा आपके सरदार यहाँ कौन हैं, श्रद्धानन्द जी ? श्रद्धानन्द जी यहाँ बड़ा काम करते थे। लेकिन नहीं, दिल्ली के सरदार तो हकीम साहब थे। क्यों थे ? क्योंकि उन्होंने हिन्दू-मुसलमान सब की सेवा ही की, खिदमत की। तो वह १५ के साल की बात मैंने कही। लेकिन बाद में मेरा ताल्लुक उनसे बहुत बढ़ गया और उनको और पहचाना—डाक्टर अन्सारी को पहचाना। डाक्टर अन्सारी के घर मैं काफ़ी दिनों तक रहा और उनकी लड़की ज़ोहरा और उनके दामाद शौकत खाँ को पहिचानता हूँ। सब भले हैं, आज भी यहाँ पड़े हैं, लेकिन दिल में रंज क्यों है ? उनको आज डर लग गया है, क्या यहाँ कोई हिन्दू उनको भी मारेगा ? उनके घर में तो वे रहते नहीं हैं। होटल में जाकर रहते हैं। इत्तिफ़ाक से बच गये हैं, उनका

दरबान हिन्दू था। उसने जो लोग आये थे उनको भगा दिया। तो ऐसे आज हम क्यों हैं? ऐसे पागल हिन्दू क्यों बने, सिक्ख क्यों बनें जिसका उनको डर लगे। आप मुझको कह सकते हैं, काफ़ी हिन्दू कहते हैं, गुस्से में आ जाते हैं, लाल आँख करते हैं कि तू तो बंगाल में पड़ा रहा, बिहार में पड़ा रहा, पंजाब में आकर देख तो सही, पंजाब में हिन्दुओं की क्या हालत मुसलमानों ने की है, सिक्खों की क्या हालत की है, लड़कियों की क्या हालत की है। मैं यह सब नहीं समझता हूँ, ऐसा तो नहीं है। लेकिन मैं उन दोनों चीजों को साथ-साथ रखना चाहता हूँ। वहाँ तो अत्याचार होता ही है। पर मेरा एक भाई पागल बने और सब को मार डाले तो मैं भी उनके सामने पागल बनूँ और मैं गुस्सा करूँ? यह कैसे हो सकता है? मेरे पास सब एक हैं, मेरे पास ऐसा नहीं है कि यह गाँधी हिन्दू है, इसलिये हिन्दुओं को ही देखेगा, मुसलमानों को नहीं। मैं कहता हूँ कि मैं हिन्दू हूँ और सच्चा हिन्दू हूँ और सनातनी हिन्दू हूँ। इसलिये मुसलमान भी हूँ, पारसी भी हूँ, कृष्टी भी हूँ, यहूदी भी हूँ। मेरे सामने तो सब एक ही वृक्ष की डालियाँ हैं। तो मैं किस डाली को पसन्द करूँ और मैं किस को छोड़ दूं। किस की पत्तियाँ मैं ले लूं और किस की पत्तियाँ मैं छोड़ दूं। सब एक हैं। ऐसा मैं बना हूँ। उसका मैं क्या करूं। सब लोग अगर मेरे जैसा समझने लगें तो पूरी शान्ति हो जाय।

आज मैं पुराने किले में गया। वहाँ मैंने हजारों मुसलमानों को देखा। और दूसरी मुसलमानों से भरी गाड़ियाँ किले की तरफ चली आ रही थीं। सारे मुसलमान आश्रित थे। किले में उनको रहना पड़ा, तो किस के डर से? आपके डर से, मेरे डर से? मैं जानता हूँ कि मैं तो नहीं डराता हूँ, लेकिन मेरे भाई डराते हैं, जो अपने को हिन्दू मानते हैं, जो अपने को सिक्ख मानते हैं। उन्होंने डराया सो मैंने डराया और आपने डराया। तो मुझ से तो बरदाश्त नहीं होता वे डर के मारे भाग कर पाकिस्तान में जायँ। पाकिस्तान में स्वर्ग है और यहाँ नरक है, ऐसा नहीं। हम इस नरक में क्यों पड़ें? मैं जानता हूँ कि न पाकिस्तान नरक है और न हिन्दुस्तान नरक है। हम चाहें तो उन्हें स्वर्ग बना सकते हैं, और अपने कामों से नरक भी बना सकते हैं। पाकिस्तान में मुसलमानों की बड़ी तादाद है, वे उसे नरक बना सकते हैं। हिन्दुस्तान में जहां हिन्दू बड़ी तादाद में हैं, हिन्दुस्तान को नरक बना सकते हैं। और जब दोनों नरक जैसे बन गये, तो उसमें फिर आज़ाद इन्सान तो नहीं रह सकता। पीछे हमारे नसीब में गुलामी ही लिखी है। यह चीज़ मुझको खा जाती है। मेरा हृदय कांप उठता है कि इस हालत में किस हिन्दू को समझाऊंगा,

किस सिक्ख को समझाऊंगा, किस मुसलमान को समझाऊंगा। किले में काफ़ी मुसलमान गुस्से в आ गये, दूसरों ने उन्हें रोका। यह भी मैंने देखा उनके दिलों में मोहब्बत थी, वह समझाते थे, रोकते थे, कहते थे कि यह बूढ़ा आया है, वह तो हमारी ख़िदमत करने आया है। हमारे आँसू हैं, उसको पोंछने के लिए आया है। हम भूखे हैं, तो देखने के लिये आया है कि उनको रोटी का टुकड़ा कहीं से मिल सके तो पहुँचाये, उनको पानी नहीं मिलता है, तो उनको पानी कहाँ से पहुँचाये। मुझे पता नहीं है कि वहाँ पानी मिलता है या रोटी मिलती है कि नहीं। किसी ने कहा कि हमारे पास रोटी नहीं है, पानी भी नहीं है। मैं तो देखने गया था। कोई शौक से थोड़े ही गया था, कोई मज़ा तो मुझे लेना नहीं था। कुछ लोगों ने मुझे बड़ी मोहब्बत से सुनाया। मुझे अच्छा लगा। घर-बार छोड़ना किसी को पसन्द नहीं आयेगा। जैसे वे वैसे आज हिन्दू आश्रित पड़े हैं, अपना घर छोड़ा, जायदाद छोड़ी, कोई मर गया और कोई यहाँ ज़िन्दा आ पड़े हैं। पीछे यहां खाना कहां है, पीना कहां है, घर कहां पड़ा है, कहीं भी पड़े रहते हैं। यह अच्छी बात नहीं है। सब के लिये शर्म की बात है। तो मैं तो इनको भी समझाता था। आप लोगों की मार्फत दूसरे जिसको मेरी आवाज पहुँच सके, उनको भी पहुँचाना चाहता हूँ। आपकी दिल्ली बड़ी आलीशान नगरी है, जिसमें वह पुराना किला है, वह तो इन्द्रप्रस्थ कहा जाता है। कहते हैं कि महाभारत के काल में पांडव यहां पुराने किले में रहते थे। इसको इन्द्रप्रस्थ कहें, दिल्ली कहें, यहाँ हिन्दू-मुसलमान दोनों इकट्ठा होकर पले। मुगलों की यह राजधानी थी। आज तो हिन्दोस्तान की है, मुगल बादशाह का तो कोई है नहीं। मुग़ल बाहर से आये थे। लेकिन उनका सब कुछ यहाँ देहली में था वे देहली के बने। उसमें से अन्सारी साहब भी बने, हकीम साहब भी बने और कहीं हिन्दू भी बने। हिन्दू ने भी उनकी नौकरी की। ऐसी आपकी इस दिल्ली में, हिन्दू-मुसलमान सब आराम से पड़े रहते थे। बाज़ दफा लड़ लेते थे। दो दिन के लिए लड़े पीछे एक बन गये। जिसमें एक दफा किसी कातिल ने, खूनी आदमी ने हमारे श्रद्धानन्द जी का खून किया, लेकिन उसके पहले मुसलमान श्रद्धानन्दजी को दिल्ली की जामा मस्जिद में मोहब्बत से ले गये थे और वहाँ उन्होंने भाषण दिया। यह है आपकी दिल्ली।

लेकिन आज क्या हो रहा है? सरदार ऊँचा सिर रख कर चलने वाला आज मैं आपको कहता हूँ कि उसका सिर नीचा हो गया है। वह जवाहरलाल, वह बहादुर जवाहरलाल, हवा में उड़ने वाला, किसी की परवाह न करनेवाला, आज

वह लाचार बन कर बैठ गया है। क्यों लाचार बना ? हमने उसको लाचार बनाया। अगर ऐसा ही रहता कि पश्चिमी पंजाब के मुसलमान दीवाने बन गये, वह भी ख़तरनाक बात है, नहीं बनना चाहिये। मगर एक पागल बने तो उसकी तो दवा हो सकती है, लेकिन सब पागल और दीवाने बनें तो कौन दवा करेगा ? वह जवाहरलाल कोई ईश्वर तो है नहीं। सरदार ईश्वर थोड़े ही है। दूसरे जो उनके मन्त्री पड़े हैं, वे ईश्वर तो हैं नहीं। उनके पास ईश्वरी ताक़त तो कोई है नहीं। बाहर की ताकत, दुनिया की ताक़त, भी कहाँ उनके पास पड़ी है ?

मै तो बस यही बात सब को कहता हूँ। काफी हिन्दू आ गये, मुसलमान आ गये, उनसे काफी बहस की, लेकिन आख़िर में मेरी आवाज़ ईश्वर को जाती है। मैं कहता हूँ, मुझको यहाँ से उठा ले तू। नहीं तो दिल्ली में जो आज दीवाने बन गये हैं वे लड़ते हैं, उनको तू जैसे पहले थे वैसे बना दे। किसी हिन्दू के दिल में या सिक्ख के दिल में मुसलमानों के लिये गुस्सा न हो। मुझ को लोग सुनाते हैं कि मुसलमान, तो कहते हैं फ़िफ़्थ कालमिस्ट हैं, उसका मतलब है बेवफ़ा हैं आज जो हुकूमत है उसके प्रति वे बेवफ़ा हैं। साढे चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं। साढ़े चार करोड़ अगर बेवफ़ा बनते हैं तो उसमें खोएगा कौन ? उनको ही गँवाना है। वे इसलाम को गढ़े में डालेंगे। लेकिन हिन्दू और सिक्ख को वे खतरे में नहीं डाल सकते हैं। साढ़े चार करोड़ मुसलमान अगर ऐसी बदगुमानी करें कि हुकूमत की बेवफाई कर सकते हैं तो उनको गढे में पड़ना है, मगर साढे चार करोड मुसलमानों को आप न सतावें। मरना नहीं तो वे पाकिस्तान जायें ऐसा कहें, यह ठीक नहीं। क्यों जायें ? किसकी शरण में जायें ? मैं आपको कहता हूँ वे आपकी शरण में हैं, मेरी शरण में हैं। कम से कम मैं वह दृश्य देखना नहीं चाहता। मैं ईश्वर को यही कहूँगा कि उससे पहले तू मुझको यहाँ से उठा ले। काफ़ी दिन जिन्दा रखा है, कोई ७८, ७९ बरस कम नहीं हैं। मुझको पूरा सन्तोष है। जो मेरे से बन सकती है वह सेवा मैंने कर ली, लेकिन अगर ज़िन्दा रखना चाहता है तो मेरे पास से ऐसा काम ले जिससे मेरी आत्मा को सन्तोष पहुँचे। दोनों कहें तू दोनों का दोस्त है। इसलिये सब तेरी बात सुनते हैं और सुनेंगे। मैं काफी मुसलमानों के साथ बैठता हूँ, किसे कहूँ कि वह दग़ाबाज़ है और मुझको दग़ा दे रहा है ! मैं कहता हूँ कि अगर वह दग़ा देता है, तो दग़ा किसी का सगा नहीं हो सकता।

मुसलमानों के पास काफ़ी हथियार पड़े है, यह मैं क़ुबूल करता हूँ। थोड़े तो मैंने ले लिये थोड़े से पड़े हैं तो क्या करेंगे ? मुझको मारेंगे ? आपको मारेंगे ?

ऐसा करें तो हुकूमत कहाँ गयी है। मैं आपको कहता हूँ कि अगर हम आज अच्छे बन जायें, शरीफ़ बन जायें तो हुकूमत को हमें इन्साफ़ दिलाना ही है। हुकूमतों को आपस-आपस में लड़ने दें, हम आपस-आपस में नहीं लड़ें, हम आपस-आपस में दोस्त ही रहें। हम डर न करें कि हमको मार डालेंगे। मारनेवाला कितना ही बलवान हो, मार नहीं सकता जब तक ईश्वर हमारी रक्षा करता है। इसलिये मैं कहता हूँ, दोनों से कहता हूँ, डर को छोड़ो। कायदे आज़म की बहस मुझे बुरी लगी। कहते हैं यूनियन में मुसलमानों को सताया गया, इसलिये उन्हें पाकिस्तान लाया जा रहा है, उनके लिये खाना चाहिये, जमीन चाहिये। पाकिस्तान गरीब है, इसलिये जिसके पास पैसे हैं वे पैसे भेज दें। मुझे उसकी शिकायत नहीं। मगर साथ ही यह क्यों नहीं कहते कि पश्चिमी पंजाब में हिन्दुओं पर क्या हुआ? बिहार ने बुराई की तो उसका कफ़्फ़ारा किया। कलकत्ते में हिन्दुओं ने आकर मेरे सामने पश्चाताप किया। ऐसे ही मुसलमान आकर कहें, हमने बुराई की, गल्ती की तो वह शराफ़त होगी। मैंने देख लिया है, मैं कैसे आँखें बन्द कर सकता हूँ। हिन्दू गुनाह करते हैं उसको भी छिपा नहीं सकता हूँ। इसी तरह कोई मुसलमान गुनाह करे तो उसे भी मैं नहीं छिपाऊँगा। छिपाऊँगा तो मैं इसलाम का बेवफ़ा बनूँगा। मैं उसका बेवफ़ा नहीं बनना चाहता। गुरु ग्रंथ का भी बेवफ़ा नहीं बनूँगा। मैं सब का वफ़ादार ही रहना चाहता हूँ। न मैं खुदा का बेवफ़ा बन सकता हूँ न इन्सान का। सब की तरफ़ वफ़ादारी करना चाहता हूँ।

मुसलमान सब बेवफ़ा होते हैं, ऐसा नहीं है। मैं काफ़ी मुसलमानों के बारे में कहने को तैयार हूँ कि वे बावफ़ा हैं। अगर बेवफ़ा होंगे तो ईश्वर उन्हें पूछेगा और वे अपने आप इसलाम को खतरा में डालेंगे। काफ़ी मुसलमानों ने इरादा किया, इसलिये मैंने कल कहा कि मुसलमानों का यह धर्म है कि जितने ख़ास-ख़ास लोग हैं वह कहें कि हम ऐसे निकम्मे नहीं हैं। हम हिन्दुस्तान के वफ़ादार हैं और रहेंगे; हिन्दुस्तान के लिये दुनियां से लड़ेंगे। तब तो वे सच्चे मुसलमान हैं नहीं तो वे बुरे मुसलमान हो जाते हैं। मेरी ऐसी उम्मीद है कि ऐसे बुरे मुसलमान हमारे यहाँ हिन्दुस्तान में हैं नहीं और अगर हैं तो उन्हें अच्छा करने के लिए हमको अच्छा बनना है बुरा नहीं।

★

१४ सितम्बर, १६४७

जैसे कल गया था वैसे आज भी मैं वहां चला गया था, जहाँ हमारे मुसलमान आश्रित लोग रहते हैं। वहां कैम्प में जो गन्दगी थी वैसी मैंने देखी नहीं। मैं हिन्दुओं के कैम्प में भी गया और मुसलमानों के कैम्प में भी गया। हिन्दुओं के कैम्प दूसरी जगह हैं। मुस्लिम कैम्पों में इतनी बदबू निकलती है, इतनी गन्दगी है, क्यों उसको नहीं साफ करते ? अगर मैं उस कैम्प का कमांडर हूँ तो मैं तो उसे बरदाश्त नहीं करूँगा। मैं तो कैम्पों में रहा हूँ, मैंने कैम्प देखे हैं। कैम्प ऐसे गन्दे नहीं रह सकते। मुझको बड़ा रंज हुआ। इतने सिपाही बने हैं, इतनी मिलिटरी पड़ी है, तो वे इतनी गन्दगी क्यों बर्दाश्त करते हैं ? वे कहेंगे कि सफाई करना हमारा काम कहां है। हमको तो बन्दूक चलाने का हुक्म है। यहां शान्ति रखने की हमारी ड्यूटी है। वे आपसमें लड़ते हैं तो हम उनको बन्दूक से साफ कर देते हैं। इतना ही हमको हुक्म है, हुक्म के बाहर हम नहीं जा सकते। ठीक है, लेकिन वह हमारी मिलिटरी है हमारे वे सिपाही हैं। मेरी निगाह है कि उनके हाथ में एक कुदाली भी होनी चाहिये। एक फावड़ा भी। कहीं भी गन्दगी हो उसे साफ करें। पहिले पहल उनका काम सफाई होना चाहिये। कैम्प को अगर अच्छा रखना है तो हमारे मुस्लिम और हिन्दू भाइयों को खुद वहां सफ़ाई रखनी है। जैसे वे पड़े हैं ऐसे ही पड़े रहें, उन्हें हम कुछ न कहें तो हम उनके दुश्मन बनते हैं। अगर हम उनके दोस्त हैं, उनके सेवक हैं तो हमें उन्हें साफ़ कहना है, आप यहां आये हैं, लाचार न बनें। अगर पाकिस्तान से हिन्दू शरणार्थी आ जायँ तो क्या उनको कुएं में डाल दें। क्या यहाँ रक्खें नहीं और देखभाल न करें। हम उनको ऐसा कहें कि आप दुखी हैं इसलिये आप को झाड़ू नहीं लगानी है। यह चलने वाला नहीं है। आपको सफ़ाई करनी है। हम आपको खाना भी देंगे पानी भी देंगे मगर भंगी नहीं देंगे। मैं तो बहुत कठिन हृदय का आदमी हूँ।

हरिद्वार में जब कुम्भ का मेला था तो मैंने कुदाली चलाई। हमारे पास वहाँ कैम्प सैनिटेशन के सब काम थे। वहाँ के जो कैम्प-कमांडर थे वे चार-पाँच आदमियों की टोली करके निकल जाते थे और सब काम करते थे और जितनी गन्दगी होती थी उसको साफ़ करते थे। इसके लिए सबको तालीम दी गई थी। तो मैं तो यह कहूँगा कि यहाँ के जो कैम्प के कमांडर हैं, कोई भी हो, मुसलमान हों, हिन्दू हों, मुझे परवाह नहीं है, उनका पहिला काम है अपने कैम्प को बिल्कुल साफ़ रखना। उसमें कोई पैसा तो खर्च नहीं होता। अगर कैम्प के पास फावड़े नहीं हैं हुकुमत का काम है कि वह उस चीज़ को सफाई करने के लिए दे। अगर नहीं देतो उसके पास इतने काम पडे हैं उसमें से उसे फुर्सत नहीं मिलती तो कमांडर को फावड़ा कहीं से पैदा करना है और लोगों को देना है। जिस तरह से हुकुमत का काम कैम्प में खाना पहुँचाने का है, उसी तरह से सफाई का इन्तजाम करने का है। पीने का पानी है और कपड़े साफ करने का पानी है, टट्टी पेशाब का पानी है। चूँकि उसकी निकासी का इन्तजाम नहीं होता इसलिए कौलरा हो जाता है। कभी कैम्प-सैनिटेशन अधूरा रहना ही नहीं चाहिये। मुझे कहना पड़ेगा कि यह चीज़ मैंने अंग्रेजों के पास से सीखी। मुझे पता नहीं था कि कैम्प सैनिटेशन कैसे चलाया जा सकता है। किस तरह से हजारों लाखो आदमी रहते हैं उनको किस तरह से काम दें कि जिससे वह सैनिटेशन का काम करें। और जो कुछ उनको काम करने को दिया जाय वह करें। मिलिटरी वाले यह सब करते हैं। मिनटों में सारा शहर खडा हो जाता है। तम्बू, डेरे लग जाते हैं। कैम्प का पहला काम यह है कि पहिली पार्टी जो पहुँच जाती है, उसको पानी कहाँ है, यह देख लेना है। किस तरीके से पानी इस्तेमाल करें। दूसरी जो पार्टी है उसको ट्रेंचें खोदना है जिससे पेशाब व पाखाना बाहर न जा सके। जाहिर है, ऐसा करें तो पीछे वहाँ कौलरा नहीं हो सकता। डिसेन्ट्री नहीं हो सकती। वे आराम से रह सकते हैं। बाकी चीज़ों को मैं छोड देना चाहता हूँ। यहाँ तो अन्धाधुन्ध पड़े हैं। सब जैसे तैसे पड़े हैं। कैम्प को कोई साफ-सुथरा नहीं रखता।

मैं किसका गुनाह निकालूँ। मुस्लिम शरणार्थी कैम्प का जो कमांडर है वह मुस्लिम है। वह उनको कह सकता है, उनको समझा सकता है कि उनको यह करना है। उनको समझा कर काम लेना है। उनको कहा जाय तुम अगर ऐसे रहोगे तो तुम मर जाओगे। तुम्हारे बच्चे साफ-सुथरे नहीं रह सकते हैं, इससे बेहतर है कि कैम्प को साफ रखो। वहाँ हम सफाई सिखा दें तो बड़ा काम कर सकते हैं। हिन्दू के कैम्प देखें तो वहाँ भी मैला पड़ा रहता है और कचड़ा पड़ा रहता है मगर कुछ फर्क तो है।

नंगे पैर जाओ तो मैं तो वहाँ चल ही नहीं सकता। तालाब में कुछ पानी ही नहीं था सूखा पड़ा था। कहाँ से पानी निकले उसका इन्तज़ाम नहीं। आखिर में जानवर तो मुसलमान भी नहीं हैं, और हिन्दू भी नहीं। आज हम जानवर जैसे बन गये हैं। तो मुझको यह सब बड़ा बुरा लगा। पीछे मेरा ख्याल दूसरी चीज़ की तरफ चला गया। ऐसे तो हम हैं लेकिन ऐसे हम क्यों बनें? क्यों पाकिस्तान से डर के मारे हिन्दू भागे, सिक्ख भागे। ठीक है, हिन्दू ने यहाँ कुछ बुरा किया। मगर वहाँ तो नहीं किया। पश्चिमी पंजाब में हिन्दू क्या बुरा करेंगे, सिक्ख क्या करेंगे? उन्हें वहाँ से क्यों भागना पडे? किसी ने गुनाह किया है तो उसको सजा करो। यह तो हुकूमत का काम है। इसी तरह मैं कहूँगा कि किसी को यहाँ से भागना क्यों पडे? मुसलमान हैं तो क्या मुसलमान होने का गुनाह उसने किया है? मुसलमान है तो भी हमारा है, हमारी हुकूमत में पड़ा है। उस मुसलमान को भागना क्यों पड़े? वे शरणार्थी हैं तो खुली बात है कि यह दिल्ली के लिये शर्म की बात है। जो मुसलमान यहाँ पड़े हैं वे बाहर से नहीं आये हैं। लेकिन वे करीब-करीब सब यहाँ दिल्ली के मोहल्लों से आये हैं। थोड़े बाहर से आये होंगे। दिल्ली में से हमने उनको मारकर भगा दिया है। मैं आपको कहूँगा, कल भी सुनाया था, कि यह हमारे लिए तो बडे शर्म की बात है। पीछे मेरा विचार चला कि हम दोनों पागल क्यों बने। पाकिस्तान की हुकूमत की यह कमजोरी है कि जो वहाँ के अल्पमत हैं उनको वहाँ से भागना पड़ा। वे उनकी रक्षा न कर सके, पाकिस्तान की हुकूमत उनकी रक्षा नहीं कर सकी, इसलिये उनको भागकर यहाँ आना पडा। पाकिस्तान की हुकूमत का फर्ज है कि उनकी मिन्नत करे कि भाई आप कहाँ जाते हैं, क्यों जाते हैं? आपको कोई हलाक करता है तो हमको बताइये, हम उनको मारेंगे, जेल में भेजेंगे, सजा करेंगे। लेकिन आपको तो यहाँ रहना है। आज तो वहाँ ऐसा बन गया है कि शरीफ आदमी भी भाग रहे हैं। लाहौर खाली हो गया है। जिस लाहौर को हिन्दुओं ने बनाया। उस लाहौर में जहाँ हिन्दुओं के बडे बडे महलात मैंने देखे, इतनी तालीम की जगहें देखीं। इतने कालेज और कहाँ हैं? मैं तो सबको पहिचानने वाला ठहरा। आज वे कालेज वगैरा किस के कब्जे में है? यह सब बहुत बुरा लगता है और मुझको शर्म आती है कि पाकिस्तान की हुकूमत ऐसे कैसे बन सकती है। पीछे यहाँ देखता हूँ तो भी मुझको शर्म आती है कि हमारी हुकूमत होते हुये और ऐसा शेर जैसा जवाहर लाल होते हुए, ऐसे सरदार जी जैसे यहाँ होम मिनिस्टर होते हुए, दिल्ली क्यों बिगड़े और उनकी हुकूमत क्यों न चले? उनका हुक्म निकले कि एक बच्चे को यहाँ रक्षित

खड़ा रहना है तो बच्चे को सुरक्षित रहना चाहिये। तब तो हमारी हुकूमत चली लेकिन आज तो उनके पास मिलिटरी पड़ी हुई है, पुलिस पड़ी हुई है, उसके मार्फत वे शान्ति करवा रहे हैं। लेकिन आख़िर हुकूमत है किसकी? आपकी है। आपने बनाई है। वह ज़माना चला गया जब अंग्रेज फौज से राज्य करते थे आज सच्ची हुकूमत आप ही हैं। आपने उनको बड़ा बनाया, आप उनको छोटा बना सकते हैं।

मान लो, कि यहाँ सब मुसलमान बिगड़े हैं, सब के पास हथियार पड़े हैं, बारूद-गोला पड़ा है। उनके पास स्टैनगन पड़ी है, ब्रेन गन पड़ी है, मशीनगन पड़ी है। सब मारने को तैयार हैं। लेकिन फिर भी आपको हक नहीं है कि आप उन्हें मारें। हर एक आदमी हुकूमत बन जाता है तो किसी की हुकूमत नहीं रहती। अगर हर एक आदमी अपनी बनाई हुई हुकूमत का हुक्म मानता है तो पीछे सब काम हो सकता है। नहीं तो दुनिया हंसेगी, अरे देखो, तुम्हारी दिल्ली। दूसरी योरुप की कोई ताकत रूस की ताकत हो, फ्रांस हो, अंग्रेज़ हों, अमरीका हो सब मिलकर हमको चिढ़ा सकते हैं, आप आज़ादी रखना कहाँ जानते हो, आप तो गुलाम बनना ही जानते हो। वैसा होना नहीं चाहिये। इसलिए मैं मुसलमानों को कहूँगा जितने हथियार उनके पास यहाँ पड़े हैं वह सब हथियार उनको अपने आप दे देना चाहिये। किसी के डर से नहीं। लेकिन वे हिन्दुस्तान के हैं और हिन्दुस्तान में पड़े हैं और भाई बनकर अगर यहाँ रहना चाहते हैं तो हथियार दे दें। पीछे वे बतला दें कि हम तो वफादार हैं, हिन्दुस्तान के हैं और हम कभी बेवफा नहीं हो सकते हैं। हिन्दू क्या, मुसलमान क्या, सब आपके हैं। मुसलमानों को यह भी कहना है कि अगर पश्चिमी पंजाब में, सरहद में, बिलोचिस्तान में, सिन्ध में मुसलमान बिगड़ते हैं और वहाँ हिन्दू और सिक्ख चैन से और आराम से नहीं रह पाते हैं तो पीछे हमारे लिए यहाँ दुश्वारी हो जाती है। आखिर में सब इन्सान हैं, इन्सानियत को समझें। हम कहाँ तक समझाते रहें। इन्सान बिगड़ भी जाता है, अच्छा भी होता है। अच्छे तरीके से रह सकता है तो यहां अच्छे तरीके से रहे। कोई शख्स ऐसा बिगड़ जाता है कि वह हैवान बन जाता है। तब मैं दिल्ली के हिन्दुओं को कहूँगा आप खबरदार रहें, बहादुर बनें, बुजदिल न बनें। मुसलमानों के हथियारों से डरना बुज़दिली का काम है। हमें क्या परवाह है कि मुसलमान कहीं हथियार लेकर बैठे हैं। उनसे हथियार लेना हुकूमत का काम है। मिलिटरी का काम है उनके पास से हथियार छीन ले। अगर वे शरीफ बनते हैं, अगर वे हिन्दुस्तान के सच्चे हैं और हिन्दुओं के पास सब भाई २ की तरह मिल कर रहना चाहते हैं तो हथियार दे दें। और मुसलमान कहें की हमने गलती की।

हम ऐसा समझते थे कि हम दिल्ली सर कर लेंगे और सारे हिन्दुस्तान को पाकिस्तान बना लेंगे। लेकिन अब हम समझ गये हैं कि हिन्दुस्तान को पाकिस्तान बनाना है तो वह ऐसे नहीं हो सकता। हमारे पास पाकिस्तान तो है उससे हमें इतमीनान होना चाहिये। हम वहां हिन्दुओं को बचा सकते हैं खुश रह सकते हैं। तब तो यह होगा कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों भले होने में मुकाबला करने लगेंगे और भलमंसी मे कौन ज्यादा खुदापरस्त है इसमें मुकाबला करेंगे। मक्के की तरफ देखें, या पूरब की तरफ देखें सचाई तो हम लोगों के दिल में पड़ी है, सफाई तो दिल से होनी चाहिये। हम एक दूसरे का भलाई में मुकाबला करें तो हम सब ऊँचे होकर काम कर सकते हैं।

मैं यहाँ आया हूँ, तो मैंने आपको कह दिया है कि मैं तो यहाँ मरना चाहूँगा। अगर हम दीवाने बनते रहें और गुस्से में आ जायें और मुसलमानों को मारें तो वह काम तो मेरा नहीं है। उसका गवाह मैं नहीं बनना चाहता हूँ। मुसलमान माने कि हिन्दू सब गुनाहगार हैं, सिख सब गुनाहगार हैं और हिन्दू और सिक्ख कहें कि मुसलमान गुनाहगार हैं तो दोनों गलती करते हैं। मैं तो सबको एक जानता हूँ। मेरे नजदीक हिन्दू हो, मुसलमान हो सब एक दर्जा रखते हैं। इसमें जो सच्चे हैं वे ईश्वर को मान्य हैं। जो बुरे हैं उनकी बुराई की सजा आप क्या देने वाले हैं। वे अपने आप सजा पानेवाले हैं। इसमें मुझे कोई शक नहीं है। सारी दुनियां के धर्मों का यह मैंने निचोड़ निकाला है। इसलिए मैं कहूँगा कि मुसलमान कैसा भी बुरा करें लेकिन आपको तो भलाई ही करनी है। बुराई का बदला देना है सचमुच तो वह भलाई से हो सकता है। ऐसा मैं कम से कम आपको करते देखना चाहता हूँ। इतना हम करें तो हिन्दुस्तान की अपनी हुकूमत को अच्छा रख सकते हैं। अगर नहीं तो हम सब गवाँ देते हैं।

★

१८ सितम्बर, १९४७

आज हम सब दीवाने बन गये हैं, मूरख बन गये हैं, ऐसा नहीं है कि सिक्ख ही दीवाने बने, हिन्दू ही या मुसलमान ही दीवाने बन गये हैं। मुझ से कहा जाता है कि सारा आरम्भ तो मुसलमानों ने किया। वह ठीक है, मैं तो मानता हूँ कि उन्होंने आरम्भ किया। इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन वह याद करके मैं करूंगा क्या? आज क्या करना है, मुझको तो वह देखना है। हिन्दुस्तान रूपी गजराज को हो सके तो छुड़ाना चाहता हूँ। मुझको क्या करना चाहिए। मुझको तो ईश्वर का सहारा लेना चाहिये। मेरा पराक्रम कुछ कर सके तो मुझको खुशी है। पर मेरा शरीर तो थोड़ी हड्डी है, थोड़ी चर्बी। ऐसा आदमी क्या कर सकता है? किसको समझा सकता है? लेकिन ईश्वर सब कुछ कर सकता है। तो मैं रात-दिन ईश्वर को पकड़ता हूँ। हे भगवान, तू अब आ, गजराज डूब रहा है। हिन्दुस्तान डूब रहा है, उसे बचा।

हिन्दुस्तान में सिवा हिन्दू के कोई रहे ही नहीं, मुसलमान रहें तो गुलाम होकर रहें तो ऐसी बात तो नहीं है। आप देखें तो जवाहरलाल क्या कहता है। हम तो तंगी में पड़े हैं। दूसरे जो काम करने हैं उन्हें नहीं कर सकते। इसी एक काम में पड़े हैं। अगर मान लें कि सब मुसलमान गन्दे हैं, पाकिस्तान में सब बिगड़ गये हैं तो उससे हमको क्या? पाकिस्तान में सब गन्दे हैं तो क्या हुआ? मैं तो आपको कहूँगा कि हम तो हिन्दुस्तान को समुन्दर ही रखें जिससे सारी गन्दगी बह जाय। हमारा यह काम नहीं हो सकता कि कोई गन्दा करे तो हम भी गन्दा करें। तो आज मैं दरियागंज चला गया। मेरे पास मुसलमान भाई भी आते हैं। उनसे बातें करता हूँ, मोहब्बत करता हूँ और उनको कहता हूँ कि आप क्यों डरते हैं। आप तगड़े बन जायँ। आप क्यों घर-बार छोड़ते हैं। आप जाकर बैठिये अपने घर

में। यहाँ वे तो शरारत नहीं कर सकते इसलिए मैं चाहता हूँ कि सब हिन्दू भले हो जायँ। सब सिक्ख भले बन जायँ। जो मुसलमान पड़े हैं और जो पाकिस्तान नहीं जाना चाहते हैं उनसे सिक्ख और हिन्दू कहें कि आप अपने घर में जाकर बैठो। यहाँ तो दुनियाँ में सब से बड़ी मस्जिद, जुमा मस्जिद पड़ी है। हम बहुत से मुसलमानों को मार डालें और जो बाकी बचें वे भय के मारे पाकिस्तान चले जायँ, तो फिर मस्जिद का क्या होगा? आप मस्जिद को क्या पाकिस्तान में भेजोगे, या मस्जिद को ढाह दोगे या मस्जिद का शिवालय बनाओगे। मानलो कि कोई हिन्दू ऐसा गुमान भी करे कि शिवालय बनायेंगे, सिक्ख ऐसा समझें कि हम तो वहाँ गुरुद्वारा बनायेंगे। मैं तो कहूँगा कि वह सिक्ख धर्म और हिन्दू धर्म को दफनाने की कोशिश करनी है। इस तरह तो धर्म बन नहीं सकता है।

पाकिस्तान में जाने वाले जो जाना चाहते हैं वे यहाँ से चले जायँ। मगर जो हिन्दुओं के डर के मारे चले गये, पुराने किले में हैं, हुमायूं के मकबरे में हैं वे क्यों वहां रहें? मैंने तो उनको कहा है कि जो अपने घरों में हैं वे यहीं पड़े रहें और पीछे हिन्दू मारें पीटें, काट डालें तो भी न हटें। मैं आपके पीछे कट जाऊँगा। मेरी जान है, वह जान मैं फिदा कर दूंगा। या तो करूंगा या मरूंगा। उनको कुछ हौसला आया और उन्होंने कहा कि हम यहीं मरेंगे, घर है वहाँ से हटेंगे नहीं। मेरा ख्याल है कोई मुसलमान वहाँ से हटेगा नहीं। अपने घरों में पड़े हैं, सदियों से यहाँ हैं। उनको आज हम निकाल दें? लेकिन वह नहीं हो सकता। जो यहाँ से चले गये हैं उनका क्या करें? मैंने कहा कि उनको हम अभी नहीं लायेंगे। पुलिस के मार्फत, मिलिटरी के मार्फत थोड़े ही लाना है? जब हिन्दू और सिक्ख उन्हें कहें कि आप तो हमारे दोस्त हैं आप आइये अपने घर में, आपके लिए कोई मिलिटरी नहीं चाहिये, कोई पुलिस नहीं चाहिये, हम आपकी मिलिटरी हैं, पुलिस हैं। हम सब भाई-भाई होकर रहेंगे तब उन्हें लावेंगे। हमने दिल्ली में ऐसा कर बतलाया, तो मैं आपको कहता हूँ कि पाकिस्तान में हमारा रास्ता बिल्कुल साफ़ हो जायेगा। और एक नया जीवन पैदा हो जायगा। पाकिस्तान में जाकर मैं उनको नहीं छोड़ूंगा। वहाँ के हिन्दू और सिक्खों के लिए जाकर मरूंगा। मुझे तो अच्छा लगे कि मैं वहाँ मरूँ। मुझे तो यहाँ भी मरना अच्छा लगे, अगर यहाँ जो मैं कहता हूँ नहीं हो सकता है तो मुझे मरना है। मुझको भी गुस्सा आता है लेकिन इन्सान तो ऐसा होना चाहिए कि गुस्से को पी जाय। मैंने सुना कि काफ़ी औरतें जो अपनी शर्म को गँवाना नहीं चाहती थीं मर गईं। काफ़ी

मर्दों ने खुद अपनी औरतों को मार डाला। मुझे तो यह बड़ा अच्छा लगता है। क्योंकि मैं समझता हूँ कि वे हिन्दुस्तान को बुजदिल नहीं बनाते हैं। आखिर मरना जीना यह तो थोड़े दिनों का खेल है। गया तो गया लेकिन बहादुरी से गया। अपनी शर्म नहीं बेच डाली। यह नहीं था कि उनको जान प्यारी न थी लेकिन उनको मुसलमान जबर्दस्ती इस्लाम में लायें और उनकी मिट्टी ख्वार करें उससे बेहतर था बहादुरी से मर जाना। औरतें मर गईं, दो चार नहीं। काफी औरतें मरीं। यह सब सुनता हूँ। मेरी तो आंख खुशी से नाचना शुरू कर देती है कि ऐसी बहादुर औरतें हिन्दुस्तान में पड़ी हैं। लेकिन जो लोग भागे हैं वे लोग कहाँ जायँ ?. उनको वापस जाना है और शान के साथ। हम अपने यहां तो न्याय ही करें। अपना दामन शुद्ध रक्खें और अपने हाथ शुद्ध रक्खें तब हम सारी दुनिया के सामने न्याय माँग सकते हैं। मैंने कह दिया है कि जो मुसलमान हथियार रखते हैं उन मुसलमानों को हथियार छोड़ देना चाहिये। परसों जैसा मैंने कहा है सब लोग हथियारों को दे दें। मैं समझता हूँ कि उसमें कुछ देर लगेगी। लेकिन बात चल गई है, हथियार तो छोड़ना ही है। हथियार से बच नहीं सकते।

दूसरी मेरे पास बड़ी शिकायत आती है जो हमारे सिपाही लोग, मिलिटरी वाले हैं पर हिन्दू हैं, सिक्ख भी हैं, उसमें क्रिस्टी भी पड़े हैं, गोरखे पड़े हैं, वे सब रक्षक हैं पर भक्षक बन गये हैं। यह कहाँ तक सच है और कहां तक झूठ है, मैं नहीं जानता हूँ। लेकिन मैं अपनी आवाज़ उन पुलिस वालों तक पहुँचाना चाहता हूँ कि आप शरीफ बनें। कहीं तो ऐसा सुना है कि वे खुद लूट लेते हैं। मुझको आज सुनाया गया कि कनाट प्लेस में कुछ हो गया। और वहाँ जो सिपाही और पुलिस के लोग थे उन्होंने लूटना शुरू कर दिया। मुमकिन हो कि वह सब गलत हो। लेकिन उसमें कुछ भी सचाई हो तो मैं सिपाही और मिलिटरी से कहूँगा कि अंग्रेज का जमाना चला गया। तब जो कुछ करना चाहते थे वे कर सकते थे लेकिन आज तो वे हिन्दुस्तान के सिपाही बन गये हैं। उन्हें मुसलमान का दुश्मन नहीं बनना है, उनको तो हुक्म मिले कि उसकी रक्षा करो तो वह करनी ही चाहिये।

*

१६ सितम्बर, १९४७

मुझे एक पर्चा मिला है। यह पहले सरदार के पास पहुँचा, पीछे मेरे पास। उसमें कहते हैं, जब तक हम मुसलमानों के बीच पड़े हैं, आराम से रहने वाले नहीं। पाकिस्तानसे हिन्दुओं को भागना पड़ा। कूचा ताराचन्द में उनके चारों तरफ मुसलमान हैं उन्हें डर रहता है कि मुसलमान कुछ गोलाबारी करें तो? वे कहते हैं अच्छा होगा कि सब मुसलमान यहां से चले जावें। काफ़ी तो चले गये हैं, पर काफ़ी अभी यहां पड़े हैं। मैंने आपको सुनाया कि कल मैं गया था तो उससे उल्टी बात मैं मुसलमानों को कह कर आया। सो जो लोग यहाँ पड़े हैं उनकी जान का सवाल नहीं उठता। जो चले गये हैं, उनको भी मैं तो यही कह सकता हूँ कि आप आ जायँ। जबरदस्ती से लाने की बात नहीं। जब हम पंचायत का राज्य चलाते हैं तो जबरदस्ती से थोड़े ही चला सकते हैं। लोगों को समझायें, लोगों को तालीम दें, ऐसे हम क्यों डरें? जिन मुसलमानों के साथ इतने बरसों से रहे हैं वे ही मुसलमान आज ऐसे बिगड़ गए हैं कि उन्हें रखा नहीं जा सकता? बिगड़ भी सकते हैं, मैं यह नहीं कह सकता कि वे नहीं बिगड़ सकते। लेकिन जो अच्छे थे वे बिगड़ें तो पीछे वे अच्छे भी हो सकते हैं। हम अगर अच्छे होते हैं और अच्छे होना ही काफी नहीं। बहादुर भी होना चाहिये, और इसके साथ ज्ञान भी होना चाहिये तो हमारे सम्पर्क में जो बुरे आदमी आ जाते हैं वे भी भले हो जाते हैं। यह मेरा न्याय नहीं है, यह दुनिया का न्याय है। मैं अपनी बात आपसे नहीं कहता हूँ। तो मैंने जो कल बताया था आज भी वही कहूँगा कि मैं बचपन से ऐसा ही सीखा हूँ। अब मैं नया सबक नहीं ले सकूंगा। और मुझे अब जीना कितना है? मैंने कहा, आप मुझे यह सुनाते तो हैं, लेकिन उसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता हूँ। बर्दाश्त नहीं करूंगा तो किसी को मारूंगा, ऐसा नहीं। मैं मर जाऊँगा, ऐसा हो सकता है। इत्तफाक से मेरे हाथ में

एक दूसरा पर्चा आ गया। वह भी रास्ते में किसी ने दिया। जो पर्चा रास्ते में मिले वह मैं मोटर में पढ़ लेने की कोशिश करता हूँ। उस पर्चे में लिखते हैं, पश्चिमी पंजाब में इतना अत्याचार हो गया, अभी भी तुम क्यों नहीं समझते हो। उसके साथ एक और पर्चा है, जिसमें न नाम है न दस्तखत। उसमें लीग वालों से कुछ कहा है। गंदी बातें भरी हैं। वैसे लीग वाले करें तो पीछे पाकिस्तान का क्या होगा और हिन्दुस्तान का क्या होगा, उसका पता ही नहीं चल सकता। तो क्या हम भी गंदे बनें। यह मेरी नजर में न्याय नहीं।

वहां इर्द गिर्द में मुसलमान रहते हैं। कुछ मुस्लिम कार्यकर्ताओं ने वहीं रहना पसन्द किया। मुसलमानों के वे सेवक हैं। कोई मार डाले तो भले मार डाले वे बहादुर हैं सो रहते हैं। मेरे पास चले आए। काफी मुसलमान पड़े हैं। उनका कहना है कि बहुत लोग घर छोड चुके हैं, लेकिन मैंने देखा, काफी मुसलमान तो भी वहां थे, हिन्दू थोडे ही थे। जितने हिन्दू भाई वहां भागे हैं उनको मैंने सुनाया कि मैं तो बचपन से ऐसा ही सीखा हूँ। पॉलिटिक्स में दाखिल हुआ उससे पहले से मानता आया हूँ कि मुसलमान-हिन्दू सब को मिल-जुल कर रहना है। ऐसे ही हिन्दुस्तान बना है, ऐसे हिन्दुस्तान रहना चाहिये। तो जो आदमी बारह बरस की उमर से वही काम करता आया है, तो आज उसकी जबान से दूसरी चीज़ नहीं निकल सकती। मुझको तो यह पसन्द होगा, कि कोई अपनी जगह से हटे नहीं, वहीं मर जावे। यही मैं मुसलमानों से कहता हूँ और यही हिन्दुओं को कहता हूँ।

हिन्दू कहते हैं मुसलमानों के पास इतने हथियार पड़े हैं। वे निकलें तो हम समझें, नहीं तो हम कैसे मानें कि वे पीछे हमला न करेंगे। मैं कहूँगा कि उसमें हम न पड़ें वह हुकूमत का काम है। किसी के पास परवाना नहीं है, लाइसेन्स नहीं है तो उसके पास हथियार नहीं रख सकते है, भले ही वे लोग अपनी रक्षा के लिए हथियार रखते हों। रखना है तो लाइसेन्स ले लो। लेकिन हथियार से रक्षा क्या करनी थी, पाँच मुसलमान हैं, पाँच सौ हिन्दू और सिक्ख उनका मुकाबला क्या? वे पड़े रहें। भले ही हिन्दू-सिक्ख उन्हें काट डालें? जो पाँच ऐसे कट जायेंगे, बिना हथियार ईश्वर का नाम लेते चले जायँगे वे बड़े बहादुर हैं। वे कहते हैं, आप हमारे भाई हैं; मारना है तो मार डालें। यही मेरी सलाह सब के लिये है। आज मेरे पास काफी हिन्दू पाकिस्तान के आ गए और सबने अपना दुःख मुझको सुनाया। कई हँस कर सुनाते थे, कई बहनों ने रो दिया। मैंने उन्हे सुनाया, आपकी मार्फत सबको सुना देना चाहता हूँ कि हम बुजदिल न बनें। पाकिस्तान मे मुसलमानों ने अत्या-

चार किया। इसलिये हम यहाँ के मुसलमानों से न डरें, न उन्हें डरावें। ऐसे भी मुसलमान पड़े हैं जो पाकिस्तान में रह ही नहीं सकते।

तो जो पर्चा मुझे मिला है, उसमें लिखा है कि अब तो पाकिस्तान में कोई गैर मुसलमान रहने वाला नहीं है, तो पीछे हिन्दुस्तान में मुसलमान क्यों रहें ? तो मैं कहता हूँ कि एक आदमी आज गन्दगी करता है तो गन्दी चीज की हम नकल न करें। पाकिस्तान में एक भी गैरमुसलमान नहीं रह सकता। वह पाकिस्तान के माने हो नहीं रुकते हैं, और इसलाम के भी नहीं हैं। इसलाम की सल्तनत फैली हुई है। कहीं ऐसा कानून नहीं बना है कि वहाँ कोई गैरमुसलमान न रहे ? गैरमुसलमान थे और आराम से रहते थे, सुख से रहते थे। उनके पास पैसा भी रहता था। तो अब क्या नया इसलाम हिन्दुस्तान में दाखिल होने वाला है ? इसलाम १३०० बरस से चल रहा है, उसके पीछे इतनी तपश्चर्या हुई, इतनी कुर्बानियां हुईं। पीछे कोई नया इसलाम निकले तो वह सच्चा इसलाम नहीं, जिसे सब मुसलमान अच्छा कह सकते हों, सोचो। इसका मतलब यह है कि सच्चा हिन्दुस्तान वह नहीं है जिसमें हिन्दू के सिवा कोई रह न सकता हो, सच्ची क्रिश्चियैनिटी तो वह नहीं है जिसमें सिवा क्रिश्चियन के कोई रह ही नहीं सकता हो। वह धर्म नहीं है, अधर्म है। इस तरह से दुनियाँ नहीं चली है, न चलती है और न चलने वाली है; तो हम नया इतिहास लिखने के प्रपंच में क्यों पड़े ? ऐसा करके हम हिन्दुस्तान को तबाह न करें और पाकिस्तान को तबाह होने न दें। यहां आज साढ़े चार करोड़ मुसलमान हैं, वे सब वहां चले जायें ? और पीछे जुमा मस्जिद है उसको भी ले जायें, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी है उसको भी ले जायें, और तमाम मुस्लिम मकबरे में पड़े हैं, वे सब पाकिस्तान में चले जायें, पीछे जो गुरुद्वारे हैं वहां वेस्ट पंजाब में हैं उन्हें ईस्ट पंजाब में ले जायें ? वहां जितने हिन्दू रहते थे उनके मन्दिर वहां पड़े हैं, वे पाकिस्तान में रह नहीं सकते तो मन्दिरों को यहां लाना चाहिये ? इसका मतलब यह होगा कि सबको तबाह होना है, अपना धर्म है उसको तबाह करना है। मैं तो इसका गवाह बनना ही नहीं चाहता हूँ। उससे पहले ईश्वर मुझको उठा ले। और मैं तो कहूँगा कि जो पीछे सब नौजवान पड़े हैं वे करते-करते मरें। उनके रहते हुए हिन्दुस्तान बेहाल न हो। यह मैं देखना नहीं चाहता हूँ। देखना चाहता हूँ तो यह कि खराबी को साफ़ करने में हम सब मर जायें।

★

२० सितम्बर, १९४७

आप ईश्वर का भजन करें और उसी का भरोसा करें। यह सब की समझ में नहीं आता। वे कहते हैं कि ईश्वर कहाँ पड़ा है? ईश्वर रहे तो इतने झंझट में हम क्यों पड़े? अगर मुसलमान ज़हमत में पड़ जाते हैं तो वे कहें ईश्वर कहाँ है, अल्लाह कहाँ है, खुदा कहाँ है, कुरान शरीफ कहाँ है। बहुत लोग कहते हैं। लेकिन वे सब गलती करते हैं। खुदा है, अल्लाह है, ईश्वर है, राम है, उसे याद करने के लिये ऐसे मौके हैं। वह हमको मदद देता ही है। वह हमें थोड़े पूछने वाला है कि हम उसको पहिचानते हैं या नहीं। वह हमारे हाथों में नहीं आता उसे आँखों से नहीं देख सकते हैं, कानों से नहीं सुन सकते हैं, इसलिए वे कहते हैं कि इन्द्रियों से बाहर पड़ा है। ऐसी एक वह हस्ती हैं दूसरे सब नास्ति है। हम सब नास्ति हैं। हम कहें जब हम जिन्दा रहते हैं तो नास्ति कैसे हो सकते हैं? आज तक तो मैं जिन्दा रहा लेकिन कल के लिए मुझे कोई नहीं बता सकता कि रहूँगा या नहीं। ऐसे ही, कल कल करके ७८ वर्ष निकाल दिये। और भी शायद दो चार दिन निकाल दूँ या वर्ष निकाल दूँ। लेकिन हम क्या जानें। मैं कैसे कह सकता हूँ कि कोई आदमी अभी ज़िन्दा है तो वह एक मिनट बाद भी ज़िन्दा रहेगा या नहीं। कोई नहीं कह सकता। इसलिये मैं कहता हूँ कि हम तो नास्ति हैं जिसका कोई ठिकाना नहीं है। हमेशा के लिए नहीं रह सकते। "अस्ति" वह तो एक ही हो सकता है। हस्ती शब्द अस्ति से निकला है। अस्ति के माने हैं आदि है, अनादि है, और आयन्दा रहेगा। ऐसा हमेशा रहने वाला अस्ति है, जिसने हमको बनाया है और जो हमको बिगाड़ सकता है, यहाँ से उठा सकता है। मेरे नजदीक तो वह बिगाड़ता नहीं। हमको बनाता ही है। इसलिए अगर आज हम मानें कि वह नहीं मिल सकता और बिगड़ें तो वह मूर्खता होगी। लेकिन वह तो है और सब कुछ कर सकता है। वह रहीम है और उसके लिए सब एक हैं। वह किसी का बिगाड़ेगा नहीं, न किसी को मारेगा, न किसी को गाली देगा। वही उसका क़ानून है।

मुसलमान भी मेरे पास आ जाते हैं। वे यहाँ की बात सुनाते हैं कि हम दिल्ली में अभी तक रहे हैं लेकिन अब तो हम रह नहीं पा रहे और भाग रहे हैं। तो मैं उनको कहता हूँ कि जब तक मैं जिन्दा पड़ा हूँ तब तक आपको यहीं रहना चाहिये, खिलाफत के जमाने में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सब साथ-साथ पड़े थे। मैं तो गुरुद्वारे में गया हूँ और मुसलमान भी मेरे साथ आये हैं। ननकाना साहब का जो बड़ा किस्सा बन गया। उस वक्त मौलाना साहब थे, अली भाई थे और मैं था। सब ऐसा मानते थे कि सिक्ख हो, मुसलमान हो, हिन्दू हो वे तीनों एक हैं। जलियाँवाला बाग में क्या हुआ? सब पुकार-पुकार कर और चीख-चीख कर कहते थे कि यहाँ तो सबका खून मिल गया क्योंकि उसमें सब थे। हिन्दू थे, मुसलमान थे और सिक्ख थे, सबका खून मिला। उस वक्त तो बड़े जोर से कहते थे कि अब तो हमारा खून एक हो गया। उसको कौन जुदा कर सकता है। तो आज फिर वह जुदा बन गया। मुसलमान कहता है कि सिक्ख है, वह तो हमारे साथ मिल नहीं सकता है। सिक्ख कहते हैं कि मुसलमानों के साथ क्या मिलना था। क्या गुनाह किया है एक दूसरे का जो एक दूसरे के दुश्मन बन गये। तो मैं तो हैरान हो जाता हूँ। मैं पड़ा हूँ, जिन्दा रहता हूँ, तो मैं तो तीनों का खून आज भी एक है, वही मान कर। हो सकता है तो उसे सिद्ध करने के लिये। ऐसा चीखते-चीखते ईश्वर के पास रोते रोते। इन्सान के पास तो मैं रोता नहीं हूँ लेकिन ईश्वर के पास तो रो सकता हूँ, उसकी मिन्नत कर सकता हूँ क्योंकि उसका तो गुलाम मैं हूँ। सब को उसका गुलाम बनना चाहिये। पीछे किसी इन्सान को किसी के गुलाम रहने की आवश्यकता नहीं रहती। कहता हूँ कि अगर मैं ऐसा कर सकूं तो जिन्दा रहना चाहता हूँ। नहीं तो ईश्वर मुझको यहाँ से उठा ले।

मेरा सिर शर्म से झुक जाता है और मैं शर्मिन्दा बन जाता हूँ कि वही हिन्दू, वही सिक्ख, वही मुसलमान जो कल तक एक दूसरे को भाई-भाई कहते थे आज एक दूसरे के दुश्मन हो गए हैं। कोई तो समझे कि वह हमारे दुश्मन नहीं हो सकते। चार-पांच भाई आये। उन्होंने मुझे कहा कि यहां जो सारे साढ़े चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं वे ऐन मौके पर बाग़ी हो जायेंगे! वे तो आखिर मुसलमान हैं। पाकिस्तान में भी मुसलमान हैं। मानो कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में लड़ाई हो गई या कुछ और ऐसा हो गया तो क्या वे पाकिस्तान को खुफिया तौर से मदद नहीं देंगे? तो मैंने उनसे कहा कि माना कि कोई दें मगर सब के सब तो ऐसा कर नहीं सकते। मैं आपको कहना चाहता हूँ कि साढ़े चार करोड़ मुसलमान

ऐसे बन नहीं सकते हैं। मैंने उन भाइयों को कहा कि अगर आप शरीफ रहें, हम शरीफ रहें, जितने यहाँ अक्सरियत में हिन्दू पड़े हैं, सिक्ख पड़े हैं वे सब शरीफ़ बनें, वे अगर किसी मुसलमान की दुश्मनी नहीं करते हैं तो मैं ज़ोरों से कहूँगा कि साढ़े चार करोड़ मुसलमान में से, एक भी बेवफ़ा नहीं बन सकता है। हमको बहादुर बनना चाहिये। अक्सरियत में होते हुए हम बुज़दिल न बनें। साढ़े चार करोड़ मुसलमान हिन्दुस्तान में हैं मगर सब तो ४० करोड़ हैं। वे ऐसे बुज़दिल बनें कि साढ़े चार करोड़ मुसलमानों से डरें? मैं कहता हूँ कि साढ़े चार करोड़ अगर हिन्दुस्तान के बेवफा बनते हैं तो वे इस्लाम से बेवफाई का काम करेंगे और इस्लाम को ख़त्म कर देंगे। लेकिन अगर हम भी ऐसे ही बनें, बुज़दिल बनें, दग़ाबाज़ बनें और उनका भरोसा बिल्कुल न करें और यहाँ एक भी मुसलमान को न रहने दें तो मैं आपको कहता हूँ कि हिन्दुस्तान में हिन्दू अकेला तो कुछ खा नहीं सकेगा। उनका रोटी खाना पीछे जहर सा हो जायगा।

हिन्दुस्तान के बाहर कोई भी मुसलमान या दूसरी सल्तनत हो, या तो पाकिस्तान में जो मुसलमान हैं वे हिन्दुस्तान पर हमला करते हैं तो मैं आपको कहता हूँ कि साढ़े चार करोड़ मुसलमान जो यहाँ पड़े हैं, उनको हिन्दुस्तान की वफ़ादारी करनी है। अगर नहीं करते हैं तो उनको शूट करो, यह तो कानून में पड़ा है। मेरा कानून तो दूसरा है तो मैंने बतला दिया। लेकिन उसको कौन मानेगा? लेकिन जो दुनिया का कानून बना है, उसमें तो जो ट्रेटर होता है, फ़िफ़्थ कॉलमिस्ट होता है—जिस मुल्क में रहता है, अगर उस मुल्क को डुबोने का काम करता है तो वह ट्रेटर है, वह बेवफ़ा है। उसके लिए एक ही सज़ा है कि उसको मार डालो। मैं कहता हूँ कि आखिर इतनी बड़ी सल्तनत पड़ी है साढ़े चार करोड़ मुसलमान सब के सब तो बेवफा हो नहीं सकते। साढ़े चार करोड़ मुसलमानों को किसने देखा है। वे तो ७ लाख देहातों में पड़े रहते हैं, थोड़े शहरों में पड़े हैं। यू० पी० में पड़े हैं, बिहार में पड़े हैं, सब देहातों में फैले हुए हैं। मैं तो देहात में रहा हूँ और उन सब को जानता हूँ। वे कभी बेवफा नहीं हो सकते हैं। सेवाग्राम में भी मुसलमान पड़े हैं। वे सेवाग्राम में काम करते हैं। वे सेवाग्राम के लिए वफादार रहेंगे, उसके लिए मर जायेंगे। वे क्या जानें कि दूसरी जगह मुसलमाम क्या करते हैं। वे तो सेवाग्राम में रहते हैं, वे सेवाग्राम के आश्रम की रक्षा करते हैं और सब को भाई-भाई समझ कर रहते हैं। कोई कहे कि सारे के सारे साढ़े चार करोड़ मुसलमाल जो यहाँ के रहने वाले हैं बेवफा हो सकते हैं तो वह नहीं होने वाला। और बेवफा से हम

क्यों डरें, मैं तो नहीं डरता हूँ अगर वे हिन्दुस्तान में पड़े हैं और बेवफाई करते हैं तो मैं कहूँगा कि उनको मरना है और इस्लाम को मार डालना है।

सच्चे काफिर तो वे हैं जो हमारी रोटी खाएँ, हमारे यहाँ नौकर बनें लेकिन काम हमारे दुश्मन बनकर करें और हमारा गला काटें। ऐसे हिन्दू भी बने हैं, सिक्ख भी बने हैं, मुसलमान भी बने हैं। दुनिया में हर किस्म के लोग रहते हैं, लेकिन ऐसा समझना कि साढ़े चार करोड़ मुसलमान जो यहां पड़े हैं, इस तरह से दग़ाबाज़ बनेंगे हमारी बुज़दिली है और इससे यह पता चलता है कि हम सच्चे हिन्दू नहीं हैं, हम सच्चे सिक्ख नहीं हैं। हमारी शराफत, जितने अफसर पड़े हैं उनकी शराफ़त, हिन्दू हैं, सिक्ख हैं उन सब की शराफत और बहादुरी इसी में पड़ी है कि वे कहें कि तुमको जाना ही नहीं चाहिये। उनकी मिन्नत करना चाहिये कि आपको कोई छू नहीं सकता। छोड़िये, हमने काफी बुरा काम किया है पर आगे नहीं करने वाले। क्यों जाते हो? पाकिस्तान पहुँचोगे तो वहाँ क्या होगा और वहाँ जाकर क्या करोगे? उसका क्या पता है? यहाँ तो तुम्हारा घर पड़ा है, सब कुछ है। ऐसी मोहब्बत से हम उनको रक्खें। तो सरहदी सूबे में, डेराइस्माइल खाँ वहाँ के जो मुसलमान अफ्रीदी लोग हैं वे भी हमारे लोगों को कहेंगे कि आपको भागना नहीं है। यह शराफत का असर है। अगर हम दिल्ली में शान्ति कायम रक्खें, डर के मारे नहीं या गाँधी कहता है इसलिए नहीं, लेकिन अगर सच्चे दिल से आप इस तरह चलें तो मैं आपको कौल दे सकता हूँ कि कोई मुसलमान आपको ईज़ा नहीं कर सकता है और अगर करेगा तो ईश्वर तो पड़ा है, वह सर्वशक्तिमान है, सबको पूछने वाला है, वह हमारी रक्षा करेगा इसमें मेरे दिल में कोई शंका नहीं है।

*

२१ सितम्बर, १९४७

जिस तरह से आज हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान रह रहे हैं, इस तरीके से नहीं रह सकते हैं। मुझको यह बड़ा बुरा लगता है और एक इन्सान जितनी कोशिश कर सकता है, उतनी मैं इस चीज़ को हटाने की करूँगा। आपको मैं कह दूँ कि मुझको दिल में खुशी नहीं हो सकती है कि मैं जिन्दा रहूँ और जो मैं चाहता हूँ वह न कर सकूँ। ईश्वर मेरे पास से वह काम लेता है, तब तो भला है, अच्छा है, लेकिन अगर ऐसा नहीं होता तो मैं समझता हूँ कि मेरा काम ख़त्म हो गया। मैं कोई आत्महत्या करके मरना चाहता हूँ, ऐसा नहीं। यह सही है कि जो अपने जीवन को दूसरों ही की सेवा में काटना चाहते हैं उनके लिये दूसरी परीक्षा नहीं हो सकती है। जो वे करते हैं, उसमें से कुछ भी फल नहीं निकले। उसके लिए वे हैरान न हों। लेकिन जब फल नहीं मिलता है तो जिस तरह से एक वृक्ष जिसमें फल नहीं आते और वह सूख जाता है, उसी तरह से मनुष्य भी एक वृक्ष जैसा है उसको सूख जाना चाहिये, और वह सूख जाता है यह सृष्टि का नियम है। हिन्दू धर्म के मुताबिक आत्मा तो अमर है; वह मरती नहीं। एक शरीर जो निकम्मा हो गया है और उसकी कोई उपयोगिता नहीं है, उसको तो ख़त्म होना चाहिये। उसकी जगह नया आ जाता है। परन्तु आत्मा अमर होती है और सेवा के द्वारा अपनी मुक्ति के लिये नये-नये चोले धारण करती है।

तो आज मैं चला गया जहाँ एक ओर बहुत से हिन्दू और दूसरी ओर बहुत से मुसलमान एक साथ पड़े थे। उन्होंने कहा 'महात्मा गांधी ज़िन्दाबाद', उसके क्या मानी? हिन्दू भी वैसे कहें, वह भी क्या मानी रखता है, अगर दोनों के दिल अलग-अलग हैं और वे एक दूसरे के साथ शान्ति से नहीं रह सकते। तो मुझको वह जयघोष कठोर सा लगा। मैंने उन मुसलमानों से कहा कि आप लोगों को घबराहट क्या करनी थी? आखिर में मरना है तो मर जायेंगे। मरेंगे अपने भाइयों के हाथ से, दूसरे के हाथ से मरने वाले नहीं हैं। आप उन पर रोष न भी करें, उनको मारने की चेष्टा भी न करें; खुद मर जायँ लेकिन वहाँ से आप डर के मारे न भागें और

न वहाँ से हटें। मैं तो उस पर कायम हूँ। लेकिन एक बात मैंने यहाँ सुनी कि वह महात्मा कैसा बुरा आदमी है ? वह ऐसा कर रहा है कि हमने जिन मुसलमानों को उनके घरों में से हटा दिया, उनको उन्हीं घरों में फिर वापिस लाना चाहता है। बात सच्ची है। मैं उनको वापिस लाना चाहता हूँ, लेकिन वह किस तरह से लाना चाहता हूँ ? मैंने तो उनको कहा, और आज भी उनको कह कर आया हूँ कि जो डर से भागे हैं उन्हें वापिस लाना चाहता हूँ। जो खुशी से अपने आप पाकिस्तान जाना चाहते हैं, उनको तो जाने में कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए। लेकिन डर' के मारे, दुख के मारे और हुकूमत आपकी रक्षा नहीं कर सकती है, हिन्दू, सिक्ख, तो रक्षा करते ही नहीं हैं, ऐसा समझ कर आप जाना चाहते हैं, तो मुझको बड़ा दुख होगा। जो लोग पाकिस्तान नहीं जाना चाहते हैं और यहीं रहना चाहते हैं, मैं कहूँगा उनको कि तुम्हें यहाँ से नहीं जाना है। मैंने उनको कहा कि जो लोग बाहर चले गये हैं, वे तो तभी आ सकते हैं, और तब ही आना चाहिए, जब यहाँ के हिन्दू और सिक्ख खुशी से कहें कि आप आइये। पुलिस और मिलिटरी—उनके ज़रिये से उन्हें लाना मुझको तो अच्छा भी नहीं लगता। मैं तो कहता हूँ कि यह सब छोड़ दें। पुलिस नहीं चाहिये, मिलिटरी नहीं चाहिये। जो कुछ हमें करना है, हम कर लेंगे। मरना है, तो मर जायँगे। अगर कोई किसी को मारता नहीं है, तो वह मरता नहीं है। लेकिन अगर एक मारता है दीवाना बन गया है तो उसके सामने मैं क्यों दीवाना बनूँ ? मैं तो उसके हाथ से मर जाऊँ, वह तो मुझे बड़ा प्रिय लगेगा। वह मुझे काट दे, वह अच्छा लगेगा। मैं हुकूमत की तरफ़ से कह नहीं सकता हूँ। मेरे हाथ में हुकूमत है नहीं। मैं जैसा बना हूँ, वह तो आप जानते हैं। एक आदमी पागल बनता है और वह बुरा करता है, तो मैं वैसा नहीं कर सकता। पीछे वह भी मुझसे भलाई सीख लेता है। चालीस करोड़ हिन्दू-मुसलमान पड़े हैं, उसमें से पाकिस्तान में थोड़े करोड़ चले गये, लेकिन तब भी साढ़े चार करोड़ मुसलमान तो यहीं हिन्दुस्तान में पड़े हैं, बाकी तो सब के सब हिन्दू ही हैं। थोड़े पारसी, थोड़े क्रिष्टी, थोड़े यहूदी भी पड़े हैं, उसकी तो गिनती नहीं हो सकती है। तो वे आपस में लड़ कर मर जायँ तो भले मर जायँ, लेकिन पुलिस-मिलिटरी की मारफत ज़िन्दा रहना वह ज़िन्दगी नहीं। दोनों लड़ते हैं तो हुकूमत क्या करे ? हुकूमत कहे कि हम तो इस तरह से रह सकते हैं, नहीं तो हम हुकूमत छोड़ देते हैं। पीछे जो ऐसा मानते हों कि हिन्दुस्तान में तो हिन्दू ही रहें, क्योंकि पाकिस्तान में मुसलमान ही रहते हैं वे हुकूमत बनावें। इसका मतलब यह होगा कि पाकिस्तान में वे निकम्मे बन

हैं, दीवाना बन जाते हैं, ऐसे ही हम भी यहाँ दीवाना बनें। हम चाहें तो ऐसा कर सकते हैं। मेरा एक दोस्त है, उसको मैं गाली देता हूँ, तो वह मुझको दो गाली दे, वह ठीक है। वह गाली देता है, उसे सहन कर लिया, तो वह कहाँ तक गाली देगा। मारता है, वह भी मैं सहन कर लेता हूँ। मैं उसको मुक्के के सामने मुक्का नहीं देता हूँ। तब पीछे क्या होता है? आपने देखा है? मैंने तो देखा है, कि कोई आदमी ऐसा हवा में मुक्का मारता है तो उसके हाथ टूट जाते हैं। तो बाक्सिङ्ग करता है, वह भी रुई का मोटा तना गद्दा सा होता है, उस पर मुक्का चलाता है, तब तो उसको कुछ लज्ज़त आती है। लेकिन अगर बाक्सर कोइ चीज़ सामने नहीं रखता है, तो वह निकम्मा बन जाता है और कुछ नहीं कर सकता है। मैंने तो आपको सनातन सत्य बतला दिया। मैं उस पर अकेला कायम हूँ। लोग तो आज उस पर नहीं चल रहे हैं। मैं आख़िर तक उस सत्य पथ पर पड़ा रह सकूंगा कि नहीं, यह तो ईश्वर ही जानता है। मैं तो आज सीधी बात करता हूँ कि जो बाहर चले गये हैं, उनको बाहर रहने दें। लेकिन बाहर रहते हैं, पीछे उनको खाना-पानी तो देना है। चूंकि वे बाहर चले गये हैं, उनको भूखों रहने दें और उनको कहें कि तुम पाकिस्तान भाग जाओ, ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा करके हम लड़ाई का सामान तैयार करते हैं। कांग्रेस हुकूमत अगर वह हुकूमत सचमुच देश की सेवा करने के लिए है, पैसों के लिए नहीं है, सत्ता के लिए नहीं है, लेकिन सबकी ख़िदमत करने के लिए है—एक क़ौम की नहीं, दो क़ौम की नहीं, सबकी है। अगर वे ख़िदमत करते हैं, और लोग बिगड़ते हैं और उन्हें खिदमत करने नहीं देते तो उन्हें हट जाना है, पीछे जो लायक हैं, जो हिन्दुस्तान में हिन्दुओं को ही रखना चाहते हैं, वे उनकी जगह लें, हुकूमत में। वह हिन्दू धर्म को डुबोने वाली चीज़ होगी, हिन्दुस्तान को भी डुबोने वाली चीज होगी। पाकिस्तान को हम छोड़ दें। वह जो कुछ भी चाहें करें। हम तो हिन्दुस्तान को ही देखें। उसका नतीजा यह आ जाता है कि सारी दुनिया हमारी तारीफ़ करेगी हमारे साथ होगी। नहीं तो दुनिया जो अबतक भारत की ओर देखती आयी है, अब उसकी ओर देखना बन्द कर देगी। वे मानते थे कि हिन्दुस्तान एक बड़ा मुल्क है, उसमें अच्छे आदमी रहते हैं, वे बुरे होने वाले नहीं। यह विश्वास ख़त्म हो जायगा। आपको इस तरह से करना है तो कर सकते हैं। लेकिन जबतक मेरे सांस में सांस है, तबतक मैं सब को सावधान करता ही रहूँगा और सबको कहता रहूँगा कि अगर इस तरह से करोगे, तो इसमें से कोई भलाई निकलने वाली नहीं है।

★ ★

मुद्रक : यूनाइटेड प्रेस, दिल्ली

प्रार्थना-सभाओं में गांधी जी के भाषण

दिल्ली, २२-६-४७ से ३०-६-४७ तक

* *

अंक २

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
मिनिस्ट्री ऑफ़ इन्फार्मेशन ऐण्ड ब्राडकास्टिंग
गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया

*

मूल्य—चार आने

भूमिका

महात्मा गान्धी की दिल्ली की प्रार्थना-सभाओं में दिये गये ७ भाषणों की पहली किस्त हम जनता के सामने उपस्थित कर चुके हैं। ८ भाषणों की यह दूसरी किस्त है। इसी प्रकार महात्मा जी के भाषणों के और भी संग्रह क्रमशः निकालने का प्रबन्ध किया गया है।

महात्मा जी के सन्देश की जनता को कितनी आवश्यकता है यह कहने की बात नहीं। वातावरण को शान्त करने तथा जनता के हृदय में सद्भावना स्थापित करने में ये भाषण निश्चय ही सहायक सिद्ध होंगे।

* *

२२ सितम्बर, १९४७

एक सभ्य समाज में मूल अधिकारों पर अमल करने के लिए बंदूकों से रक्षा की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। यह सबको मान लेना चाहिये। कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में प्रदर्शनी की भूमि पर अन्य धर्मों, सम्प्रदायों और राजनैतिक संस्थाओं की बैठकें होती देखकर मुझे अत्यन्त हर्ष होता था। वहाँ बिना पुलिस की सहायता के विरोधी विचार प्रकट किये जा सकते थे। अब लोग इस रास्ते से हट गये हैं और जनता में इस रास्ते को अच्छी निगाह से भी नहीं देखा जाता। अब वह अनुकूल वातवरण और बरदाश्त की भावना कहाँ चली गई? क्या यह इसलिये हुआ कि हमने राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है? क्या हम स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करके उसकी आज़माइश कर रहे हैं? आशा रखें कि यह मनोवृत्ति अधिक दिन नहीं रहेगी, अगर रही तो वह हिन्दुस्तान के लिए अत्यन्त दुःखद बात होगी। हमारे टीकाकारों के लिये, जो बहुत हैं, हम यह कहनें का मौका न दें कि हम स्वतन्त्रता के लायक नहीं थे। इन आलोचकों के लिये मेरे दिल में कई उत्तर खड़े होते हैं। लेकिन इनसे कुछ संतोष नहीं होता। भारतवर्ष के करोड़ों के जन समुदाय से प्रेम करने वाले के नाते मेरे स्वभिमान को हानि पहुँचती है कि हमारी सहनशक्ति का दीवाला निकला। हम आशा करते हैं कि हमारी क़ौमी ज़िन्दगी का यह एक गुज़रता हुआ नज़ारा है। मुझसे फिर यह न कहा जाय जैसा कि कहा जाता है कि यह सब मुस्लिम लीग के बुरे कामों का परिणाम है। इसको हम सत्य मानलें तो क्या हमारी सहनशीलता इतनी कमजोर हो गई है कि वह मामूली से बोझ के सामने घुटने टेक दे। शिष्टाचार और सहनशक्ति तो इस तरह की होनी चाहिये कि हमारी संस्कृति अपना स्वयं परिचय दे। यदि भारतवर्ष सफल न हुआ

तो एशिया मरता है। ठीक ही तो कहा गया है कि हिन्द ने अन्य संस्कृतियों और सभ्यताओं को ढाला है। ईश्वर करे कि हिन्द संसारमें उन सब देशों का—चाहे वे एशिया के हों या अफ्रीका के—आशा-स्थल बना रहे।

अब मैं बिना लाइसेन्स के और छुपे हुए हथियारों के भय की बात पर आता हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ का तो पता चल गया है। कुछ अपनी इच्छा से मुझे दिये जा रहे हैं। ऐसे सब हथियारों को निकाल देना चाहिये। जितना कुछ मुझे मालूम है उससे दिल्ली में से अभी भी बहुत कम निकल पाये हैं। मगर इन हथियारों से हम डरें क्यों? अंग्रेज़ी राज्य में भी कुछ छुपे हुए हथियार रहते थे। उस समय इनकी कोई चिन्ता नहीं करता था। जब तुमको विश्वास हो जाय कि शस्त्र के गुदाम किसी जगह छिपे हुए हैं तो उन सबकी ज़रूर खबर दो। ऐसा न हो कि शोर तो ज्यादा हो और निकले कुछ भी नहीं। स्वतन्त्र होने पर हम एक कानून अंग्रेजों के लिये और दूसरा अपने लिये लागू न करें। कुत्ते को मारने का कारण बताने के लिए उसको बुरा नाम न दें। इतना सब करने और कहने के पश्चात् अन्त में साठ वर्ष के परिश्रम से पाई हुई स्वतन्त्रता के लायक होने के लिये कैसी ही कठिनाइयाँ क्यों न हों हम को वीरता से उनका मुकाबला करना चाहिये। यदि हम उनका सामान सफाई से करें तो हम ज़्यादा योग्य बन सकते हैं। ऐसा समझ कर कि मुसलमान अक्सरियत से बेवफा बनेंगे उनको मार डालें या जलावतन करें तो हम से ज़्यादा बुज़दिल कौन?

अक्लियत के लिये सम्भाव रखना अक्सरियत का भूषण है। उसका तिरस्कार करने से अक्सरियत पर दुनियाँ हँसेगी। अपने में विश्वास और जिसको दुश्मन मानें उसका उद्धार करने में हमारी रक्षा होती है। इसलिये मैं ज़ोरों से कहता हूँ कि हिन्दू, सिख और मुस्लिम जो देहली में हैं वे दोस्ताना तौर से एक दूसरे से मिलें और सारे मुल्क को वैसा करने के लिये कहें। आप दुनिया के लिये नमूना बनें। दूसरे हिस्से में हमारे लोग क्या करते हैं सो देहली भूल जाय। तब ही देहली को इस जहरीले वायुमंडल को दूर करने का गौरव हासिल हो सकता है। अगर बैर का बदला लेना मुनासिब हो, तो वह हुकूमत ही के ज़रिये हो सकता है। हर एक आदमी के ज़रिये हरगिज़ नहीं।

*

२३ सितम्बर, १६४७

बतलाया है कि प्रार्थना कोई मामूली चीज़ नहीं है। वह बड़ी बुलन्द चीज़ है।

जीवन भर में हम सब तरह की बात करते हैं। २४ घंटे में काफी बातें करते हैं; गुनाह करते हैं, पैसे के लिये मारे-मारे फिरते हैं तो कम से कम प्रार्थना तो कर लें। समाज में अगर प्रार्थना करें तो वह बहुत बड़ी चीज़ हो जाती है। ४० करोड़ आदमी ऐसा मानकर कि ईश्वर एक है अपनी भाषा में प्रार्थना करें तो वह एक बहुत बुलन्द बात हो जाती है। और पीछे उनमें कुरान शरीफ की कोई आयत आये तो उससे भी न घबरावें। जो भाई ऐसा कहते हैं कि कुरान से कुछ भी प्रार्थना में न पढ़ा जाय, वे तो गुस्से में ऐसा कहते हैं। मुसलमान चूंकि हिन्दुओं को तंग करते हैं, सिक्खों को तंग करते हैं, उनको मारते हैं। इसलिये क्या हम कुरान पर गुस्सा करें? मुसलमानों ने जो कुछ किया वह अच्छा नहीं किया, लेकिन कुरान शरीफ ने क्या बुराई की? भगवान का एक भक्त पाप करता है तो इस लिये हम क्या भगवान का नाम नहीं लेंगे? भगवान तो एक ही हैं। जो भगवान के भक्त हैं वे ऐसा कहेंगे कि हिन्दुओं ने भी बुरा किया है तो क्या गीता बुरी है? सिक्खों ने अगर बुरा किया तो क्या हम गुरु ग्रन्थ साहब न पढ़ें? गुरु ग्रन्थ ने क्या गुनाह किया? सिक्ख बिगड़ें हिन्दू बिगड़ें, मुसलमान बिगड़ें, पारसी बिगड़ें उससे क्या हुआ। उनके जो धर्म हैं और उनके पीछे जो तपश्चर्या हो गई है वह तो कायम ही रहेगी।

मेरे पास रावलपिण्डी से जो भाई आज आ गये वे तो तगड़े थे, बहादुर थे और बड़ी तिजारत करने वाले थे। रावलपिण्डी बनाई थी तो हिन्दुओं ने और सिक्खों ने, लाहौर भी उन्हीं लोगों ने बनाया। पाकिस्तान सारे का सारा मुसलमानों ने थोड़े ही बनाया है? तो पाकिस्तान जो है, उसके बनाने में सब ने हिस्सा लिया,

किसी एक कौम ने नहीं। हिन्दुस्तान को कहें कि यहाँ हिन्दुओं की संख्या ज्यादा है इसलिये इसको हिन्दुओं ने ही बनाया है, तो यह बात ठीक नहीं। उसको हिन्दुओं ने, मुसलमानों ने और सिक्खों ने बनाया; पारसियों ने बनाया, ईसाइयों ने बनाया। जैसा आज हिन्दुस्तान बना है उसके बनाने में सब ने हिस्सा लिया है। मैंने तो उस भाई से कहा आप शान्त रहें और आखिर में तो ईश्वर पड़ा है। ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ ईश्वर नहीं। उसका भजन करो और उसका नाम लो, सब अच्छा हो जायगा। उन्होंने कहा, वहाँ पाकिस्तान में जो पड़े हैं उनका क्या करें? मैंने उनको कहा आप यहाँ आये क्यों? वहाँ मर क्यों नहीं गये? मैं तो इसी चीज़ पर कायम हूँ कि हम पर जुल्म हो तो भी हम जहाँ पड़े हैं वहीं पर पड़े रहें, मर जायँ। लोग मार डालें तो मर जायँ। मगर ईश्वर का नाम लेते हुए बहादुरी से मरें। यही मैंने लड़कियों को सिखाया है। मरने का इल्म तो हासिल कर लें और ईश्वर का नाम लेती रहें। कोई इन्सान है, बुरा आदमी है, उसकी नज़र बद हो जाती है। वह हिन्दू हो, सिक्ख हो, पारसी हो, कोई भी हो। हम यह तो कर सकें कि उसके बस में न हों। वह कहे कि चलो पैसा देते हैं तो उसको यही कहना चाहिये कि ५ मिनट बाद मारना है तो तू अभी मार दे लेकिन हम तेरे बस में आने वाली नही हैं। पैसे देकर छुटने वाली नहीं। मैं तो जबतक मेरे में साँस है यही शिक्षा दूँगा। दूसरी बात मैं नहीं कर सकूँगा। मैं ईश्वर को नहीं भूलना चाहता। इसलिये मैं सब लोगों को कहता हूँ कि सब से बड़ी बहादुरी और सब से बड़ी समझ दुनिया की इसी में पड़ी है कि मरने का इल्म सीखो तब जिन्दा रहोगे। अगर मरने का इल्म नहीं सीखते हो तो बिना मौत मारे जाओगे। मैं नहीं चाहता कि कोई बेमौत मरे। मैंने मुसलमानों को भी कहा आप क्यों जाना चाहते हैं, यहीं पड़े रहो और मरो। मैंने रावलपिंडी के लोगों को भी यही कहा। मैं उन लोगों की मिन्नत करूँगा। हुकूमत वाले जो कुछ कर सकते है करें। मैंने उन लोगों को कहा है कि यहाँ आये हैं तो आप कैम्पों में जावें। वहाँ मेहनत करें। आप लोग तकड़े हैं, हिम्मत न हारें। यह न कहें हम अब क्या कर सकते हैं? मकान नहीं कुछ नहीं। मकान तो पड़ा है। धरती माता हमारा मकान है। ऊपर आकाश है। जो मुसलमान डर से भाग गये, उनके मकान पड़े हैं, ज़मीन पड़ी है। तो क्या मैं कहूँ कि आप मुसलमानों के घरों में चले जायँ? मेरी जुबान से ऐसा नहीं निकल सकता। मुसलमानों के घर जो कल तक थे वे आज भी उनके हैं। वे भाग गये डर के मारे। अगर वे अपने आप भाग गये हैं और उनको ऐसा लगता है कि वे पाकिस्तान में खुश रहेंगे तो चले जायँ, वहाँ

खुश रहें। उनको ईज़ा न पहुँचाओ, आराम से जाने दो। उनकी जायदाद और जेवर जो है वे ले जायँ। पीछे जो घर वे छोड़ जाते हैं वह तो हुकूमत के कब्जे में रहता है। वह जो चाहे कर सकती है। उसमें जो हमारे शरणार्थी हैं वे अपने आप चले जायँ, यह तो अच्छा नहीं। मैं तो एक चीज़ जानता हूँ कि आप तगड़े बनें और जो मैं आपको कहता हूँ उसको आप करें ताकि आप मुझको यहाँ से भेज सकें। मैं पंजाब जाना चाहता हूँ। लाहौर जाऊँगा। मैं पुलिस और मिलिटरी की इस्कोर्ट लेकर नहीं जाना चाहता हूँ। मैं तो भगवान के भरोसे अकेले जाना चाहता हूँ और वहाँ के जो मुसलमान हैं उनके भरोसे पर जाना चाहता हूँ। अगर उनको मारना है तो मार डालें। मैं हँसते-हँसते मर जाऊँगा और दिल में कहूँगा कि भगवान उनका भला करें। उनका भला भगवान कैसे कर सकता है? उनको भला बना कर। ईश्वर के पास भला करने का यही तरीका है—दिल के मैल को शुद्ध कर देना। वह मेरा शत्रु बने, तो भी मैं उसका शत्रु नहीं हूँ। मैं उसका बुरा नहीं चाहता। तो ईश्वर मेरी बात सुनेगा। उस आदमी के दिल में लगेगा मैंने मार कर क्या लिया? इसने मेरा क्या गुनाह किया था? मुझे वे मारें तो मारने का उन्हें अधिकार है। इसलिए मैं लाहौर जाना चाहता हूँ, रावलपिंडी जाना चाहता हूँ। हुकूमत मुझे रोके तो रोके लेकिन मुझे रोक कैसे सकती है? रोकना चाहे तो मुझे मार डाले। अगर मुझको मार डाले तो आप लोगों को एक पाठ देकर मैं चला जाऊँगा। वह मुझको बड़ा अच्छा लगेगा। वह पाठ क्या है? तू मरेगा लेकिन किसी का बुरा ख्याल भी नहीं करेगा।

ध्रुव बालक था, बच्चा था। उसने भगवान की प्रार्थना की। प्रह्लाद क्या था? १२ वर्ष का लड़का। उन सब ने यही किया। तो हम तो उनके वारिस पड़े हैं। गुरुओं ने, नानक साहब ने, जो गुरू ग्रन्थ जानने वाले हैं वे सब जानते होंगे, कि उन्होंने यही सिखाया है कि किसी का बुरा नहीं सोचना, किसी को तलवार नहीं लगाना। मरने की हिम्मत रखना वह तो सब से बड़ी बहादुरी है। अगर हमारे लोग इस तरह से खप जायँ तो किसी पर गुस्सा नहीं करना है। आपको समझना है कि वे खप गये, तो ठीक गये भले गये। ऐसा ही ईश्वर हमको भी कर दे। ऐसी हमारी हमेशा हार्दिक प्रार्थना रहे। मैं आपसे यह कहूँगा, रावलपिंडी वालों से भी कहा कि आप वहाँ जायँ और जो सिक्ख और हिन्दू शरणार्थी हैं उनको मिलें उनसे कहें कि भाई आप वापिस जायें और अपने आप—पुलिस के मारफत नहीं, मिलिटरी के मारफत नहीं। दिल्ली में आप ऐसा करें कि हम झगड़ा नहीं करेंगे तो मैं

समझूँगा ईश्वर मेरी सुनता है। उस चीज़ को लेकर मैं पंजाब चला जाऊँगा, मैं एक दिन भी यहाँ उसके बाद न रहूँगा। यह मैं आपको कहना चाहता हूँ। मैं यहाँ कोई शौक से नहीं पड़ा हूँ, यहाँ सेवा करने के लिए पड़ा हूँ। जो आग यहाँ भड़कती है उसके बुझाने में एक इन्सान जितना कर सकता है वह करने के लिए मैं यहाँ पड़ा हूँ। तो मैं आपको, रावलपिंडी के जो भाई आये हैं उनको, बतला देता हूँ कि उनको किस तरह से रहना है और किस तरह से वे काम करें कि उनकी खुशबू हिन्दुस्तान में, सारी दुनिया में, फैल जाय।

२४ सितम्बर, १९४७

आज जो भजन आप लोगों ने सुना वह हमारे लिए आज ठीक है। हम सब आज कह सकते हैं "मेरी टूटी सी किश्ती है"। और पीछे भगवान को हम कहते हैं कि "कृपा करके हमको पार उतारियो, अगर आप की कृपा नहीं रहने वाली है तो यह किश्ती पार उतर नहीं सकती"। यही आज हिन्दुस्तान का हाल है, इसे मैं प्रतिक्षण देख रहा हूँ। हम में किसी न किसी तरह से कहो, लेकिन वैर-भाव ही आ गया है। हिन्दू-मुसलमान दोनों के दिलों में इतना गुस्सा आ गया है कि दिल्ली में मुसलमानों को हम रहने नहीं देंगे, हिन्दू सिक्खों को पाकिस्तान से भगाया गया है। मैं सुनता हूँ कि छोटे-छोटे बच्चों को भी यह सिखाया गया है। यह ठीक है कि यह सब प्रचार मुस्लिम लीग का है। मुस्लिम लीग ने यह सिखाया, और इसका मैं साक्षी हूँ, कि हम तो लड़कर पाकिस्तान लेने वाले हैं, मशिवरा करके नहीं। हिन्दू और जितने गैरमुसलमान हैं उनके साथ मिलकर करके नहीं। यह तो हमारा दुर्भाग्य था कि वर्षों से यह चलता रहा कि वे हमारे साथ लड़ेंगे। लेकिन यह कभी चल नहीं सकता। लड़कर क्या लेना था। वो एक तरह से तो कह सकते हैं कि लड़कर नहीं लिया है। लेकिन हमने पाकिस्तान माना, हमने कबूल कर लिया, अंग्रेजों ने कबूल कर लिया। अगर अंग्रेज कबूल न करते तो पाकिस्तान हो नहीं सकता था। कांग्रेस कितना ही कबूल करे लेकिन आखिर में तो सत्ता अंग्रेजों के हाथ में थी। उनको उसे छोड़ना था। क्यों? सत्ता अब यहाँ चल नहीं सकती थी। हम उनसे तलवार से नहीं लड़े थे। हमारा निःशस्त्र युद्ध था, हम तो कहते हैं कि हमारा अहिंसात्मक युद्ध था। सो हिन्दुस्तान को आज़ादी मिली। हिन्दुस्तान के टुकड़े हुए। कांग्रेस ने उसमें शिरकत दी। कांग्रेस ने सोचा कि भाई-भाई कबतक इस तरह से लड़ते रहेंगे,

इससे तो अच्छा है चलो दो जो माँगते हैं। पाकिस्तान चाहिये ? दे दो। तो पाकिस्तान तो दिया। मुल्क का पूरा पूरा हिस्सा हुआ ? पाकिस्तान मिला। मगर कइयों को लगता है पूरा नहीं मिला, पूरी रोटी नहीं मिली, आधी पौनी ही मिली, तो इसे तो खा लो, पीछे देखेंगे। सो आज़ादी तो मिली, पर उसे हम हज़म न कर सके। ज़हर जो भरा था। सो हमारे बीच की लड़ाई खतम नहीं हुई; लीग वालों ने ज़हरीली तकरीरें कीं। वे लोग जो पाकिस्तान में रहते हैं, सब मुसलमान थोड़े हैं ? वहाँ हिन्दू रहते हैं, पारसी रहते हैं, सिक्ख रहते हैं, ईसाई रहते हैं। उन सब को खुश करें, बतायें कि सब का हक एक सा होगा, हुकूमत तो हमारी होगी, इसमें शक नहीं है। क्योंकि हमारी अक्सरियत है, वह ठीक है। लेकिन हुकूमत आखिर इन्साफ से चलाना है। ऐसा कहा तो सही लेकिन हो नहीं सका। क्यों नहीं हो सका, इसमें तो मैं क्यों जाऊँ। मुझको सब पता है, वहाँ क्या-क्या हुआ। मुसलमान सब हद से बाहर चले गये। उन्होंने सोचा कि अब तो हमारा राज्य हो गया है तो काटो-मारो। वहाँ से शुरू हुआ। जब शुरू हुआ तो पीछे सिक्ख भी तो लड़ने वाले हैं, वे कैसे बरदाश्त करने वाले थे। उन्होंने भी काटना-मारना शुरू कर दिया। यह हमारा किस्सा है और अभी वह खत्म नहीं हुआ।

हज़ारों भाई मेरे पास आते हैं कि हम वहाँ नहीं रह सकते, वहाँ हमारे लिए यह है कि इस्लाम कबूल करो, नहीं कबूल कर सकते तो जिस तरह हम रखते हैं वैसे रहो यानी गुलाम होकर रहो। वह हम कैसे कबूल कर सकते हैं। मजबूर हो कर वहाँ से भागे हैं। हम को पसंद पड़े तो हम मुसलमान भले हो जायँ। डर के मारे, मुसलमान होना दूसरी बात है। पेट पालने के लिए कोई धर्म नहीं छोड़ सकता है। मजबूर होकर धर्म छोड़ना धर्म नहीं अधर्म है। जो पुरुष या स्त्री अपना मान खो देता है—और मान धर्म में ही है, उसका बचना क्या ? क्योंकि पैसा चाहिये, जेवर चाहिये, नौकरी चाहिये, इसलिए जो धर्म खो देता है। मैं कहता हूँ कि उसके पास कोई धर्म ही नहीं। न वह हिन्दू धर्म के लायक है न वह अच्छा मुसलमान ही बन सकता है। और मजबूर करके हमें कलमा पढ़ायें तो हम थोड़े ही मुसलमान हो सकते हैं। मैं यहाँ कलमा नहीं पढ़ता हूँ मैं तो फातेहा पढ़ता हूँ। दोनों में खूबी पड़ी है। कलमा में तो ऐसा है कि सिवा खुदा दूसरा नहीं है, ऐसा कहो। और पीछे उनके रसूल तो मोहम्मद साहब थे। बाकी जो रसूल हो गये हैं वे कोई नहीं हैं। लेकिन फातेहा में तो बिलकुल साफ है, तू मालिक है सबको बचा सकता है तो हमको भी बचा। लेकिन अच्छा हो तो भी जबर्दस्ती क्या पढ़ाना उसे हम पढ़ें तो खुशी से पढ़ें। लेकिन

कोई कहे—तू यह चीज़ पढ़, पढ़ेगा या नहीं? पढ़ना होगा! नहीं पढ़ेगा तो बन्दूक लगेगी। तो मैं नहीं पढ़ना चाहूँगा। मेरे पास मुट्ठी भर हड्डी है लेकिन दिल तो मेरे पास है, वह दिल आपके पास है वह दिल लड़कियों के पास है। वे कह सकती हैं कि अपना धर्म नहीं छोड़ेंगी। लेकिन आज तो हम एक बाजी खेल रहे हैं। आज ऐसी हालत में हिन्दुस्तान में, हमें क्या करना चाहिये? यह बड़ा प्रश्न आप लोगों के सामने है। आज पाकिस्तान से जो ट्रेन भर कर आती है, पाकिस्तान से तो मुसलमान नहीं आते हैं, हिन्दू आते हैं, सिक्ख आते हैं, तो उस ट्रेन में कुछ न कुछ कत्ल हो जाते हैं। यहाँ से जाते हैं तो, यहाँ से मुसलमान जायंगे, उनका कत्ल हो जाता है। उसमें मुझको कहा जाता है कि हिसाब तो सुनो। मैं क्या हिसाब सुनूँ? मेरे पास हिसाब तो है नहीं। हिसाब सुन कर क्या करूँगा? मैं तो यह कहूँगा कि एक आदमी है वह शराब की एक बोतल पीता है, दीवाना बन जाता है। दूसरा आदमी शराब की दो बोतल पीता है वह बिल्कुल दीवाना बन जाता है। दोनों दीवाने बन जाते हैं। एक पीने की चीज़ ऐसी पीता है कि वह दीवाना नहीं बन सकता, जैसे कि साफ नदी का पानी है। उसको शराब का नाम भले दे दो, लेकिन वह किसी को दीवाना नहीं बना सकती है। उसको शराब कौन कहने वाला है? शराब तो वह है जो हमारी अक्ल को ले जाय और हमको दीवाना बना दे। बात यह है कि आज हमको नशा चढ़ गया है। मान लो कि आज मुस्लिम लीग ने नशा दिया क्योंकि उसके मन में आया सो कर लिया। तो हम सोचें कि वह कर सकते हैं तो हम भी वैसा करें। हम सोचें कि हम तो सारे हिन्दुस्तान में राज्य चलायँगे और पाकिस्तान को मिटा देंगे। मैं आपको कहता हूँ कि पाकिस्तान को हमने कबूल कर लिया पीछे उसको मिटाना क्या है, मिटा नहीं सकते हैं। ताकत से, अपनी तलवार की ताकत से तो नहीं मिटा सकते। और मिटाने की चेष्टा करें तो हम दोनों डूबने वाले हैं। हमारी किश्ती फूटी किश्ती है। आज हम डूब रहे हैं। आज चाहे आप हम लोगों से कहें कि लड़ो और पीछे जीत लेकर आओ। तो मैं कहूँगा कि जीत लेकर आओगे इससे पहिले ही दुनिया की दूसरी ताकत आप को खा जाने वाली है, दोनों को खा जायेगी। इतनी चीज़ मेरे सब दोस्त समझ लें जो समझदार आदमी हैं जिन्होंने इतने वर्ष ऐसे कामों में काटे हैं तो हमारी खैर हो सकती है। मगर जब दोनों विस्की की बोतल पी रहे हों और उसमें लज्जत आती हो तब कैसे होगा? मैं कहूँगा कि भाई तू विस्की को बोतल छोड़ दे। उसमें हमारे लिए विष भरा है तो इसलिए हम इसे दरिया में डाल दें। मुसलमानों को हम इस वक्त ईज़ा नहीं

पहुँचायेंगे। उन्हें आना हो तो उनको राजी खुशी से भेज देंगे लेकिन उनको जबर्दस्ती और मजबूर करके नहीं भेजेंगे। वे अपने घर में पड़े हैं, यहां अक्सरियत उनकी है नहीं। क्यों ऐसे बुज़दिल बनें कि उन्हें सतायें। हम आज़ाद हैं, सारा हिन्दुस्तान आज़ाद है। वे ऐसा क्यों मान लें कि हम उन्हें खा जायेंगे। क्या वे ऐसे हैं कि हिन्दू उन्हें पावें तो खा सकते हैं? कांग्रेस ने इतनी कुरबानियाँ कीं, वर्ष प्रति वर्ष ज्यादा से ज्यादा कुरबानी करती गई। इसमें काफी हिन्दू मुसलमान थे। तो क्या स्वराज्य मिलने पर वे पागल हो गये हैं। इन कुरबानियों से, तकलीफें सहने से हिन्दुस्तान को आज़ादी मिली, उसको शराब के नशे में फेंक देंगे क्या? यह कितनी बुरी बात है। मैं तो आपको यह कहूँगा कि अखबार में आप खबर पढ़ते हैं और गुस्सा करते हैं, यह समझने लगते हैं कि वे हमारे कभी नहीं बनेंगे तो मैं आपको वह बात नहीं सुनाता हूँ। मैंने कल भी कहा था कि यह सब बन्द हो सकता है। किस तरह से? हम साफ बन जाय। साफ बनें उसके मतलब यह हैं कि हम बहादुर बन जायँ। जो आदमी बहादुर बनता है वह ऐसी हरकतें नहीं करेगा। आप के पीछे आपकी हुकूमत है, हुकूमत बदला लेगी। हुकूमत को कहो। राज्य तो हुकूमत चलाती है। वह जमाना चला गया जब अंग्रेज़ों की हुकूमत थी और जब हम उनको कुछ पूछ नहीं सकते थे। आज आपकी हुकूमत है, उसको पूछो। सबको पूछना है। उनको हम कह सकते हैं कि इस तरह से करो और इस तरह से न करो। आखिर साढ़े चार करोड़ मुसलमानों से क्या डरना था। मानो कि साढ़े चार करोड़ मुसलमानों को मार डाला तब पीछे क्या करोगे। पाकिस्तान में तो बहुत मुसलमान पड़े हैं वहाँ किसको मारोगे? पाकिस्तान वाले आपके पास से साढ़े चार करोड़ का हिसाब लेंगे और वह हिसाब आप नहीं दे सकेंगे क्योंकि उसके साथ सारी दुनिया होगी। इसलिए मैं कहता हूँ कि हम पाक रहें हमारी जो किताब है, बहीखाता है, अमलनामा है उसको हम साफ रक्खें। हम कभी कर्जदार नहीं बनेंगे, लेनदार बनेंगे। ऐसा हम कर लें और पीछे मैं कहूँगा कि आपकी जो हुकूमत है उसको तो पाकिस्तान को अल्टीमेटम देना है। जितने हिन्दू-सिक्ख वहाँ से चले आये हैं उनको सबको वापस जाना है और उनकी हिफ़ाजत पाकिस्तान को करनी है पाकिस्तान ने तो अब कह भी दिया है कि जितनी अक्लियत पाकिस्तान में है उनको वही हक होंगे जो मुसलमानों को हैं। उनको बोलने का, रहने का, अपने मन्दिरों में जाने का, गुरुद्वारों में जाने का, सब हक रहेगा। हुकूमत उनके हाथ में नहीं आ जायेगी। आज एक दूसरे का इतबार टूट गया है। यह मैं समझ सकता

हूँ। लेकिन इलाज क्या यह है कि मेरे पास यहाँ मुसलमान पड़े हैं, उनकी जायदाद पड़ी है, घर पड़े हैं, उनके बच्चे हैं, उनको हम भगा दें, मारें और जलाना शुरू कर दें? ऐसा नहीं होना चाहिये। इसमें बड़ी बुजदिली है। हम क्यों बुजदिल बनें? ऐसी सीधी सीधी बात मैं आज आपको सुनाना चाहता हूँ। मैं तो यही कहता हूँ कि हम हिन्दुस्तान में बदला लेना भूल जायं और दिल को ऐसा बहादुर रक्खें कि हिन्दुस्तान देख सके कि दिल्ली में कुछ होने वाला नहीं है। दिल्ली में हमने कुछ कर लिया है, मुसलमानों को निकाल दिया है। मैं नहीं कहता हूँ कि जो चले गये हैं उनको आप आज वापस लायें। लेकिन जितने यहाँ पड़े हैं, उनसे कहें कि चलो आराम से रहो। बाद में जो पीछे चले गये हैं उनको आप दिल्ली में लायेंगे। जो कोई मुसलमान बुराई करे उसके लिए हुकूमत को कहो। आज जो करना चाहिये वह करने नहीं देते। वह आपकी हुकूमत है। ईस्ट पंजाब में भी आपकी हुकूमत है और वह तो हिन्दुस्तान में है। तो हिन्दुस्तान में जो पड़े हैं वे जो हिन्दुस्तान की हुकूमत में पड़े हैं। उनको हुकूमत जैसा कहे करना है। अगर हुकूमत कहे कि मारो हमारे पास तो लश्कर नहीं है तो पीछे हुकूमत मर जाती है। तब तो पीछे गुण्डा राज्य बन जाता है और वह तो हुकूमत का काम ही नहीं है। मैं आपको कहना चाहता हूँ कि हुकूमत को आप जितना जोर दे सकते हैं दें लेकिन आप अपने हाथ में कानून न लें, बन्दूक न लें और किसी को मारें नहीं। इतना करो तो हम जीत जाते हैं और हमारी किश्ती जो आज डूब रही है वह बच जायगी। और पीछे जो सच है उसके साथ तो हमेशा ईश्वर है ही। ईश्वर हमको कभी छोड़ नहीं सकता है। हम अगर ईश्वर को छोड़ दें, उसको भूल जावें और सच्चा रास्ता छोड़ दें तो ईश्वर क्या कर सकता है?

२५ सितम्बर, १६४७

यह सब आपत्ति हमारे सिर पर यकायक आ पड़ी है। हमारी आज़ादी अभी दो डेढ़ महीने की नहीं हुई। १५ अगस्त से १५ सितम्बर तक और पीछे आज २५ तारीख है। तो एक महीना १० दिन हुआ। वह आज़ादी अभी तो एक छोटी सी बच्ची है। एक महीना १० दिन का बच्चा क्या कर सकता है? उसके तो हाथ-पैर चलने चाहियें। एक महीने १० दिन के बच्चे में वह दिमाग नहीं हो सकता। लेकिन हम तो तगड़े हैं और अंग्रेज़ी सलतनत से आज तक लड़ते आये हैं तो हम थोड़े ही मुसीबत के सामने झुकने वाले थे। आज़ादी के बाद की ही बात करें। यह तो हो नहीं सकता हम तैयार नहीं थे। आज़ाद तो हम बन गये लेकिन हमारे जो लोग हैं उन्होंने आज़ादी के यह माने मान लिये कि अब हम जो कुछ चाहें वह करें। इससे हिन्द की हुकूमत का काम हमने बहुत ही मुश्किल कर दिया है। जो आदमी अपने हाथ साफ नहीं रखता वह साफ चीज़ क्या देखेगा और उसकी कहाँ तक कदर करेगा? आज हम में बदमाश आदमी पड़े हैं तो उसमें से कौन आदमी किस को कहे कि तू बुरा है? अगर दूसरा उसका जवाब दे कि तू बदमाश है तो इससे वह सवाल और पेचीदा हो जाता है। यह स्वराज्य नहीं है और न यह स्वराज्य लेने का रास्ता है। इसलिए मैं कहूँगा कि हमें तो जितना हो सकता है, हमारी हुकूमत को कहना चाहिये, उसको हमें मदद देनी चाहिये। मानो कि यह मदद नहीं मिलती, तो क्या जो पाकिस्तान में होता है और हो रहा है ऐसा हम भी करने लगें? इससे उनको पाठ मिल जायगा? मैं आपको कहूँगा कि उनको पाठ ऐसे नहीं मिल सकता। दुनिया का काम इस तरह नहीं चलता। कुछ आदमी लड़ते-भिड़ते

हैं तो हुकूमत कहती है कि तुम आपस में क्यों लड़ते हो ? पुलिस पड़ी है उसको कहना चाहिये। पुलिस नहीं सुनती है तो मजिस्ट्रेट का मकान तो है, आप वहाँ निवेदन कर सकते हैं। वहाँ जो कुछ हो सकता है, वह होगा। एक दो आदमी आपस में लड़ें तब तो मजिस्ट्रेट फैसला करे, लेकिन यहाँ तो दो बड़ी कौमें आपस में लड़ीं। हुकूमत क्या करे ? यह अंग्रेजी हुकूमत नहीं है जिसको इंग्लैंड से हुक्म आते थे। आज तो हुकूमत आपकी है। उसके माने हुए कि आप हुक्म निकाल सकते हैं। आप हुकूमत को कह सकते हैं यह मत करो। उसे हटाना चाहें तो हटा सकते हैं। ऐसी आपकी ताकत है। अगर उस ताकत का आप सच्चा इस्तेमाल न करें तो बड़े खतरे में पड़ जायेंगे और मैं कहूँगा कि हम आज बड़े खतरे में पड़े हैं। पाकिस्तान तो खतरे में पड़ा ही है और हम भी खतरे में पड़े हैं। मैं इसके जवाब में यही कहूँगा कि हमारी सरकार है, सलतनत है, हुकूमत है, उसको जो करना ही चाहिये, कर रही है। और अगर कुछ बाकी रह गया तो उसको भी करना है। मैंने आपको बतला दिया है कि आपका धर्म क्या है। बाकी मैं कहना नहीं चाहता। आप लोगों का धर्म क्या है ? मिलजुल कर रहें, मुसलमानों को दुश्मन न समझें। जो दुश्मन हैं वे अपने आप मर जायंगे। लेकिन हम एक आदमी को दुश्मन समझें, उसको मारें-पीटें तो इसमें हमारी बुजदिली है, इससे हममें दुर्बलता आती है। जो हिम्मत रखते हैं, बहादुर हैं उनका यह काम नहीं है कि वे किसी से लड़ें भिड़ें। क्योंकि किसी पर हम अविश्वास रखते हैं उससे हम लड़ते हैं। यह सब व्यर्थ है। लड़ना क्या था। उसके बीच में हमारे बीच में भगवान हैं। मैंने आपको सुनाया था कि यह सब तुम्हारे हाथ में है; ईश्वर के हाथ में है। वह हमारी लाज रखे तो रहती है, नहीं रखे तो नहीं रहती है। उसको कहो, मनुष्य को नहीं। जो पतित का उद्धार करने वाला है, उसको कहो। वह हमारे बीच में है। वह हमारा उद्धार करने वाला है। तो हम क्यों किसी से बिगड़ें या डरें ? भले ही मुसलमान कुछ भी करे, भले ही कितने हथियार रक्खे, भले वह बदमाश बन जाय। बेवफा बने, तो बेवफाई का बदला हुकूमत लेगी। हुकूमत के लिये तो यह कानून सारी दुनिया में पड़ा है कि बेवफा को गोली मार कर उड़ा देती है। अगर कोई बेवफाई करे तो वह स्टेट के लिए बड़ा भारी गुनाह हो जाता है। वह एक खून से भी ज्यादा गुनाह हो जाता है। इसलिये उनको उड़ा देते हैं। तो वे ऐसा करें यह मैं समझ सकता हूँ। लेकिन वे बेवफा हो गये हैं ऐसा शक करके

उन्हें मारना इन्सान का काम नहीं है, वह बुजदिल का काम है। मैं यह कहूँगा हम ऐसा न करें।

कल मैंने कहा और आज फिर कहता हूँ कि हमारी टूटी-फूटी किश्ती है। उसको कृपा करके तुम ही पार उतार सकते हो। नहीं तो किश्ती दरिया में पड़ी है। उसको डूबना है, उसमें एक बड़ा छिद्र हो गया है। पानी उसमें फक-फक करके भर जायगा और जो लोग उसमें बैठे हैं वे भी डूब जायँगे। भजन में कहा है कि मेरी टूटी हुई किश्ती है उसको हे प्रभु, तू कृपा करके पार उतार। यह बिलकुल ठीक बात है कि हमारी ऐसी टूटी हुई किश्ती को भगवान ही पार उतारेगा। लेकिन हमें प्रयत्न करना चाहिये। अगर किसी जगह पर किश्ती टूट गयी है तो हमारे पास जो सामान हो सकता है वह लेकर उसमें पानी भरने न दें। पानी भर जाता है तो मैंने देखा है कि जिसके ओर से पानी अन्दर आता है उसी ही जोर से उसे निकाल फेंकते हैं। तब छिद्र होते हुए भी वह नैय्या चलती है लेकिन वह कब चल सकती है? जब ईश्वर का उसमें हाथ हो। ईश्वर कृपा करें तो वह नैय्या चलने वाली है और वह पार उतर जाती है नहीं तो डूब जाती है। इसलिये मैं कहूँगा कि मनुष्य को प्रयत्न करना चाहिये और ईश्वर का सहारा रखना चाहिये।

दिल्ली में आग भभक रही है, दूसरी जगह हिन्दुस्तान में आग लग रही है, हर जगह आज आग जल रही है तो हमारा धर्म हो जाता है कि हम उसको मिटा दें, उस पर पानी डालें, नहीं तो वह आग बुझ नहीं सकती। हमारा पहिला काम यह हो जाता है कि हम लोगों को समझायें। उनको, आप लोगों को, सबको मैं वही चीज समझाता हूँ। जब तक मुझ में साँस है मैं सारी दुनिया को वही चीज कहने वाला हूँ। हिन्दुस्तान इतना आलीशान मुल्क, आज बिलकुल एक श्मशान सा हो गया है। ऐसा हैवान हो गया है!

मुझको तजुर्बा है और मैं कहता हूँ कि हमारी पुलिस-मिलिटरी को लोगों का सेवक बनकर रहना है, लोगों का अमलदार बनकर नहीं। अमलदारी का ज़माना चला गया। मेरा तो उसूल यह है कि मोहब्बत से काम लेना चाहिये। अगर हम ऐसा कहेंगे कि हिन्दू मिलिटरी है, पंजाबी मिलिटरी है, हिन्दू पुलिस मुसलमान को कटवा देगी—यह सब मैं सुनता हूँ और मुझको दुख भी होता है, हँसी भी आती है। अगर यह बात सच्ची है तो मैं समझता हूँ कि पुलिस-मिलिटरी दोनों हिन्दुस्तान को डुबा देंगी, और हिन्दुस्तान की किश्ती डूब जायगी। आज तो हमारी मिलिटरी है। मैं ऐसा नहीं मानता कि अंग्रेज सब

निकम्मे हैं। मगर अंग्रेज़ तो उसमें से काफ़ी चले गये हैं, अफ़सर लोग हैं माना कि वे सब निकम्मे हैं, मैं तो ऐसा मान नहीं सकता, मगर ऐसा है तो वे जा सकते हैं। माना कि पाकिस्तान में मिलिटरी कोई गन्दा काम करे तो क्या हिन्दुस्तान में जो मिलिटरी है वह भी गन्दा काम करे? वहाँ की पुलिस गन्दा काम करती है तो यहाँ की पुलिस भी गन्दा काम करे? मैं आपको कहना चाहता हूँ और उसका नतीजा बतलाता हूँ। सब ऐसे बनें तो हमारा हिन्दुस्तान बिल्कुल ख्वार हो जायगा और हमारी आज़ादी जो एक महीना १० दिनकी है वह दो महीने भी नहीं चल सकेगी। ऐसा हम न करें। ऐसा न करने के लिए हमें क्या करना चाहिये? हमको बहादुर होना चाहिये। किसी से न डरें सिर्फ़ भगवान् से हम डरें। भगवान् से हम प्रार्थना करें कि जो हमारी किश्ती है उसको पार उतार दें। हमारी और उसकी शर्त यह हो जाती है कि पाकिस्तान में कुछ भी हो, दूसरे कुछ भी करें, हमें साफ़ रहना है, हम दिल शुद्ध रक्खें। अगर ऐसा नहीं करते तो पीछे हम राक्षस बनेंगे, यह समझने की बात है। मुसलमान कहीं भी हों सारी दुनिया में वे कुछ करें, उससे हमें क्या पड़ा है? हम तो अपने हिन्दुस्तान को स्वच्छ रक्खें, शुद्ध रक्खें, सहिष्णु रक्खें। मुसलमानों को हिन्दुस्तान का वफ़ादार बनना है। अगर वे वफ़ादार नहीं रहते हैं तो वे शूद्र होते हैं। हम थोड़े ही गोली मार सकते हैं, वह हमारा काम नहीं। लेकिन अगर साबित हो जाता है कि उन्होंने हिन्दुस्तान की बेवफ़ाई की है तो उनके लिए एक ही इलाज है कि उनको गोली से शूट किया जाय या फाँसी पर चढ़ाना होगा, दूसरा तरीका नहीं। यह शर्त है उन लोगों के लिए जो हिन्दुस्तान में रहते हैं। मुसलमान तो हमारे भाई हैं, मुसलमानों का तो सब घर-बार यहीं पड़ा है, इसलिए हमको समझ लेना चाहिये कि जो यहां रहना चाहें वे खुशी से रहें। हमको एक दूसरे का डर न हो। मैं तो आपको कहूँगा कि आप विश्वास रखिये क्योंकि विश्वास से विश्वास बन सकता है और दगाबाजी से दगाबाजी। तो विश्वास को बढ़ाते रहो।

२६ सितम्बर, १९४७

यह जो चल रहा है वह न सिक्ख धर्म है, न इस्लाम है, न हिन्दू धर्म। सब को थोड़ा-थोड़ा हम जानते हैं। ऐसा कोई धर्म रह सकता है कि जो न करने का काम करे? गुरु नानक से सिक्ख पंथ चला। गुरु नानक ने क्या सिखाया है? वे कहते हैं कि ईश्वर को तो बहुत नाम से हम पहिचानते हैं, उनकी बयान में अल्लाह आ जाता है, रहीम आ जाता है, खुदा आ जाता है, सब धर्मों में यह है। नानक साहब ने भी यह यत्न किया कि सब को मिला देंगे। कबीर साहब ने भी वही कहा। वह ज़माना चला गया। यह हमारे लिये दुःख की बात है।

आज एक भाई मेरे पास आ गये—गुरुदत्त। वे बड़े वैद्य हैं। अपनी कथा सुनाते-सुनाते वे रो दिये। उन्होंने यह कबूल किया कि 'तुम्हारी शिक्षा यह थी कि मुझे वहाँ मर जाना था लेकिन उसकी हिम्मत मुझ में नहीं थी।' उन्होंने कहा कि 'मैंने तुम्हारा सदा सम्मान किया है और मैं समझता आया हूँ कि जो तुम बताते हो वही सच्ची बात है। लेकिन सच्ची बात के मुताबिक चलना दूसरी बात है। सच बात है कि वह मुझ से नहीं बना। अभी मुझ से कहो तो मैं—वापिस चला जाऊँ।' मैंने कहा कि अगर हम समझें, हमको बिल्कुल साबित हो जाता है कि पाकिस्तान गवर्नमेंट से हम कभी इन्साफ़ नहीं ले सकते हैं, वह अपने आप कबूल नहीं करते कि उन्होंने कुछ गुनाह किया है। अगर उनको आप समझा न सकें तो आपकी कैबिनेट है, बड़ी कैबिनेट है, उसमें जवाहर लाल है, सरदार पटेल है, दूसरे अच्छे आदमी पड़े हैं, वे भी उनको समझा न सकें कि ऐसा मत करो तो आखिर लड़ना होगा। हम आपस में दोस्ताना तौर से तय कर लें। क्यों न ऐसा कर सकें? हम हिन्दू-मुसलमान कल तक दोस्त थे तो क्या आज ऐसे दुश्मन बन गये कि

एक दूसरे का भरोसा ही नहीं करते ? अगर आप कहें कि भरोसा नहीं ही करने वाले हैं तो पीछे दोनों को लड़ना पड़ेगा। लॉजिक बताती है जिसके पास फौज रहती है, पुलिस रहती है और जिनको उनके मारफत काम करना पड़ता है वह ऐसा न करें तो क्या करें। अगर यही करते हैं कि वे पाकिस्तान में, एक को मारते हैं तो हम दो को मारेंगे। तो कौन किसका रहेगा ? अगर हमको इन्साफ़ लेना है तो हम यह समझ लें कि यह मेरा और आपका काम नहीं है वह हमारी हुकूमत का काम है, हुकूमत को कहो। वह तो हमारी मदद के लिए पड़ी है। हमें हमला नहीं करना है। लेकिन लड़ने के लिए तैयार रहें क्योंकि लड़ाई जब आती है तो हमें नोटिस देकर नहीं आती है। किसी को लड़ने के लिए आगे कदम बढ़ाना नहीं है लेकिन अगर कोई कदम बढ़ाता है तो पीछे दोनों हुकूमतों का सत्यानाश हो जाता है। लड़ाई कोई मामूली चीज़ नहीं है। मैं आख़िर कब तक यह बताऊंगा। अगर दोनों के बीच समझौता नहीं हो सकता तो हमारे लिए दूसरा कोई चारा नहीं। पीछे जितने हिन्दू हैं वे लड़ते-लड़ते बरबाद हो जायें, या मर जायें तो मुझे इसमें कोई दुख नहीं। लेकिन हमें इन्साफ का रास्ता लेना है। मुझे कोई परवाह नहीं है कि सब के सब मुसलमान या हिन्दू इन्साफ़ के रास्ते में मर जाते हैं। पीछे जो ४॥ करोड़ मुसलमान हैं अगर यह साबित होता है कि वे तो फिफ्थ कौलमिस्ट हैं, पंचम स्तम्भ हैं तो उन्हें तो गोली पर जाना है, फाँसी पर जाना है, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है। तो जैसे उनको जाना है, वैसे हिन्दू को, सिक्ख को जाना है अगर वे पाकिस्तान में रह कर पाकिस्तान से बेवफ़ाई करते हैं तो। हम एक तरफ़ से बात नहीं कर सकते। अगर हम यहाँ जितने मुसलमान रहते हैं उनको पंचम स्तम्भ बना देते हैं तो वहाँ पाकिस्तान में जो हिन्दू, सिक्ख रहते हैं क्या उन सब को भी पंचम स्तम्भ बनाने वाले हैं ? यह चलने वाली बात नहीं है। जो वहाँ रहते हैं अगर वे वहाँ नहीं रहना चाहते तो यहाँ खुशी से आ जायँ। उनको काम देना, उनको आराम से रखना वे हमारी यूनियन सरकार का परम धर्म हो जाता है। लेकिन ऐसा नहीं हो सकता कि वे यहां बैठे रहें और छोटे जासूस बनें, काम पाकिस्तान का नहीं हमारा करें। यह बनने वाली बात नहीं है और इसमें मैं शरीक नहीं हो सकता। मेरे पास कोई जादू की लकड़ी नहीं है, तलवार नहीं है। मेरे पास एक ही बात रही है ईश्वर का नाम लेना, ईश्वर का काम करना। उससे हमारे सब काम निबट जाते हैं। यह साधन मेरे ही पास थोड़े हैं, यह आपके पास भी है, और जो छोटी लड़की खड़ी है उसके पास भी है। जो जादू है, वह ईश्वर के पास पड़ा है। ईश्वर की कृपा न हो

तो मैं क्या करने वाला हूँ ? लेकिन इतना समझ सकता हूँ मैं तो बहुत वर्षों से, ६० वर्ष हो गये, बस लड़ने वाला हूँ, तलवार से नहीं बल्कि सत्य और अहिंसा के शस्त्र से। आज भी वह शस्त्र हमारे पास है लेकिन वह मेरी अकेले की शक्ति नहीं। अगर आप सब मेरा साथ न दें तो मैं बेकार हो जाता हूँ।

हमको जिस शक्तिसे यह आज़ादी मिली है उसी शक्तिसे हम उसे रखने वाले हैं। इस शक्ति से हमने अंग्रेज़ों को हरा दिया। बम गोलों से नहीं हराया। लेकिन जो कुछ हमारी शक्ति रही वह निःशस्त्र थी, उससे हमने उनको हरा दिया। हिन्दू हों, सिक्ख हों, पारसी हों, क्रिस्ती हों अगर हिन्दुस्तान में बसना चाहते हैं तो उनको हिन्दुस्तान के लिए लड़ना है और मरना है। सब हिन्दुस्तानी अपने देश के लिए लड़ेंगे तो हमारे पास लश्कर हो या न हो हमें कोई ताक़त नहीं हरा सकती और न ही हटा सकती है। उन्होंने कहा है वे हिन्दुस्तान के वफ़ादार रहेंगे हम उनका विश्वास करें और दिल से करें। याद रखें "सत्यमेव जयते" कि सत्य की जय होती है। सत्य हमेशा जय पाता है। "नानृतम" अर्थात् झूठ कभी नहीं। यह महान् वाक्य है। इसमें हमारे धर्म का निचोड़ है। उसको आप कंठ कर लें, दिल में रख लें। तो मैं कहूँगा और जोरों से कहूँगा कि अगर सारी दुनिया हमारा सामना करे तो हम खड़े रहने वाले हैं, हमको कोई नहीं मार सकता है। हिन्दू धर्म का कोई नाश नहीं कर सकता। अगर उसका नाश हुआ तो हम ही करेंगे। इसी तरह इस्लाम का हिन्दुस्तान में नाश होता है तो पाकिस्तान में जो मुसलमान रहते हैं वे कर सकते हैं, हिन्दू नहीं कर सकते हैं।

*

२७ सितम्बर, १९४७

मेरा खास वैद्य कौन है वह मैं आपको बतला दूं। वह मेरे लिए भी अच्छा है और आपके लिए भी अच्छा है। आज मेरा वैद्य, मन से, वचन से और कर्म से राम है, ईश्वर है, रहीम है। वह वैद्य कैसे बन सकता है? एक भजन सुनाया।— "दीनन दुखहरन नाथ" दुःख में सब दुःख आ जाते हैं, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक जितने दुःख एक आदमी को भुगतने पड़ते हैं। शरीर के जितने दुःख हैं उनका हरण करने वाला राम है, यह भजन में कहा है। सो मैंने समझ लिया कि सबसे बड़ा अचूक इलाज या उपचार है रामनाम। जो लोग मेरे पास आ जाते हैं उनके लिए मेरे पास तो दूसरी दवाई ही नहीं है, हाँ रामनाम है। पीछे थोड़ी मिट्टी ले लो पानी का उपचार कर लो। मैं जानता हूँ कि जिसके हृदय में रामनाम अंकित हो गया है उसको तो मिट्टी भी नहीं चाहिये और पानी का उपचार भी नहीं। जिन्दा रहते हैं तो जिन्दा रहेंगे मर जायेंगे तो भले मर जायें। दो घोड़ों पर कोई सवारी नहीं कर सकता अगर मुझको रामनाम में विश्वास है तो मुझको इसी पर कायम रहना चाहिये, उससे डरे सो मरे। राम तो तारनहार है। जो मनुष्य रामनाम को अपने हृदय में अंकित करता है उसको मरना है ही कहाँ। यह शरीर क्षणभंगुर है। आज है कल नहीं, अभी है दूसरे क्षण में नहीं। तो इसका मैं अहंकार करूँ? जाने का समय आ जाने पर उसको जिन्दा रखने की चेष्टा करना, वह व्यर्थ है। उस मनुष्य का क्या होगा जो शरीर पर इतना अहंकार करता था? नानक गुरु बड़े गुरु हो गये हैं। उनके पीछे जितने गुरु आये उन्होंने भजन-कीर्तन लिखे तो सही लेकिन आखिर में उन्होंने गुरु नानक का नाम दिया। वह हमारी हिन्दुस्तान की सभ्यता है। मैं ऐसा मानता हूँ कि बहुत से देशों में ऐसा होता होगा। कुछ भी हो

मैं तो यहाँ हिन्दुस्तान की जो सभ्यता है उसकी ही बात कर सकता हूँ। मीरा बाई बड़ी भक्त थी। बहुत भजनों के अंत में मीरा का नाम आता है। उसने अपना नाम नहीं दिया लेकिन अपने भजनों में मीरा का शब्द लगाने से मीरा के भक्तों को संतोष मिला। वह बड़ी खूबसूरत चीज़ है। कहते हैं कि अर्जुन देव बहुत बड़े गुरु हो गये हैं और कवि भी थे। वे लिखते हैं—"कोई बोले रामनाम कोई खुदाई, कोई सेवे गोसइयाँ कोई अल्लाह।" यह देखने लायक बात है, यह गुरु ग्रन्थ में दिया है। आज जो सिक्खों के बारे में कहा जाता है वह तो नानक गुरु की जो शिक्षा थी उसको दबाने की बात है। ऐसी चीज़ों से गुरु ग्रन्थ साहिब की प्रतिष्ठा बढ़ नहीं सकती, सिक्ख भी बढ़ नहीं सकते। कुछ सिख भाइयों ने ऐसे सादेभाव से मुझ से बात की। गुरु अर्जुन देव ने ऐसा नहीं कहा है कि राम के साथ रहीम का क्या मिलना था, कृष्ण के साथ करीम का क्या मिलना था? और उन्होंने पीछे मुझे और सुनाया कि कोई जावे तीर्थ और कोई हज जाय, तो सब एक है। कोई पूजा करे कोई सिर नवाये, पूजा कोई मन्दिरों में करता है और कोई अपना शरीर है वह ईश्वर के नाम पर झुका लेता है। पीछे कहते हैं कि कोई पढ़े वेद, कोई किताब। किताब के माने कुरानशरीफ के हैं। कोई नीला कपड़ा पहिनता था कोई सफेद। मुसलमान नीला कपड़ा पहिनता है और जो खासा हिन्दू रहता है वह सफेद पहिनता है। पीछे कोई कहे तुर्क, कोई कहे हिन्दू। तुर्क के माने मुसलमान है। प्रभु और साहब इनके बीच में भेद रहा, रहस्य रहा वह जान लेते हैं। अगर वक्त मिले तो हिन्दू भजनों में, कीर्तनों में से इतनी चीजें मैं सुना सकता हूँ कि आप हैरान हो जायँगे कि यह हिन्दू धर्म है या सिक्ख धर्म है। आज हम ऐसा क्यों कहते हैं कि बस मुसलमानों को यहाँ से जाना ही है। मुसलमानों को हिन्दुओं के साथ बसाने की जो योजना रखी जा रही है वह भूल है और काँग्रेस की यह चौथी भूल है। कांग्रेस इसको करे या न करे लेकिन यह मेरी योजना है और भूल है तो यह मेरी भूल है। दूसरे आते हैं। वे कहते हैं कि तू महात्मा कहाँ का रहा? महात्मा होकर हिन्दू धर्म का नाश करने में पड़ा है। लेकिन मैं तो कहता हूँ कि जो मेरी भूल बतलाते हैं वह भूल नहीं है। सही बात यह है आज हम दीवाने बन गये हैं और दीवानेपन में उल्टी सीधी बातें करते हैं। जब हमारा दीवाना पन निकल जायगा तब हम जो सही बात है वह कहेंगे। इसलिए मैं कहता हूँ कि मेरी बात भूल नहीं हो सकती। जो लोग ऐसा मानते हैं, कि मैं भूल करता हूँ वे खुद भूल करते हैं। अगर ४॥ करोड़ मुसलमानों को यहां से निकाल दोगे तो सारा जगत थूकेगा। तब क्या यह कहोगे कि

पाकिस्तान क्या कर रहा है? पाकिस्तान अपना धर्म नहीं पालता इसलिए मैं हिन्दुओं को सिखाना शुरू कर दूँ कि तुम भी धर्म छोड़ो? यह तो मैंने सीखा नहीं। हम तो अगर यहां जो मुसलमान भाई हैं इनकी रक्षा कर लेते हैं और खुद साफ रहते हैं तो पाकिस्तान में भी उसका असर होगा। यह मेरा जवाब है।

आज मैं सोचता हूँ और यह समझने की बात है कि एक क्रिस्टी बहन उसे आप जानते हैं, राजकुमारी अमृतकौर, वह तो हेल्थ मिनिस्टर है। जितने लोग कैम्पों में पड़े हैं, हिन्दू मुसलमान सबके लिए वह कुछ करना चाहती है। मगर उसे किसी का सहारा न मिले तो वह क्या कर सकती है? वह पक्षपात तो कर नहीं सकती। जो कुछ हो सकता है सब के लिए करती है। वह थोड़ी क्रिस्टी भी है, थोड़ी मुसलमान भी है, थोड़ी हिन्दू भी, इसलिए उसके सामने सब धर्म एक समान हैं। वह चली गई और उसके साथ लड़कियां भी गईं वे सब तो सेवा के लिए गई थीं। सेवा में डर क्या? लेकिन उन्होंने मुझको सुनाया कि वहाँ जो हिन्दू-सिख पड़े हैं वे कहते हैं कि खबरदार तुम मुसलमानों की सेवा करने के लिए जाती हो तो यहाँ से भागना होगा, जब मैंने यह सुना तो हँस दिया। वह कहने की बात थी कुछ करना थोड़े ही था। लेकिन आखिर में तो जो बेचारे मुसलमान पड़े हैं या थोड़े क्रिस्टी पड़े हैं, वे कोई मारधाड़ करने वाले थोड़े हो हैं, कहाँ से मारधाड़ करेंगे? उनके पास है क्या? उनकी तो आज दुर्दशा है। उन्हें धमकी क्या देना था? इसलिए मैंने सोचा कि आपको यह कहूँ जिससे हम सावधान बनें और ऐसी बातें न करें।

आखिर में जो मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि मैंने लड़ाई की बात की थी तो समझबूझ कर की थी। लेकिन हमारे अखबारनवीस हैं उनका काम है बात को बढ़ाना। उन्होंने हेड लाइन दी कि गाँधी तो लड़ाई करना चाहते हैं। कलकत्ते से तार आता है कि गाँधी जी भी लड़ाई की बात कहते हैं, क्या लड़ाई होगी? मैंने जो बात कही वह तो यह है कि मेरे मन में स्वप्न में भी, ख्वाब में भी लड़ाई की बात हो नहीं सकती। क्या आखिर मैं एक ऐन मौके पर अपना धर्म छोड़ दूँगा? मेरा धर्म तो अहिंसा है। मैंने तो कभी लड़ाई नहीं की और न किसी को लड़ना चाहिए। जो काम हमें करना है वह लड़ कर हम कैसे कर सकते हैं? मैंने तो बतलाया है कि अगर पाकिस्तान गुनाह करता है और हिन्दुस्तान भी गुनाह करता है, क्योंकि दोनों हुकूमतें अलग हो गईं, आजाद हो गईं, तो एक हुकूमत दूसरी हुकूमत से इंसाफ करवाना चाहे तो कैसे करवा सकती है? हाँ, मिलजुल कर काम करें तो वह दूसरी बात है। अगर मिलजुल कर नहीं कर सकते हैं तो पंच रक्खें। वह

भी नहीं करते तो हम लाचार बन जायेंगे। यह कहना कि आप मेहरबानी करके आपस में मिलकर कोई फैसला करें, अगर वह नहीं कर सकते तो पंच रक्खें और अगर वह भी नहीं करते हैं तो हम लाचार बन जायेंगे और लड़ाई होगी क्या लड़ाई की हिमायत करना है ? मुझे तो हिन्दुस्तान को यही कहना है, और पाकिस्तान को भी यही कहना है, आपस में मिलजुल कर फैसला करें या पंच रक्खें। लेकिन पाकिस्तान वाले कहें कि नहीं 'हम तो लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान' जो मैंने कल सुनाया। अगर एस. गुमान रक्खें तो यहां हिन्दुस्तान की हुकूमत लड़ेगी नहीं तो क्या करेगी ? अगर हुकूमत का चार्ज मेरे पास दें तो मेरे पास तो कोई मिलिटरी नहीं है, न कोई पुलिस है, मेरा तो रवैया दूसरा है। मगर उसमें तो मैं अकेला हूँ, मेरा साथ कौन देगा ? जो हुकूमत आपकी है, जो सल्तनत आपकी है वह जब ऐसा मौका आयेगा तो जो कुछ कर सकती है सो करेगी। मैं तो एक ही बात कहता रहूँगा। मगर अहिंसा को अगर लोग नहीं समझते हैं तो मैं किसको सुनाऊँ ?

*

२६ सितम्बर, १६४७

सुनता हूँ कि मेरे भाषण में पाकिस्तान और यूनियन में लड़ाई की शक्यता के जिक्र से पश्चिम में शोर सा हो गया है। मैं नहीं जानता कि अखबार वालों ने बाहर क्या रिपोर्टें भेजी हैं। किसी बयान का सार बनाने में मानी बदल जाने का खतरा रहता है। १८६६ में दक्षिण अफ्रीका के बारे में मैंने हिन्दुस्तान में कुछ लिखा था। उसका छोटा सा सार दक्षिण अफ्रीका के अखबारों में छपा। नतीजे में मेरी तो जान ही जाने वाली थी। सार इतना गलत था कि मुझे मार-पीट करने के बाद २४ घण्टों के अन्दर वहाँ के गोरों का गुस्सा पश्चाताप में बदल गया। उन्हें अफसोस हुआ कि एक बेगुनाह आदमी पर उन्होंने बिना कारण जुल्म किया। यह कहानी याद करने का मेरा मतलब इतना ही है कि किसी पर जो उसने नहीं कहा था नहीं किया, उसकी जिम्मेदारी न डाली जाय।

मैं दृढ़ता से कहना चाहता हूँ कि मेरे किसी भाषण में से यह अर्थ नहीं निकाला जा सकता कि मैंने लड़ाई को उत्तेजन दिया है या लड़ाई को हिमायत की है। क्या लड़ाई का नाम लेना ही गुनाह है। गुजरात में एक वहम है कि अगर किसी घर में साँप का नाम लिया जाय तो चाहे किसी बच्चे के मुँह से ही वह क्यों न निकला हो, साँप निकल कर रहता है। मैं उम्मीद रखता हूँ कि हिन्दुस्तान के आम लोगों में लड़ाई के बारे में ऐसा कोई वहम नहीं है।

मेरा यह दावा है कि आज की परिस्थिति पर अच्छी तरह गौर करके और साफ-साफ कह कर कि किन हालात में लड़ाई हो सकती है, मैंने दोनों हिस्सों की सेवा की है। मेरे कहने का हेतु लड़ाई कराना नहीं था, जहाँ तक हो सके लड़ाई को रोकना था—मैंने यह बताने की कोशिश की है कि अगर लोगों ने पागलपन में

लूट-मार, आग लगाना, कत्ल करना वगैरह बन्द न किया, तो उसका अनिवार्य परिणाम लड़ाई होगा। एक में से एक निकलने वाली चीज़ों की तरफ़ ध्यान खींचने में क्या बुराई है ?

हिन्दुस्तान जानता है, और दुनिया को भी जानना चाहिए कि मैं अपनी पूरी ताकत से यह कोशिश कर रहा हूँ कि भाई-भाई का गला न काटे। अगर यह न रुके तो उसका परिणाम लड़ाई ही हो सकता है। जब एक ऐसा इन्सान जो अहिंसा को जिन्दगी का कानून मानता है लड़ाई का जिक्र करता है तो उसका हेतु लड़ाई को रोकना ही हो सकता है। मेरी उम्मीद है कि मेरे इन बुनियादी विचारों में मेरी मृत्यु तक फर्क नहीं आने वाला।

★

३० सितम्बर, १९४७

मेरा ऐसा ख्याल है कि हम तो हैवान बन गये हैं। आज हिन्दू और मुसलमान दोनों हैवान बन गये हैं। कौन किसको कहे कि किसने कम किया और किसने ज़्यादा किया? किसने कम मारा और किसने ज़्यादा मारा। उसमें हम नहीं जा सकते। हुकूमत को वहाँ से शरणार्थियों को बुलाने की चेष्टा करनी चाहिये। और वह ऐसा दूसरी हुकूमत से मिलकर ही कर सकती है। वे सब पेचीदगियाँ पड़ी है। पेचीदगियाँ तो हैं, लेकिन हुकूमत बनी है तो वह पेचीदगियाँ रफा करने के लिए है। हुकूमत के जो अपने मातहत रहते हैं उसे उनकी हिफाज़त करने का धर्म पालन करना है और नहीं तो हुकूमत छोड़ देना है। इसमें मुझे तनिक भी संदेह नहीं है। हमारी हुकूमत आज तो ऐसी ही है कि जिसको हम बना सकते हैं और उसको मिटा सकते हैं। इसका नाम डेमोक्रैसी है। लोगों को खुद ऐसा होना चाहिये कि जो काबू में रहते हैं, जो संयम में रहते हैं, नियमन क्या चीज़ है उसे जानते हैं, पालन करते हैं। ऐसा न करें तो पीछे वे निकम्मे बन जाते हैं। हमको अगर अपने धर्म पर कायम रहना है तो यह सीख लेना चाहिये। हमारे बच्चों को जब से समझ आ जाती है तब से उनको यह समझाना है। आप उनको ऐसी तालीम दें कि धर्म तुम्हारे दिल में है। उसकी रक्षा मैं नहीं कर सकता हूँ। मैं तो पिता हूँ। लेकिन पिता को अपने लड़कों को अपनी लड़कियों को सिखाना है। मैंने तो सिखाया है कि अपने धर्म की रक्षा खुद करो। मेरा लड़का एक जनूबी अफ्रीका में पड़ा है। एक कहीं शराब पीता है। कहाँ पड़ा है, मुझको पता भी नहीं है। एक बेचारा मुसीबत से अपनी रोटी कमा लेता है। वह नागपुर में पड़ा है। एक लड़का यहाँ पड़ा है। वह मुसीबत से कमाता है, ऐसा तो नहीं।

तो क्या इन सब के धर्म का ख्याल मैं करूँ ? मैं तो करता नहीं हूँ । और क्यों करूं ? वे बड़े हो गये हैं । अगर छोटे हों तो उनके धर्म की रक्षा मैं कर सकता हूँ । वह भी कैसे ? लड़के को सिखा दिया कि अगर सचमुच तेरा हिन्दू धर्म है तो तुझमें उसके लिए मरने की ताकत होनी चाहिये । मार कर तू नहीं बच सकता । मानो कि लड़का है उसके पास एक लाठी है । दूसरे के पास रिवाल्वर पड़ी है । तो रिवाल्वर वाला लाठी वाले को मार डालेगा । ऐसे धर्म की रक्षा नहीं हो सकती । क्यों नहीं हो सकती ? लाठी वाला लड़का मारा गया । उसका रिश्तेदार आया । रिवाल्वर वाला लड़का एक है । एक से दो नहीं बन सकता है । वह एक रिवाल्वर लाता है । या एक ब्रेनगन और स्टेनगन लाता है तो सामने के लोग १० स्टेनगन लावेंगे । उसको कहेंगे बोल इस्लाम में आता है या नहीं, या क्रिस्टी बनता है या नहीं, नहीं तो देख हम १० आदमी हैं । तेरे हाथ में जितने हथियार पड़े हैं वे सब बरबाद हो जायँगे । बोल, जल्दी कर नहीं तो हम तुझे शूट कर देंगे । तो वह डर के मारे कहेगा कि आप मुझे मजबूर करते हैं मगर मेरा धर्म तो ऐसा है कि वह अपनी देह से मुझे प्यारा है । धर्म का पालन करना उसके माने हैं कि हम ईश्वर के बनें । प्रह्लाद के साथ यही हुआ । वह तो राम का नाम लेता था । पिता ने कहा, तू राम का नाम लेता है, छोड़ दे इसे । तो वह कहता है कि मैं दूसरा नाम नहीं लूंगा । इस पर एक भजन है, कितना सुन्दर है । प्रह्लाद ने पाटी पर लिखा है रामनाम और गुरु लिखाता है दूसरा । तो कहता है कि मेरी पाटी पर राम का ही नाम लिखा जा सकता है दूसरा नाम मेरे पास नहीं है । वह बड़ा मीठा भजन है । प्रह्लाद कहता है कि राम नाम के सिवा उसकी कलम कुछ लिख ही नहीं सकती । कहा तो यह जाता है कि वह १२ वर्ष का लड़का था । १२ वर्ष के लड़के ने अपने बाप का सामना करके अपने धर्म की रक्षा की । कैसे धर्म की रक्षा की उसको छोड़ता हूँ । उसे सब हिन्दू जानते हैं । लेकिन बात यह है कि प्रह्लाद अपने धर्म की रक्षा अपने आप कर सका । ऐसे हज़ारों दृष्टान्त हर मज़हब में पड़े हैं । तो हमारे लड़के-लड़कियाँ हैं । कोई लड़की को ऐसा मानकर बैठे कि वह हमेशा के लिए अबला है तो मैं कहता हूँ कि जगत् में कोई अबला है ही नहीं, सब सबला हैं । जिसके दिल में अपने धर्म की चोट पड़ी है वे सब सबल हैं, वे दुर्बल नहीं हैं । इसलिए मैं कहूँगा कि हम पहली तालीम अपने लड़के-लड़कियों को यह दें कि वे अबल नहीं हैं । बच्चे का धर्म बच्चे के पास है । हमारे भाई जब आते हैं, मैं उनको कहता हूँ कि हुकूमत जितना कर सकती है करे । लेकिन अगर आप ऐसा मानते होंगे कि हुकूमत कुछ न करे तो सब के सब इस्लाम

में चले जायँगे, तो यह खराब बात है। हिन्दुस्तान में आज करोड़ों मुसलमान हैं। यह बहुत सोचने की चीज़ है। वे हैं कौन? वे कोई अरबिस्तान से नहीं आये। अरबिस्तान से जो आये वे करोड़ों की तादाद में नहीं थे। करोड़ों की तादाद में जो मुसलमान बने वे सब के सब, हिन्दू थे। या कहो कि वे बुद्धिस्ट थे। तो बुद्धिस्ट और हिन्दू में फ़र्क क्या पड़ा है? मेरे पास तो कोई फ़र्क है नहीं। अफगानिस्तान में कौन थे, उसका तो सबको पूरा पता होना चाहिये या नहीं? बादशाह खान ने मुझ से कहा कि हम तो पहले बौद्ध थे, पीछे इस्लाम में आये। इसलिए जो हमारी पुरानी सभ्यता थी उसे हम भूल थोड़े ही गये हैं। उसे भूल कैसे सकते हैं? उन्होंने बताया कि हमारे जो देहात पड़े हैं उनके नाम भी पहले संस्कृत में थे। अब हमने उनका नाम बदल दिया है। यह सब किया। लिबास बदला। सब कुछ बदला। लेकिन जो चीज़ हम में पड़ी थी उसको हम नहीं बदल सकते हैं। उसे कैसे भूल सकते हैं? और पीछे यहाँ मद्रास में, बंगाल में क्या, सब जगह, जिधर जाओ वहाँ, सब के सब आपके हिन्दू पड़े थे। आप पूछो, जैसा कि मैं अपने दिल को पूछता हूँ, वे खुद इस्लाम में आये, क्यों आये? वे इस्लाम में आये उसके लिये गुनाहगार मैं। प्रायश्चित आपको करना है, मुझको करना है। हाँ, अगर उन्होंने अच्छा काम किया और हिन्दू धर्म से भी बुलन्द धर्म ले लिया तो पीछे हम भी उसके साथ चलें और सब कलमा पढ़ें इस्लाम का नाम लें और इस्लाम का जयघोष करें। लेकिन ऐसा हुआ तो नहीं। तो आज हम किस से मारपीट करेंगे? किसको यहाँ से निकाल देंगे? वे हमारे ही लोग हैं। हमारे ही दादा परदादा के वक्त चार पीढी कहो, पाँच पीढ़ी कहो; छः पीढ़ी पहले कहो, लेकिन ये हमारे लोग थे। वे सब हिन्दू थे और मुसलमान बने। मैंने हिन्दू धर्मियों को सारे हिन्दुस्तान में घूम कर बताया है कि याद रखो आप लोगों में बड़ी दुष्टता है। आपने अस्पृश्यता को धर्म का हिस्सा मान लिया है। उसका नतीजा क्या हुआ? एक हिस्सा हमारा पंचम वर्ण बन गया। वर्ण चार। हमने पाँच बनाये और वह पाँचवाँ अति शूद्र कहा जाता है। वे हम से बाहर रहे। उसका खाना भी अलग। हमारे बीच में नहीं रह सकते उन्हें तो हमारा गुलाम रहना चाहिए। उसमें से पीछे वे मुसलमान बने। तो सब ऐसे नहीं थे। पीछे तो काफी ब्राह्मण भी मुसलमान बने। काफी तादाद में क्षत्रिय भी बने और वैश्य भी बने। लेकिन वे थोड़ी-थोड़ी तादाद में ही बने आज करोड़ों की तादाद में जो मुसलमान बन गये हैं, उसका हिसाब तो यह है जो मैंने बताया। वे अस्पृश्यता में से मुसलमान बने। आज हम कितना तूफान हिन्दुस्तान में करते

हैं और कहते हैं कि मुसलमानों को यहाँ से मारपीट कर, किसी न किसी तरह से उनको रंज पहुँचा कर, हटा दें। कहाँ हटायें किस जगह से हटायें इसका कोई ख्याल तक नहीं करता। हमको सोचना चाहिये जब हम पर कोई हमला करता है और कहता है कि तू इस्लाम में आ, पीछे हमारा खात्मा हो जाता है। मैं मानता हूँ कि इस्लाम ने जबर्दस्ती मुसलमान बनाना कभी नहीं सिखाया। मैं तो मुसलमानों के साथ बैठने वाला हूँ मेरे जो दोस्त हैं वे कहते हैं कि इस्लाम कभी नहीं सिखलाता है कि किसी पर जुल्म करके उसको इस्लाम में लाना। वह अपने आप आना चाहते हैं तो आयें। उसके पास इस्लाम की खूबियाँ रक्खो। लेकिन यह नहीं कि फुसलाकर, धोखा देकर, पैसा देकर या जाल से इस्लाम में लाना। लेकिन हमारे जो मुसलमान पड़े हैं वे हमारे सगे भाई हैं। इसलिए मैं कहूँगा कि हम सोच-विचार कर काम करें। हम सोचें वे लोग क्यों इस्लाम में गये? पैसे के लिए। अरे, पैसा कमाना है, कुछ भी करना है, जाओ, कहीं भी दुनियाँ में, लेकिन अपने धर्म को साथ लेकर जाओ। अगर वह छोड़ देते हैं तो आपने सब कुछ छोड़ दिया। मैं तो आप से एक ही बात कहना चाहता हूँ। हम किसी मुसलमान को मारने की चेष्टा न करें। मुसलमान मारें तो मारें। मारें तो वह बुरा है। उसको हम बुरा मानेंगे लेकिन अगर वह बुरा है तो हम उसके बुरे का बदला बुराई से कैसे दें। बुराई का बदला भलाई से दे सकते हैं। वह शराब पीता है तो हम शराब पीयें? रंडीबाज़ी करता है तो रंडीबाज़ी करें? वह जुवा खेलता है तो हम जुवा खेलें? एक आदमी तलवार चलाता है तो हम भी तलवार चलायें और बच्चों को मार जाता है तो हम भी बच्चों को मार डालें? वह अगर लड़कियों को ले जाता है तो हम उसकी लड़की को ले जायँ? तो उसमें और हम में फ़र्क क्या हुआ? मैं तो कोई फ़र्क नहीं पाता हूँ। मैं तो कहता हूँ "ऐ मुसलमान, हिन्दू और सिक्ख कुछ समझो तो सही, मज़हब क्या सिखाता है?" इकबाल ने कहा—"मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर करना।" इकबाल ने ऐसा कहा, उस वक्त वह लन्दन में रहता था। वह बड़ा कवि था। उस वक्त वह राउण्ड टेबुल कांफ्रेंस में आया हुआ था। वहाँ उसके लिए सब ने एक खाना किया तो मुझको भी बुलाया गया। मैं चला गया। उसने कहा कि मैं तो ब्राह्मण हूँ। क्यों ब्राह्मण हूँ? क्योंकि मेरे बापदादे ब्राह्मण थे। कहाँ के? काशमीर के। मैं तो काशमीर का हूँ। ब्राह्मण हूँ और अब मैं इस्लाम में आया हूँ। अभी नहीं बहुत पीछे हम इस्लाम में आये। तो भी हम में ब्राह्मण खून पड़ा है। और इस्लाम का तमद्दुन हमारे में पड़ा है। तो इकबाल ने कहा—

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना।" पीछे उसने दूसरा तीसरा भी लिखा है। वह दूसरी बात है। इकबाल तो चले गये, लेकिन हम इतना तो सीख लें कि हमको हमारा धर्म नहीं सिखाता है कि हम किसी से बैर करें। इसलिए मैं कहूँगा कि हम इन्सान बनें। इन्सान बनें तो हम हिन्दुस्तान को ऊँचा ले जाते हैं। आज तो हम हिन्दुस्तान को गिरा रहे हैं। ईश्वर करे कि हम हिन्दुस्तान को कभी गिरायें नहीं।

प्रकाशक :

पब्लिकेशन्स डिवीजन, मिनिस्ट्री आफ़ इन्फार्मेशन ऐण्ड ब्राडकास्टिंग
गवर्नमेंट आफ इण्डिया

★

मुद्रक : यूनाइटेड प्रेस, दिल्ली

प्रार्थना-सभाओं में गांधी जी के भाषण

दिल्ली, १-१०-४७ से ७-१०-४७ तक

* *

अंक ३

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
मिनिस्ट्री आफ़ इन्फार्मेशन ऐण्ड ब्राडकास्टिंग
गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया

*

मूल्य—चार आने

भूमिका

महात्मा गान्धी की दिल्ली की प्रार्थना-सभाओं में दिये गये ७ भाषणों की पहली और ८ भाषणों की दूसरी किस्त हम जनता के सामने उपस्थित कर चुके हैं। ७ भाषणों की यह तीसरी किस्त है। इसी प्रकार महात्मा जी के भाषणों के और भी संग्रह क्रमशः निकालने का प्रबन्ध किया गया है।

महात्मा जी के सन्देश की जनता को कितनी आवश्यकता है यह कहने की बात नहीं। वातावरण को शान्त करने तथा जनता के हृदय में सद्भावना स्थापित करने में ये भाषण निश्चय ही सहायक सिद्ध होंगे।

* *

१ अक्टूबर, १९४७

एक बहिन ने मुझको कल खत लिखा है। उसमें वह लिखती है कि मैं कुछ सेवा करना चाहती हूँ और मेरे पतिदेव भी कुछ सेवा करना चाहते हैं। लेकिन हमको कोई बताता नहीं है कि क्या करें। यह प्रश्न बहुत लोग करते हैं लेकिन मैंने ऐसे प्रश्नों का एक ही जवाब दिया है कि हुकूमत का क्षेत्र, सरकार का क्षेत्र, वह तो छोटा रहता है लेकिन सेवा का क्षेत्र बहुत बड़ा रहता है। इतने दुखी और पीड़ित भूखे और नंगे हैं। लम्बा-चौड़ा सेवा का क्षेत्र पड़ा है। इसमें किसी को पूछने की गुंजाइश ही नहीं रहती है। जो सेवा करना चाहता है वह करे। लेकिन हम ऐसे पंगु बन गये हैं कि हमको किसी को पूछना पड़ता है। तो मैं बता दूँ क्या करें। आखिर में देहली स्वच्छता के लिए कितनी मशहूर है? उसमें इतने कैम्प पड़े हैं और उनमें कितनी स्वच्छता है, वह मैं जानता हूँ। लोग वहाँ बीमार हो जाते हैं। यहाँ जितने शिविर पड़े हैं उनमें इतनी गन्दगी भरी रहती है कि उसका बयान करना बड़ी मुसीबत का काम है। जहाँ खून-खराबा हो गया है वहाँ भी बस ऐसा ही पड़ा है। दिल्ली की म्यूनिसपैलटी कभी भी सफ़ाई के लिये मशहूर नहीं रही। देहली शहर की म्यूनिसपैलटी ने शहर को साफ़-सुथरा कभी रखा हो और दुनिया में से लोग आकर देहली देखें और कहें कि अगर कोई स्वच्छ शहर देखना चाहे तो देहली देखे, ऐसी तो बात नहीं है। सफ़ाई हो तो लोगों के मकान साफ़ हों, लोगों के पाखाने साफ़ हों। लोगों के बैठने का, सोने का स्थान साफ़ हो। ऐसे ही लोगों के दिल भी साफ़ हों। तो अगर दूसरा काम न मिल सके तो मैं कहूँगा कि इतना काम तो है ही। यह हो सकता है कि वह कैम्पों में न जा सकें तो और भी जगहें हैं, कहीं भी हम पूरी सफ़ाई रखें तो उसका असर सारे दिल्ली के शहर पर पड़ता

है। ऐसा मान कर हर एक आदमी अपने मकान को, और अपने दिल को, आत्मा को साफ ही रखे। उसका नतीजा मुझे बताने की जरूरत नहीं। मैं तो उस बहिन को कहता हूँ कि अगर वह सचमुच सेवा करना चाहती हैं, सेवा भाव से, नाम के लिए नहीं, तो सेवा करने के लिए आपके लिए बहुत बड़ा क्षेत्र दिल्ली में पड़ा है। उसको मुझे कुछ भी बतलाने की आवश्यकता नहीं और अगर यह कर सकें, दिल्ली वासियों के दिल साफ हो जायँ यहाँ जितने आश्रित लोग आते हैं वह भी साफ हो सकें तो वह तो एक बहुत बुलन्द काम होगा और वे आदर्श दम्पत्ति बन जायंगे। दूसरे उनकी नकल करेंगे।

अभी मेरे पास दो तार आये हैं। एक लिखता है कि हमको तो ऐसा लगता था कि हिन्दुस्तान के लोग बहुत अच्छे हैं और वहाँ हिन्दू मुसलमान सब मिले-जुले ही रहते हैं। यह तार मुसलमान भाई का है। अब हिन्दुस्तान में क्या हो गया है कि हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के साथ बैठ भी नहीं सकते, एक दूसरे के साथ झगड़ते हैं, एक दूसरे को काटते हैं और जंगली पशु से बन गये हैं। दिल्ली को लें। दिल्ली के हिन्दू, सिक्ख, मुसलमानों को अपनाना चाहते हैं, और उनको भाई बना कर रखना चाहते हैं बशर्ते कि वे अपनी वफादारी यूनियन के प्रति सच्चे दिल से जाहिर कर दें। जो यूनियन में रहना चाहते हैं, मैं हूँ, या आप हैं या कोई भी, ऐसा तो सबको करना ही चाहिये। यह मुसलमानों के लिए खास नहीं है, सब के लिए है और जरूरी है। फिर मुसलमानों के पास काफी हथियार पड़े हैं बहुत से मिल गये है लेकिन सब नहीं आये। पुलिस के जरिये तहकीकात चल रही है लेकिन पुलिस के जरिये से सब तो आ नहीं सकते हैं। तो वे अगर साफ दिल हैं और हिन्दुस्तान के साथ लड़ना नहीं चाहते तो वे हिन्दुस्तान के वफादार बनें। कोई मुसलमान ताकत हो और हिन्दुस्तान पर हमला करे तो उससे भी लड़ना चाहिये। यह ठीक है कि अगर उन्हें हिन्दुस्तान के साथ लड़ना नहीं है, तो उन्हें हथियारों की क्या जरूरत है। हमारे यहाँ क्रिस्टी बहुत थोड़े हैं। लेकिन अगर किसी क्रिस्टी मुल्क के साथ, जर्मन के साथ लड़ाई छिड़ गई तो उन्हें उसके साथ हमारी ओर से लड़ना होगा और यूनियन का वफादार रहना होगा। यह तो ठीक है कि अगर मुसलमान वफादार हैं, उनको हिन्दुस्तान से लड़ना नहीं है तो फिर हथियारों की जरूरत क्या है? उनको हथियार अपने आप दे देना चाहिये। यह तो सब ठीक है लेकिन जिस तरह वह बात कही गई उसमें जहर भरा था। आज तो शायद ४० हजार या इससे ज्यादा

मुसलमान कैम्पों में पड़े हैं उनको दिल्ली में से हमने निकाल दिया है। कुछ को कत्ल कर दिया है। कैसा ही बहादुर आदमी हो लेकिन मौत तो कोई पसन्द नहीं करता। कोई तिजारत करना चाहता है, कोई और कुछ करना चाहता है, वह सोचते हैं, चलो जिन्दा तो रहेंगे। यहाँ से भाग-भाग कर कहाँ जायें? सो उन्होंने पनाह ले ली है पुराने किले में, और हुमायूँ की कब्र के नजदीक जो बगीचा है उसमें। उन पर पानी आता है, सब कुछ होता है। पूरी डाक्टरी मदद नहीं मिल सकती है। यह डाक्टर नैयर मुझको वहां की हालत सुनाती हैं। चार घण्टे रोज उनको देती हैं। वहाँ काफी गर्भवती पड़ी हैं। उनके बच्चे पैदा कराने हैं। उसके लिए नर्सें चाहियें, कुछ दवा भी चाहिये। सब कुछ चाहिये। वह सब आहिस्ते-आहिस्ते होता है। वे ऐसी हालत में पड़े हैं तो क्यों पड़े हैं? हिन्दू कहते हैं कि हमने उन्हें निकाल दिया है। उसमें हमने कोई गुनाह नहीं किया। लोग कहते हैं कि उन्हें हम वापिस भी ला सकते हैं, कब, जब वे देश के लिए वफादार हो जायँ। मैं कहता हूँ कि उनको तभी वापिस लाया जा सकता है जब उनके दिल साफ हो जायँ। मान लो वे वफादार भी नहीं रहे। मान लो कि वे असला भी नहीं देते, क्या इसीलिए हम मुसलमानों को मारें काटें? चार करोड़ या साढ़े चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं अगर उसमें एक करोड़ या एक लाख भी कहो, वह अपने घरों में छुपा कर असला रखते हैं तो आपकी मिलिटरी है, पुलिस है, वह सब उनको घर से बाहर ला नहीं सकती? आज पुलिस अंग्रेजों के जमाने की नहीं है। अगर हम मुसलमानों को मारें, उनके बच्चों को काटें, बहिनों को काटें, तो उसका नतीजा क्या होगा? यह आप देख लें। मैंने कहा है कि हम गिर गये हैं। जब १५ अगस्त को आजादी का दिन मनाया गया, हम आजाद बन गये, तब दो-चार दिन के लिए तो सब भाई-भाई होकर रहे, तो उस वक्त कोई असला के लिए कुछ नहीं कहता था। उस वक्त वफादारी की भी बात नहीं थी। सब बिलकुल ठीक था, आज सब भूल गये हैं कि वे भाई हैं। वे हमें, आपको मारते हैं, उसमें गुनहगार तो मुस्लिम लीग थी। दिल में गुस्सा भरा था। लेकिन आजादी का एक तेज आ गया और घड़ी भर हम भूल गये कि वे कभी दुश्मन थे। यह नज़ारा मैंने कलकत्ते में देखा। सारे हिन्दुस्तान भर में ऐसा हो गया। लेकिन बाद में वह गुस्सा निकल आया और उन्होंने कहा कि अब तो हिन्दुओं-सिक्खों को काटना चाहिये। काटो, निकाल दो। तो अब हम क्या करें। हम और आप मुसल-मानों के साथ शर्त करें? हम करें भी तो वह काम हमारा नहीं है। लेकिन हमारे नाम से, हमारे लिए, जो हमारे नुमाइन्दे हुकूमत चला रहे हैं उनको करना है। वे

नहीं करते तो ऐसा भी नहीं है। आप देख लें। वे कोशिश कर रहे हैं और थोड़ा बहुत असला ले भी लिया है। ऊँचे पहुँच कर हम एकदम नीचे गिर गये और रोजबरोज गिरते जा रहे हैं। मैंने कहा है कि दोनों शर्तें भले कायम रखो लेकिन इसके साथ एक और शर्त भी लगा दो तो पीछे आप आराम से काम कर सकते हैं। वह शर्त यह है कि हम कानून अपने हाथों में नहीं लेंगे। उन्हें सजा करना हमारा काम नहीं था। हम कबूल करते हैं कि हम बेवकूफ़ बने। मैं मानता हूँ कि मुस्लिम लीग ने पहिले बेवकूफ़ी की लेकिन एक आदमी घोड़े की सवारी करता है और दूसरा भी सवारी करता है तो पहिला आदमी घोड़े पर से किसी कारण से गिर जाता है, तो क्या जो दूसरा घुड़सवार है वह भी गिर जाय ? पीछे दोनों का नाश हो जाता है। हमें इस तरह उनका मुकाबला क्या करना था ? हम मुकाबला करेंगे किस चीज़ में ? जैसा कि मैंने बतलाया है, जितना ज़्यादा भलापन उनमें है उससे ज़्यादा हम लायें। लेकिन जितनी दुष्टता उनमें है, उतनी ही दुष्टता हम करेंगे ऐसा मुकाबला करें तो हम दोनों गिरते हैं। वे बुराई करते हैं तो इस चीज़ को हमारी हुकूमत दुरुस्त करेगी। हमारी हुकूमत देख लेगी कि हमारा कोई भी आदमी पाकिस्तान में पड़ा है, हिन्दू हो, सिख या क्रिस्टी हो, वह वहाँ माइनारिटी में है और उसकी देखभाल अगर पूरी तरह नहीं होती है, उनको वहाँ काटते हैं, उनकी लड़कियों को उठा ले जाते हैं, उनकी जायदाद ले लेते हैं और उन्हें ज़बर्दस्ती से इस्लाम में लाते हैं तो उसका जवाब हमारी हुकूमत देगी। हम कौन जवाब देने वाले हैं ? जवाब देने की कोशिश करके हम जाहिल बन जाते हैं। हम कभी जाहिल नहीं बनेंगे। यह आज़ादी की बड़ी भारी निशानी है। उस में हम बिलकुल नापास साबित हुए हैं। उसका नतीजा क्या हुआ ? मेरे दिल में आता है कि हम में से जो सचमुच कातिल बने हैं, वे कौन हैं यह तो मैं जानता नहीं हूँ, लेकिन हैं तो सही और वे तजवीज़ से काम कर रहे हैं, कि आज इतना खून करें, आज इतने घर जला दें, इतने मकान खाली करवा दें। वे करने वाले कहाँ हैं, यह मैं जानता नहीं। लेकिन ऐसा होता है तो हम तो गिरते ही हैं। इसलिए हमको कबूल कर लेना है कि यह हमारी बेवकूफ़ी है। उस बेवकूफ़ी को हम निकाल देंगे और पीछे जितने पड़े हैं उनको लायेंगे। सल्तनत को और हुकूमत को यह देखना है कि जितने लोगों को पाकिस्तान में ईज़ा हुई है, जितने तबाह कर दिये गये हैं उन सब को पाकिस्तान मिन्नत करके बुलावे और जिनकी जायदाद लाहौर में है, वह जायदाद उनको वापिस मिले। उनके मकान जो ले लिये गये हैं उनको वापस देना है। कितने बुलन्द मकानात मैंने

देखे हैं। लड़कियों की कितनी तालीमगाह वहाँ है। तालीम का जो इन्तज़ाम लाहौर में रहा, वह हिन्दुस्तान में किसी जगह पर नहीं रहा। लाहौर तालीम के बारे में पहिले दर्जे पर था, वह लाहौर आज कहाँ है? लाहौर को, वहां की संस्थाओं को, बनाने में लाहौर की हुकूमत ने हिस्सा नहीं लिया है, पैसा नहीं दिया है। पंजाब के लोग तगड़े हैं, बड़ी तिजारत करने वाले हैं, पैसा पैदा कर लेते हैं। बड़े-बड़े बैंकर पड़े हैं। वे लोग जैसा पैसा पैदा करने में होशियार हैं वैसे पैसा ख़र्च करने में हैं। मैंने यह सब आँखों से देखा है। उन्होंने इतने मकानात बनाये। इतने कालेज औरतों और मर्दों के लिए रक्खे और पीछे ऐसे आलीशान अस्पताल बनाये, वे सब उनको वापस करना चाहिये। ६० मील लम्बा कारवाँ आ रहा है, बेहाल पड़ा है। हुकूमत के हाथ में अगर हम अपने दुःख का बदला लेना छोड़ देते तो हम जाहिल नहीं बनते। यह मैंने बतलाया। मेरे पास विदेश से मुसलमान भाई का तार आया है। लोग ऐसे क्यों बन गए हैं? भाई-भाई बनें। हम तो मुसलमान हैं मगर हम नहीं चाहते हैं कि आपस में लड़ें। इस्लाम ऐसा नहीं सिखाता। मैंने कहा ही है कि आप लोग जागें इतना मैं कह दूँ। आप मेरी न मानें तो न मानें। मगर मैं ऐसी चीज़ों का गवाह तो नहीं बनना चाहता हूँ। मैं यह गिरावट देखना नहीं चाहता हूँ। मेरी तो यही ईश्वर से प्रार्थना है कि मुझे इससे पहिले उठा लें। अगर हालत न सुधरी तो मेरे दिल में ऐसा अंगार पैदा हो जायगा, कि मुझे भस्म कर डालेगा। मेरा दिल कहता तू यह देखकर क्या करेगा। हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए तूने अपनी जान कुरबान करने की कोशिश की, जान तो नहीं गई लेकिन आज़ादी तो मिल गई। लेकिन आज़ादी के साथ-साथ तू यह नतीजा देखने के लिए जिन्दा रहकर क्या करेगा? तो मेरी तो दिन रात ईश्वर से यह प्रार्थना रहती है कि मुझको तू यहाँ से जल्दी उठा ले। या मेरे हाथ में एक बालटी रख दे ताकि उस के मार्फत इस अंगार को बुझा दूँ।

यहाँ एक अस्पताल है। अस्पताल में बहुत से घायल मुसलमान पड़े हैं, सब मुसलमान नहीं हैं थोड़े हिन्दू भी पड़े हैं। उनको घायल और कत्ल करने की किसी ने कोशिश की। ऐसी कोई पार्टी पड़ी है, देहात से आई है। उन्होंने बिल्कुल एक छापा मारा, दरवाज़े से नहीं, लेकिन छोटी-छोटी खिड़कियाँ रहती हैं उसमें से भीतर घुसे। और चार या पाँच मरीजों को कत्ल करके भागे। इससे ज़्यादा कोई जहालत की वहशियाना बात मैं नहीं जानता। किसी लड़ाई में भी ऐसा नहीं होता। लड़ाइयों में काफी अस्पतालों में गोलियाँ चली हैं लेकिन इस तरह से तो कभी नहीं हुआ।

और एक बात सुनाता हूँ। ट्रेन आती है तो उसमें पाँच आदमी एक आदमी को खिड़की में से फेंक देते हैं जैसे सामान फेंक दिया। तो वह तो मर ही जायगा। यह आजकल की बात है और, अस्पताल का किस्सा वह कल की बात है या परसों की होगी। इसमें शर्मिन्दा होना किस को है ? सिर झुकाना किस को है ? आपको, मुझको। जितने हम पड़े हैं, हिन्दू उनको। पीछे ऐसा कहते हैं कि मुसलमान भी ऐसे हैं। मैं वह समझता हूँ। वहाँ पश्चिम पंजाब में जो होता है उसका जवाब हुकूमत मांगे।

★

२ अक्टूबर, १९४७

आज एक सिक्ख भाई मेरे पास आये थे। उन्होंने कहा कि मुझसे किसी ने पूछा कि आप ने गुरु अर्जुनदेव की वाणी तो सुनाई परन्तु १० वें गुरु गोविन्दसिंह जी ने उसमें तबदीली करदी, इस बारे में आप क्या कहोगे। इतिहास सिखाया जाता है, कि गुरु गोविन्दसिंह तो मुसलमानों के दुश्मन की हैसियत से पैदा हुए। लेकिन ऐसा मानने का कोई सबब नहीं, क्योंकि १० वें गुरु साहब ने करीब करीब वही कहा है जो गुरु अर्जुन देव ने कहा था। गुरु नानक की तो बात ही क्या ? वह तो कहते हैं कि मेरे नजदीक हिन्दू, मुसलमान सिक्ख में कोई अन्तर नहीं है। कोई पूजा करे, कोई नमाज़ पढ़े, सब एक है। एक ब्राह्मण पूजा करता है, तो दूसरे धर्म वाला भगवान् को कोसता है, ऐसा नहीं। मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। पूजा और नमाज़ दोनों एक ही चीज़ हैं। मानुस सब एक हैं, वाणी दूसरी दूसरी है। गुरु गोविन्द सिंह ने कहा है कि मानुस सब एक है और एक ही के अनेक प्रभाव हैं तो पीछे मैं माने लेता हूँ कि हम सब एक हैं अनेक हैं। और देखने में तो अनेक भेष हैं लेकिन वैसे सब एक हैं। व्यक्ति तो करोड़ों हैं लेकिन स्वभाव से एक हैं। गुरु गोविन्द सिंह ने कहा है "एकै कान, एकै देह, एकै बैन है।" पीछे कहा "देवता कहो, अदेव कहो, यक्ष कहो, गन्धर्व कहो, तुर्क कहो" वह सब न्यारे न्यारे हैं, वहीं गुरु गोविन्दसिंह जी कहते हैं—"देखत तो अनेक भेष हैं, उसका प्रभाव एक है" बैन के माने वाणी है वाणी तो एक है, जबान एक है। और आतिश वह एक है। क्या मुसलमान के यहां एक सूरज है और हम और आप लोगों के लिए कोई दूसरा सूरज है, वह तो सब के लिए एक ही है। वह कहते हैं आब, पानी भी एक है। गंगा बहती है तो गंगा नहीं कहती है कि सफल्दार कोई

तुर्क हो तो मेरा जल नहीं पी सकता है, बादलों में से जल आता है तब बादल नहीं कहते हैं कि मैं आता हूँ पर मुसलमानों के लिए नहीं, पारसियों के लिए नहीं, मैं तो सिर्फ हिन्दुओं के लिए हूँ। यूनियन सरकार हिन्दुओं के ही लिए हो, ऐसा नहीं यह हो नहीं सकता। कुरान कहो, गीता कहो, पुराण कहो, सब एक ही हैं, लेकिन लिबास अलग अलग पहना दिया है। अरबी ज़बान में लिखो तो पीछे उसको कहो कुरान है, नागरी लिपि में लिखो, संस्कृत में लिखो, मगर समझकर पढ़ो तो चीज़ एक ही है। तो वह कहते हैं कि सब एक हैं और ऐसा कहकर खत्म करते हैं। गुरु गोविन्दसिंह ने यह सिखाया है। मैंने पूछा कि पंडित जी अगर गुरु गोविन्द सिंह जी ने आप कहते हैं वैसे किया भी हो तो वह गलत बात थी। जब लड़ाई होती थी तो हिन्दू-मुसलमान लड़ाई में मरते थे, घायल भी होते थे और ज़खमी भी लेकिन जो ज़िन्दा होते थे उनको गुरू साहिब का एक समझदार शिष्य पानी देने का काम करता था। उसने मुसलमानों को भी पानी पिलाया, हिन्दुओं को भी और सिक्खों को भी। उसने कहा मुझको गुरु महाराज ने ऐसा ही सिखाया है कि तेरे नजदीक न कोई मुसलमान है, न कोई सिक्ख है, न कोई हिन्दू है, सब के सब इन्सान हैं और जिसको पानी की हाजत हो तो उसको पानी देना है। वह ऐसा थोड़े ही कहते थे कि अगर कोई हिन्दू ज़खमी हो गया है तो मरहम-पट्टी लगा दें लेकिन अगर कोई मुसलमान ज़खमी पड़ा है तो उसको वैसे ही छोड़ दो। उन्होंने पूछा लेकिन गुरु जी तो मुसलमानों के साथ लड़े थे, तो लड़े तो सही लेकिन उन मुसलमानों के साथ लड़े जिन्होंने इन्सानियत और इन्साफ़ के रास्ते को छोड़ दिया था। जिन्होंने अपने मज़हब को छोड़ दिया था। वह दानी पुरुष थे, निर्लिप्त थे, अवतारी पुरुष थे, उनके लिए मेरे तेरे का सवाल नहीं था, लेकिन हां, वह अपनी रक्षा तो करते थे, लडाई करते थे, इसमें कोई शक नहीं। सिक्ख दावा करे कि नहीं हम तो अहिंसक हैं तो वह तो गलत बात होगी। वह कृपाण रखते हैं। लेकिन गुरु जी ने सिखाया कि कृपाण रक्षा के लिए है, वह कृपाण तो मासूम की रक्षा के लिए है। जो दूसरों को तंग करता है उस जालिम के साथ लड़ने के लिए वह कृपाण है। कृपाण बूढी औरतों को काटने के लिए नहीं है, बच्चों को काटने के लिए नहीं है, औरतों को काटने के लिए नहीं है। जो निर्दोष बेगुनाह आदमी हैं उनको काटने के लिए नहीं है। कृपाण का तो वह काम नहीं है। जो गुनहगार है और जिस पर इल्जाम साबित हो गया है कि यह गुनहगार है, पीछे वह मुसलमान हो,

कोई भी हो सिक्ख भी क्यों न हो उसके पेट में वह कृपाण चली जायगी। आप लोग कृपाण जिस तरीके से आज खोलते हैं वह तो जहालत की बातें है। ऐसे लोगों के पास से कृपाण छीनी जाय तो कोई गुनाह नहीं माना जायगा क्योंकि इन्होंने धर्म तो छोड़ दिया है। सिक्ख ने कृपाण का दुरुपयोग किया है।

आज तो मेरी जन्मतिथि है। मैं तो कोई अपनी जन्मतिथि इस तरह से मनाता नहीं हूँ। मैं तो कहता हूँ कि फाका करो, चर्खा चलाओ, ईश्वर का भजन करो, यही जन्मतिथि मनाने का मेरे ख्याल में सच्चा तरीका है। मेरे लिए तो आज यह मातम मनाने का दिन है। मैं आजतक जिन्दा पड़ा हूँ। इस पर मुझको खुद आश्चर्य होता है, शर्म लगती है, मैं वही शख्श हूँ कि जिसकी जबान से एक चीज़ निकलती थी कि ऐसा करो, तो करोड़ों उस को मानते थे। पर आज तो मेरी कोई सुनता ही नहीं है। मैं कहूँ कि तुम ऐसा करो। "नहीं, ऐसा नहीं करेंगे" ऐसा कहते हैं। "हम तो बस हिन्दुस्तान में हिन्दू ही रहने देंगे और बाकी किसी को पीछे रहने की जरूरत नहीं है।" आज तो ठीक है कि मुसलमानों को मार डालेंगे, कल पीछे क्या करोगे। पारसी का क्या होगा और क्रिस्टी का क्या होगा और पीछे कहो अंग्रेजों का क्या होगा, क्योंकि वह भी तो क्रिस्टी हैं। आखिर वह भी क्राइस्ट को मानते हैं, वह हिन्दू थोड़े हैं, आज तो हमारे पास ऐसे मुसलमान पड़े हैं जो हमारे ही हैं, आज उनको भी मारने के लिए 'हम तैयार हो जाते हैं तो मैं यह कहूँगा कि मैं तो ऐसे बना नहीं हूँ। जब से हिन्दुस्तान आया हूँ मैंने तो वही पेशा किया कि जिससे हिन्दू-मुसलमान सब एक बन जायं। धर्म से एक नहीं लेकिन सब मिलकर भाई-भाई होकर रहने लगें। लेकिन आज तो हम एक दूसरे को दुश्मन की नज़र से देखते हैं। कोई मुसलमान कैसा भी शरीफ हो तो हम ऐसा समझते हैं कि कोई मुसलमान शरीफ हो ही नहीं सकता। वह तो हमेशा नालायक ही रहता है। ऐसी हालत में हिन्दुस्तान में मेरे लिए जगह कहाँ है और मैं उस में जिन्दा रह कर क्या करूंगा? आज मेरे से १२५ वर्ष की बात छूट गयी है। १०० वर्ष की भी छूट गयी है और ९० वर्ष की भी। आज मैं ७९ वर्ष में तो पहुँच जाता हूँ लेकिन वह भी मुझको चुभता है। मैं तो आप लोगों को, जो मुझको समझते हैं और मुझको समझने वाले काफी पड़े हैं, कहूँगा कि हम यह हैवानियत छोड़ दें। मुझे इसकी परवाह नहीं कि पाकिस्तान में मुसलमान क्या करते हैं, मुसलमान वहाँ हिन्दुओं को मार डालें, उससे वे बड़े होते हैं, ऐसा नहीं, वह तो जाहिल हो जाते हैं। हैवान हो जाते हैं तो क्या मैं उसका मुकाबला करूँ? हैवान

बन जाऊँ, पशु बन जाऊँ, जड़ बन जाऊँ ? मैं तो ऐसा करने से साफ़ इन्कार करूँगा और मैं आप से भी कहूँगा कि आप भी साफ़ इन्कार करें। अगर आप सचमुच मेरी जन्मतिथि को मनाने वाले हैं तो आपका तो धर्म यह हो जाता है कि अब से हम किसी को दीवाना बनने नहीं देंगे, हमारे दिल में अगर कोई गुस्सा हो तो हम उसको निकाल देंगे। मैं तो लोगों से कहूँगा भाई आप कानून को अपने हाथ में न लें, हुकूमत को इसका फैसला करने दें। इतनी चीज़ आप याद रख सकें तो मैं समझूँगा कि आपने काम ठीक किया है। बस इतना ही मैं आप से कहना चाहता हूँ।

*

३ अक्टूबर, १९४७

मैं देख रहा हूँ कि हमारे मुल्क में काफी जगह पर आज सत्याग्रह चलता है।

मुझको बड़ा शक है कि जिस जगह पर वह कहते हैं कि सत्याग्रह चलता है वहाँ सचमुच वह सत्याग्रह है या दुराग्रह है। ऐसा हमारे मुल्क में हो गया है कि एक चीज़ का नाम ले लिया लेकिन काम उससे उल्टा किया। और आज जब कोई भी आदमी, चाहे वह पोस्ट आफ़िस का हो, टेलीग्राफ आफिस का हो, रेल्वे का हो, या तो देशी राज्य में हो, जिस जगह पर वह सत्याग्रह करने की कोशिश कर रहा है इन सब को इतना समझ लेना चाहिये कि यह काम जो वे कर रहे हैं सत्य है या असत्य। अगर असत्य है तो उसका आग्रह क्या करना था और अगर सत्य है तो सत्य का आग्रह हमेशा और हर हालत में करना ही चाहिये। "हमको कुछ मिल जाय" इस उद्देश्य से जो सत्याग्रह करते हैं वह सत्याग्रह नहीं हो सकता। वह तो असत्य का आग्रह होगा। सत्याग्रह के लिए मैंने बहुत सी चीज़ें बतला दी हैं। दो चीज़ें तो अनिवार्य बतलाई हैं। एक तो यह कि जिस चीज़ के लिये लड़ते हैं वह सचमुच सत्य है और दूसरे यह कि उसका आग्रह रखने में अहिंसा का ही उपयोग हो सकता है।

जितने लोग आज सत्याग्रह चला रहे हैं वे समझ बूझ कर काम करें। अगर मूल चीज़ असत्य है और उसके आग्रह में जबर्दस्ती की जाती है, तो उसको छोड़ना अच्छा होगा। अगर उसमें जहर भरा है, अगर वह दुराग्रह है और असत्य है, जो वह माँगते हैं, वह हक उनको मिल नहीं सकता, तो भी वह मांगना शुरू करते हैं, तो मैं कहूँगा कि ऐसी चीज़ मांगने में अहिंसा इस्तेमाल हो नहीं सकती। वह अहिंसा नहीं हुई; वह तो हिंसा हुई। जो आदमी एक असत्य चीज़ मांगता है और पीछे कहता है कि अहिंसा से कर लेगा वह कर नहीं सकता है।

अगर कैम्पों को चलाने का काम मेरे हाथ में हो तो कैम्पों में रहने वालों को मैं कहूँगा कि कैम्पों की सफाई का काम तो आपको ही करना है। क्या कैम्पों में जो लोग पड़े हैं, वे ताश खेलेंगे, चौपड़ खेलेंगे, जुआ खेलेंगे और पड़े रहेंगे, या तो सोते रहेंगे? खाना तो पूरा नहीं मिलता है। पानी नहीं मिलता है यह मैं जानता हूँ। 'तो पीछे मैं क्यों काम करूं?' ऐसा करते हैं तो हम ऐबी बन जाते हैं। वहाँ कोई ५ या ७ आदमी थोडे ही हैं, हज़ारों की तादाद में पड़े हैं। कब पहुँचेंगे अपने घर में, यह भी पता नहीं। खाना तो हम उनको देंगे, लेकिन उस खाने के लिए वे कुछ काम तो करें। कम से कम सफाई करने से शुरू करें, पीछे कह दें कि हम दूसरा भी काम कर सकते हैं, सूत कात सकते हैं, बुन सकते हैं, बढ़ई का काम कर सकते हैं, लुहार का काम कर सकते हैं, दर्जी का काम कर सकते हैं। या तो हम खटीक का काम करें वह निकम्मी चीज़ नहीं है। इतने काम हिन्दुस्तान में पड़े हैं। कल वह भले ही करोड़पति थे, आज तो करोड़ चले गये, ऐसा दुनिया में हो जाता है। अब सबको नये सिरे से काम में जुट जाना ठीक है। कोई कहें कि हम करोड़पति थे हम क्यों यह काम करें, तो हमारा काम बिगड़ जाता है। हम जो काम करना चाहते हैं वह बन नहीं सकता मैं बड़े अदब से कहूँगा इस तरह हमारा काम चल नहीं सकता। हर दृष्टि से जितना काम हमारा चलता है वह तो आदर्श होना चाहिये। उसमें सफाई हो गन्दगी बिल्कुल नहीं। लोग पड़े हैं, इन्होंने अपना सब काम खुद किया है। ऐसा करें तो मैं आपको कहता हूँ कि हमें आज जो तकलीफ हो रही है वह काफी हदतक रफा होने वाली है। और अगर हम इस तरह काम करने वाले बन जाते हैं तो पीछे हमारा गुस्सा भी शान्त हो जायगा। हमारे दिलों में जो बैठ भाव पड़ा है, वह भी शान्त हो जायगा। भलाई तो इसी में है कि बुरे काम को बुरा समझना और पीछे उसका बदला देना है वह भलाई से देना। उसका नाम भलाई है। ऐसा नहीं कि कोई पागल बन जाय, तो हम भी मूरख बन जायँ। भलाई की निशानी यह है कि हम दुष्टता का बदला दुष्टता से न दें, दुष्टता का बदला हम साधुता से दें। हमारे मुल्क का तो इसी में कल्याण है। हम किसी को रंज नहीं पहुँचायेंगे लेकिन खुद दुख को बर्दाश्त करके दूसरों को सुखी करने की कोशिश करेंगे। अगर यह किया तो पीछे हिन्दुस्तान का तो भला होता ही है आप जगत् का भी भला कर सकते हैं। आज तो हिन्दुस्तान की ओर लोग देख रहे हैं, कि हिन्दुस्तान क्या करता है। अभी तो हमारे सच्चे इम्तहान का वक्त आ गया है। आज़ादी मिली है अब हम क्या करेंगे।

★

४ अक्टूबर, १६४७

मैं आप लोगों को कैसे मनवा सकूंगा कि अगर हम लोग पागल नहीं बनते तो यह सब जो आज हो रहा है, होने वाला नहीं था। इसमें मुझको कोई सन्देह नहीं, मान लो कि मुसलमान पागल बने, इसलिए ये शरणार्थी लोग पाकिस्तान से भागकर आते हैं। इन्हें वहाँ चैन मिले तो हिन्दू वहाँ से क्यों भागेंगे? पश्चिमी पंजाब से क्यों भागेंगे? दूसरा पाकिस्तान का हिस्सा है, वहाँ से भी लोग भाग-भाग कर आते हैं, यह दुःख की कथा है। लेकिन वहाँ से क्यों हटते हैं वे यह समझने लायक चीज़ है। वहाँ के लोग जालिम बने हैं, ऐसा हम मान लें लेकिन उसके सामने क्या हम भी ज़ालिम बन जायँ। क्या हम हुकूमत अपने हाथों में ले लें; कानून अपने हाथों में ले लें कि चलो, वह मारते हैं तो हम भी मारेंगे, वे बूढ़ों को मारते हैं, तो हम भी मारेंगे, औरतों को मारते हैं तो हम भी मारेंगे, बच्चों को मारते हैं तो हम भी मारेंगे, जवानों को मारते हैं तो हम भी मारेंगे? मैंने बहुत दफा कहा कि यह वहशियाना कानून है। यह कानून चले और साथ-साथ मेरा जीवन चले, तो ये दो काम नहीं चल सकेंगे। तो आज तक मेरी प्रार्थना ईश्वर से यही रहती थी कि मुझको १२५ वर्ष जिन्दा रख जिससे मैं कुछ न कुछ और भी देश की सेवा कर सकूँ। और हिन्दुस्तान में खुदाई राज, राम-राज्य, जिसका नाम ईश्वरीय राज्य है, वह स्थापित हो तब मुझको चैन आ सकता है। तब मैं कह सकता हूँ कि हिन्दुस्तान सचमुच आज़ाद बन गया है। लेकिन आज तो वह ख्वाब सा हो गया है। रामराज्य तो छोड़ दो, आज तो किसी का राज्य नहीं। ऐसी हालत में मेरा जैसा आदमी क्या करे? अगर यह सब नहीं सुधर सकता, तो मेरा हृदय पुकार करता है हे ईश्वर! तू मुझको आज क्यों नहीं उठा लेता? मैं

इस चीज़ को क्यों देखता हूँ ? अगर तू नहीं उठाता और चाहता है कि मुझको जिन्दा रहना है तो कम से कम वह ताकत तो मुझको दे दे जो मैं एक वक्त रखता था। मुझे ऐसा गुमान था कि मैं लोगों को समझा सकूँगा। लोगों के पास आया और कहा खबरदार इस तरह से न करना तो वे समझ जाते थे, उनके दिल में मेरे प्रति इतनी मुहब्बत थी। मैं नहीं कहूँगा कि आज मेरे लिये लोगों के दिल में मुहब्बत कम हो गयी है। मगर कम हो या वैसी, उसके पीछे तो अमल होना चाहिए। वह नहीं है। तो मैं कहता हूँ कि मेरा असर चला गया है। जब हम गुलामी में थे तब तो मेरा काम अच्छा चलता था, लेकिन अब जब हम आजाद हो गए हैं, तब मेरा काम नहीं चलता। जो पाठ मैंने प्रजा को उस वक्त सिखाया था मैं तो वही पाठ आज भी दे सकता हूँ। अगर वह पाठ आज आप ले लें तो हम खूब आगे बढ़ जाते हैं।

मैं कहना तो यह चाहता था कि आप लोगों के लिए अब जाड़े के दिन आते हैं। मेरे लिये तो आप देखते हैं यह गरम चादर ये लड़कियाँ लेकर आई हैं, कि शायद मुझको ठंड लगे। खाँसी भी है, इस वक्त कम है, सो यह सूती चादर काफी है। लेकिन वे जो यहाँ कैम्पों में पड़े हैं, पुराने किले में पड़े हैं उनका क्या ? आप कह सकते हैं कि मुसलमानों को हम क्यों दें ? मैं तो ऐसा नहीं बना हूँ। मेरे लिए तो मुसलमान भी वही हैं, सिक्ख भी वही हैं, पारसी भी वही हैं, ईसाई भी वही हैं। मैं ऐसा भेद नहीं कर सकूँगा। इन जाड़े के दिनों में उन सब का क्या होगा ? अगर हम यह कहें कि यह तो हुकूमत का काम है, हुकूमत उन्हें जाड़े के दिनों में कम्बल दे देगी, तो मैं आपको कहता हूँ कि हुकूमत नहीं दे सकेगी। हुकूमत कोशिश तो करेगी लेकिन आज हमारे पास वह स्टाक कहाँ है ? हुकूमत कम्बल कहाँ से निकालेगी ? छू मंतर करके उनके पास आ जाता हो, ऐसे नहीं बनते। आज सारे योरुप में, अमरीका में भी वह चीज़ नहीं मिलती। हमको वहाँ से कोई वस्तु भेज नहीं सकते। कुछ रहम करके कोई भेजे भी तो दस बीस हज़ार कम्बलों से क्या होगा ? यहाँ तो लाखों लोग पड़े हैं, ऐसे हर एक को थोड़े ही मिल सकते हैं। मैं जितने आप लोग हैं सब से कहूँगा कि जाड़े के दिनों में वे सर्दी को बर्दाश्त करते रहें यह ठीक नहीं इसके साथ आप अपने सब कम्बल भी नहीं दे सकते। लेकिन मैं जानता हूँ कि हमारे पास बहुत से लोग ऐसे पड़े हैं जो अपने लिए कम्बल रखते हैं और जितने चाहिएँ उससे ज्यादा रखते हैं। दिल्ली में काफी गरीब पड़े हैं जिन्हें मुसीबत से कम्बल मिलते हैं। जितने कम्बल आप बचा सकते हैं उन्हें दे दें।

मैंने देखा है, मैं दिल्ली में रहा हूँ और जाड़े के दिनों में रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि दिल्ली में काफी गरीब लोग भी पड़े हैं, लेकिन मैं तो इतना ही कहूँगा कि जो ऐसे गरीब नहीं हैं, जिनके पास एक कम्बल से काम चल सकता हो, और उनके पास दो हों, तो एक मुझे दे दें। इसी तरह से आप आज से चीजें देना शुरू करें। आप ऐसा न सोचें कि यहाँ हुकूमत करती है सो आपको कुछ करना नहीं। ठंड तो शुरू हो गई है लेकिन अभी बर्दाश्त हो सकती है। लेकिन १७ अक्टूबर के बाद मैं वाइसराय के घर गया था। तब वहाँ आग जलती थी, क्योंकि ठण्ड हो गयी थी और यहाँ की ठंड ऐसी होती है कि आदमी की बर्दाश्त के बाहर हो जाती है। अक्तूबर से वह जल्दी-जल्दी बढ़ने लगती है और तेज हो जाती है, नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी, फरवरी यह सब जाड़े के खुशनुमा दिन हैं। जिनके पास खाना है, कपड़ा है, काफी पहन कर चलते हैं, बड़े बूट पहने हैं, मोज़े पहने हैं, वह तो जाड़े को खुशनुमा कह सकते हैं लेकिन जिनके पास नहीं हैं उनका क्या हाल होता है, उसका मैं गवाह हूँ आप भी हो सकते हैं। इसलिए मैं कहूँगा कि इतना तो हम करें कि जितने को हम बचा सकते हैं, बचा लें। जिनके पास जाड़े में पहनने लायक कपड़े हैं, यह भी हो सकता है कि आपके पास ऊनी कपड़ा न हो, ऊनी कमलिया नहीं तो लिहाफ तो रहता है। लिहाफ काफी हो जाता है, अगर वह अच्छा हो तो आप लिहाफ भी ला सकते हैं। चद्दर भी रहती है, जो चद्दर पुराने जमाने की मोटे कपड़े की, मोटे खद्दर की रहती है वह काफी गरम रहती है, मुझे और कपड़े नहीं चाहिएँ। लेकिन यह चद्दर की शक्ल में ऊन की हों, लिहाफ हों, या तो मोटी चद्दर पड़ी हों, उन तीनों चीजों में से जो आपके पास आराम से बच सके, आप अपने आप मुझे दे दें। अगर आप भेजना शुरू कर दें, तो इन्तजाम हो जायगा कि कौन उसका कब्जा लेंगे। मैं आप तो करने वाला नहीं हूँ ऐसा भी नहीं होगा कि चीज आ गई तो सब गोदाम में पड़ी सड़ जायगी या नालायक आदमी को मिल जायगी। जितनी चादरें आप देंगे, जितने ऐसे कपड़े आप देंगे, मैं आपको इतना कह सकता हूँ कि वे सब योग्य पुरुष और योग्य स्त्री के पास जाने वाली हैं। मैं उम्मीद तो करूँगा कि आप मुझको ऐसा न कहें कि यह तो हम हिन्दुओं के लिए देते हैं, यह सिक्ख के लिए देते हैं। इन्सान सब एक हैं। पीछे कोई न कहें कि इसमें से मुसलमानों को न देना। यहाँ काफी मुसलमान तो मारे गये, काफी भाग गये, हमने भगा दिये। जो बाकी रहे हैं, उनके पास कितनी जायदाद पड़ी है यह मुझको पता नहीं। जो मुसलमान हिन्दुस्तान में पड़े हैं वे भी अगर कम्बल

वगैरा भेजें और कहें कि हम तो मुसलमानों को ही देंगे, तो मैं मुसलमानों को दे दूँगा। लेकिन मैं यह उम्मीद करूँगा कि जितने लोग मेरी बात सुनते हैं और दूसरे जो इस रेडियो की मार्फत सुनने वाले हैं वे सब मुझे परेशान न करें, और कहदें कि हमने तुझको यह चीज कृष्णार्पण की। तो जो उसके लायक है उसको मिल जायगा। इसलिए मेरी उम्मीद है, विश्वास है कि इतना आप करेंगे। तो मैं यह कहूँगा कि आपने बहुत बड़ा काम किया है। ऐसा न करें कि चलो जो टूटा फूटा निकम्मा हो, मैला पड़ा हो, वह लाकर मुझको दे दें कि मैं धोऊँ, रफू करूँ। मैला कपड़ा है तो आप धोने की कोशिश करें इतनी अपने को तकलीफ दें, धोबी को देने की कोई जरूरत नहीं रहती है। आराम से थोड़ा पानी तो मिल जायगा तो उसको अच्छा साफ़ करके लपेट करके आप मुझे दे दें, तो मुझको बड़ा अच्छा लगेगा।

★

५ अक्टूबर, १९४७

पहले तो मैं अपनी तबियत के बारे में आपसे कुछ कहूँ क्योंकि आज भी अख़बारों में मेरी बीमारी की बाबत कुछ ख़बर आई है। किसने दी है, मुझको पता नहीं है। जो डाक्टर मेरे इर्द-गिर्द रहते हैं, उनकी तो यह ख़बर दी हुई नहीं हो सकती। लेकिन बहुत आदमी यहाँ आते जाते हैं। वे देखते हैं कि मुझे कुछ खाँसी वगैरह है, थोड़ा बुखार भी आ जाता है और फिर वे रज का गज बना देते हैं। ऐसा क्यों? कुछ मेरी तन्दुरुस्ती के बारे में लिखें, तो क्योंकि मैं महात्मा माना जाता हूँ इसलिये वह चीज़ सारी दुनिया में फैल जाती है। गाँधी मर जायगा तो क्या होगा? सब मरने वाले हैं तो गांधी को भी मरना है। कोई अमरत्व फल खाकर तो आया नहीं है। मुझे कुछ दुर्बलता और खाँसी तो है, पर इसे अख़बारों में देने से क्या लाभ? मैं यह कहूँगा कि जिन्होंने यह ख़बर दी उन्होंने न तो मेरा और न किसी अन्य का ही भला किया। आप तो देखते हैं, मैं आता हूँ, बात भी करता हूँ। इसमें कोई रुकावट नहीं होती है। हाँ थोड़ी दुर्बलता है, खाँसी है, लेकिन उसको ज़ाहिर क्या करना था? मेरी इच्छा है कि लोग ऐसा न करें।

दूसरे मैंने तो कल आप लोगों से कहा था, प्रार्थना की थी कि अगर दे सकते हों, तो ग़रीबों के लिये, अभी जाड़े के दिन आते हैं, तो कम्बल दें, रज़ाई दें, और दूसरी ओढ़ने लायक़ चीज़ें हों, उनको भी दें। आज तीन सज्जनों ने कम्बल भेजे हैं। उनमें से दो सज्जन हैं, वे तो यहीं इर्द गिर्द में रहते हैं, नाम तो मैं उनका भूल गया हूँ, उन्होंने दो कम्बल मुझे भेजे हैं, अच्छे हैं, ख़ासे हैं। एक शख़्स हैं, उनका भी नाम तो मैं भूल गया हूँ, उन्होंने दस कम्बल दिये हैं और वे तो नये ही हो सकते हैं। वह सब जैसा मैंने आपको कहा है, सुरक्षित रखे जा रहे हैं और जैसा

आपको कल कहा था इनका इस्तेमाल योग्य भाई और बहिनों को देने में होने वाला है। मेरी उम्मीद है कि आज अगर आप सब लोग समझ गये हैं तो जो कोई चीज़ आप दे सकते हैं, मुझको दीजिये।

अभी एक तार मेरे पास आगया है, जिसे कई आदमियों ने मिलकर साथ भेजा है। तार मेरे सामने पड़ा है। उसमें जो लिखा है, वह मुझे अच्छा नहीं लगता। लिखने का तो उनको अधिकार है। तार भेजने वाले लिखते हैं कि जैसा हिन्दुओं ने किया है यदि वे वैसा न करते, तो शायद तुम भी ज़िन्दा नहीं रह सकते थे। यह बहुत बड़ी बात हो गयी। मुझको ज़िन्दा रखने वाली कोई ताक़त मैं मानता ही नहीं हूँ, सिवा एक ईश्वर के। वह जब तक चाहता है तब तक मैं ज़िन्दा हूँ, और उस वक्त तक मेरा कोई नाश नहीं कर सकता है। जो मेरे लिये सही है, वह सब के लिये सही है। तो ऐसी बात वे क्यों लिखें? मुझको कहना पड़ेगा कि लिखा तो मुहब्बत से है यह, पर मेरा यह विश्वास है कि मुझे या किसी को भी ज़िन्दा रखना सिर्फ भगवान के हाथों में है।

वे पीछे लिखते हैं कि याद रक्खो, (कुछ नाम भी दिये हैं उसको मैं छोड़ना चाहता हूँ) तुम बहुत भोले हो, जो अब तक मुसलमानों का विश्वास करते हो। कोई एक नहीं जो मुझको ऐसा बतलाते हैं। सब मिलकर मुझको सुनाते हैं कि यहाँ मुसलमान ऐन मौक़े पर दग़ा देने वाले हैं; वे पाकिस्तान का साथ देने वाले हैं और वे पाकिस्तान के लिये हिन्दुस्तान के सामने लड़ने वाले हैं। वे लिखते हैं कि १०० में से ६८ मुसलमान दग़ाबाज़ हैं। मुझको कहना पड़ेगा मैं यह नहीं मानता। यहाँ के साढ़े चार करोड़ मुसलमान तो ज़्यादातर देहातों में पड़े हैं, और जो थोड़े मुसलमान शहरों में पड़े हैं, वे हम में से ही मुसलमान बने हैं, वे सब के सब दगाबाज़ नहीं हो सकते। तो क्या सब मुसलमान दग़ाबाज़ हैं, यह मानकर प्रत्येक मुसलमान के घर में प्रवेश करो और उन्हें तबाह कर दो? हर एक के पास हथियार हैं, उनको छीन लो? उनके कहने का बिल्कुल ऐसा ही मतलब हो जाता है कि उनको तबाह करो और सबके सबको यहाँ से हटा दो। मैं उन भाइयों को कहूँगा कि यह तो कायरों की बातें हैं। मैं तो एक ही चीज़ कहूँगा कि मान लो यदि मुसलमान ऐसे हैं तो वह चीज़ हुकूमत को साबित कर दो। हुकूमत को कहो कि इसका फ़ैसला करे। ऐसा ही करे जैसा कि वे भाई कहते हैं तो उससे तो हम दोनों दुश्मन बनेंगे और फिर उसका नतीजा होगा दोनों की लड़ाई। दोनों लड़ते हैं, तो पीछे दोनों का नाश होने वाला है या यह कहो कि हम पाई

हुई आज़ादी का नाश करेंगे। कोई हिन्दू दूसरों के मातहत जाकर अपना हिन्दूपन नहीं रख सकता है। अंग्रेज़ थे तो हम उनकी गुलामी में सोचते थे कि हमारे धर्म की रक्षा होती है वह भूल थी।

जब मैं बच्चा था तो मैंने एक अन्धे कवि की, जो एक अच्छे कवि थे, कविता पढ़ी थी जिसके अर्थ यह होते हैं अब तो खैर और बैर गया, हमें आराम से रहना है अंग्रेज़ आ गये हैं। एक ज़माना था कि हम अंग्रेज़ों पर मुग्ध हो गये थे और सोचते थे कि इनके नीचे हम सुरक्षित हैं। वह भूल सुधारो। अब यदि हम ऐसे बुज़दिल बनें कि साढ़े चार करोड़ मुसलमानों को मार भगाने की सोचें, तो उससे तो हम कायर सिद्ध होंगे। ऐसी बातों से हम अपने धर्म को कभी भी बचा नहीं सकेंगे। मैं तो ऐसा नहीं मानता कि हिन्दू, मुसलमान जन्म से एक दूसरे के दुश्मन पैदा हुए हैं। और अगर ऐसे बने तो पीछे हिन्दुस्तान कैसे ज़िन्दा रह सकता है! क्या दोनों हिन्दू और मुसलमान गुलाम बनने वाले हैं और दोनों अपने धर्म को भूल जाने वाले हैं? वह कैसे हो सकता है? हमारा आपका तो धर्म हो जाता है कि हम इस सम्बन्ध में सब बातें सरकार को पहुँचा दें।

आज मैं आपको कहूँगा मैं तो मन्त्रियों के साथ बैठता उठता हूँ। पंडित जी तो हमेशा करीब-करीब रोज़ मेरे पास आते हैं, सरदार भी करीब-करीब रोज आते रहते हैं, हालांकि उतना नहीं जितना पंडित जी आते हैं। लेकिन दोनों आते हैं, दोनो मित्र हैं दोनों मेरे साथ रहते हैं। दोनों ने बड़ी खूबी से मेरे साथ लड़ाई भी की है। तो मैं ऐसा नहीं कहना चाहता हूँ कि मैं उनको कुछ कह नहीं सकूंगा। सरकार को हिन्दू, मुसलमान, पारसी और ईसाई सबकी रक्षा करनी है, तभी वे कह सकते हैं कि वे सच्चे कांग्रेसी हैं। हिन्दू सभा है, तो उसका काम तो हिन्दू धर्म की रक्षा करना है। सिक्खों और हिन्दुओं के धर्म की रक्षा करना, बुराइयों और बदियों को हटाना, उनका अपना काम है। दूसरा थोड़े ही कोई मिटाने वाला है। हम दूसरों को कहें कि आप मेहरबानी करके हमारा धर्म बचादें, तो इस तरह धर्म बचता नहीं है। मेहरबानी से कहीं धर्म बचता है? यदि हम कहें कि हमारा धर्म बचाओ तो वह तो धर्म का सौदा हुआ। हमें जान प्यारी है इसीलिये हम ऐसा कहते हैं। हम कभी एक चोला पहिनें, कभी दूसरा तो यह भी कोई धर्म होता है? इस कारण मैं कहूँगा कि ये जो तार देने वाले हैं, उन्होंने कोई बड़ा सयानापन नहीं किया है।

वह चीज़ कह कर मैं आपको दूसरी बात बतलाना चाहता हूँ। हमारे चर्चिल साहब ने दुबारा भी वही चीज़ कही है और बढ़ाकर, बनाकर कही है। यह मुझको चुभता है, क्योंकि मैं तो अंग्रेज लोगों का दोस्त हूँ। मुझको किसी के साथ दुश्मनी

तो है ही नहीं। उनमें बहुत भले लोग पड़े हैं और अभी उन्होंने भारत को आज़ादी देकर बहादुरी का काम किया है। पीछे उसका कुछ भी असर हो, मुझे उसकी परवाह नहीं। चर्चिल साहब उसपर हमला करते हैं और कहते हैं कि जैसा उन्होंने पहले भाषण में भी कहा था, "मैं तो हमेशा से मानता आया हूँ। हिन्दोस्तानी ऐसे हैं, वैसे हैं"। अगर हमेशा मानते आये हैं तो अब पीछे उसको दोबारा दुहराने की क्या जरूरत थी?

लेकिन ऐसा लगता है कि उन्होंने केवल अपनी पार्टी के लिये ही मजदूर सरकार पर हमला किया है ताकि लेबर पार्टी की मिनिस्ट्री मिट जाय और फिर उनकी पार्टी की हुकूमत हो जाय। इंगलैंड में आज मजदूरों का राज्य है। वह एक छोटा सा टापू है, लेकिन मजदूरों की शक्ति पर वह इतना बड़ा है और अपने उद्योग के कारण, दुनिया में मशहूर हो गया है। जो मजदूर सरकार अब वहाँ बनी है, उसको हटा दो। यह चर्चिल साहब की मंशा है। और उसको हटा देने के लिये वे कहते हैं कि इस लेबर मिनिस्ट्री ने बेवकूफी की है, उसने यह भद्दा काम किया, एम्पायर को मलियामेट कर दिया, हिन्दुस्तान जो एम्पायर में था, उसको गंवा दिया और अब बर्मा का भी वही हाल होने वाला है जो हिन्द का हुआ। अब मैं कैसे कहूँ चर्चिल साहब को कि आपका इतिहास बहुत देखा। बर्मा किस तरह से आप लोगों ने लिया। हिन्दुस्तान में कैसे आपने अंग्रेजों की हुकूमत कायम की। उस इतिहास पर कोई आदमी अभिमान कर सके यह मैं नहीं मानता हूँ।

हम आज जो कर रहे हैं, वह वहिशयाना काम करते हैं, और हमारे हाथ में जो हुकूमत आई है, उसको मिटाने की चेष्टा कर रहे हैं, मैं कबूल करता हूँ कि आज आपके नजदीक मैं एक नाकिस आदमी बन गया हूँ। मेरी आपके पास आज नहीं चलती लेकिन मैं आपको कहूँ कि अगर चर्चिल साहब की बात अंग्रेजों ने मान ली, जिसको कि कंजरवेटिव पक्ष कहते हैं उसने मजदूरों को हराया और मजदूरों के राज्य को शिकस्त दे दी तो वह बुरा होगा। मैं आपको कहूँगा, कि हम किसी शक्ति के मार्फत आजाद हुए हैं, ऐसा सारी दुनिया कहती है। वह शक्ति कैसी है? उस वक्त सत्ता मजदूर वर्ग के हाथ में थी, सोशलिस्ट हुकूमत उस वक्त इंगलैंड में थी और उसने हमें आजादी दी। सोशलिज्म को कौन मिटा सकता है?

उसको न तो चर्चिल साहब मिटा सकते हैं और न कोई और ही मिटा सकते हैं। उनका राज्य दूसरी तरह से चल ही नहीं सकता। यह तो मैं देख चुका। लेकिन माना कि अंग्रेजी प्रजा ने अपनापन गंवादिया और मजदूरों की शिकस्त हो

गई और चर्चिल साहब के हाथ फिर सत्ता आ गयी तो क्या वे हमें अल्टीमेटम दे देंगे कि नहीं हम तुमको फिर से गुलाम बनाने वाले हैं, हमला करने वाले हैं। दें तो सही, किस तरह से वे दे सकते हैं। मेरी अक्ल काम नहीं करती। कैसे भी हम हिन्दुस्तानी बुरे हों, भले हों, हम बदमाश बन जाते हैं, हम दीवाने बन जाते हैं। तो भी उन्हीं लोगों ने मुझको सिखाया है कि आज़ादी सबसे बड़ी चीज़ है। ऐसी बड़ी आज़ादी में जितनी गलतियाँ हों वह सब करने का तुमको हक है। आज़ादी का मतलब यह नहीं है कि हम भले बनें, तब तो आज़ादी मिलेगी और अगर लुटेरे रहते हैं, बुरे रहते हैं तो आज़ादी न मिले। यह कहाँ की बात है? अंग्रेजों के लिये तो वह कानून नहीं हुआ। कोई भी प्रजा जितनी दुनिया में पड़ी है, इनके लिये यह कानून नहीं था और अगर ऐसा रहता कि जो भला रहता है, उसके पास ही आज़ादी रह सकती है, तो आज सारी दुनियां में जो हो रहा है, उसे देखकर कहीं भी आज़ादी कैसे रह सकती है? अंग्रेजों ने ही हमें सिखाया है कि आज़ादी गुलामी की अपेक्षा भली है। एक अंग्रेज लेखक कहता है कि हम चाहे शराब पीये पड़े रहें पर आज़ाद रहें, परन्तु गुलाम हो कर सुधरना स्वीकार नहीं। पर हम उनकी बुराइयाँ ले लेते हैं, भलाइयाँ नहीं।

हिन्दुस्तान में तो सात लाख देहात पड़े हैं, सात लाख देहात के लोग तो आज पागल नहीं हो गये। सात लाख देहात के लोग अगर पागल बन जाते हैं, तो हिन्दुस्तान का नक्शा बदल जायगा। लेकिन सात लाख देहात हिन्दुस्तान के हैं, वे सबके सब पागल बन जाँय, लेकिन आजाद बने रहें, तो मुझको बड़ा मीठा लगेगा। लेकिन चूंकि वे पागल बन गये हैं, इसलिये कोई हिन्दुस्तान पर बद-नज़र करे और कब्जा लेने की कोशिश करे, तो वह चलने वाली चीज़ नहीं है।

मैंने कह दिया है और आज फिर कहता हूँ कि अगर हम पागल रहें, उसका नतीज़ा यह आने वाला है कि अंग्रेज़ तो अब यहाँ आने वाले हैं नहीं, वे अब यहाँ नहीं आ सकते हैं, उन्होंने एक चीज़ निगल दी तो पीछे दुबारा थोड़े ही वापिस लेने वाले हैं, मगर दुनिया के सामने तो सब है, वह तो देखेगी कि क्या हो रहा है? दुनिया उसको यह नहीं करने देगी और न हिन्दुस्तान ही करने देगा। लेकिन दूसरी जो ताक़तें हैं, जिसको यू० एन० ओ० कहते हैं जिसके पास बड़ी ताकत पड़ी है यदि वह यहाँ जाँच पड़ताल के लिये आये तो हम उसे रोक नहीं सकेंगे। पीछे हम ऐसे पागल बन जाते हैं कि अपनापन छोड़ देते हैं तो हम आज़ादी को खोकर उनको दे देंगे।

मैं चाहे बिलकुल अकेला रह जाऊं, लेकिन मेरी ज़बान तो यही सुनायेगी

कि ख़बरदार सारी दुनिया भी आये, वह हमारा बिलकुल नाश करना चाहती है, तो कर सकती है, लेकिन हमको दुबारा गुलाम बनाकर नहीं रख सकती। मेरी तो ऐसी प्रतिज्ञा है कि हम दुबारा गुलाम न बनें। उस प्रतिज्ञा का आप पालन करेंगे, उसको सच्चा बनाना वह तो आप लोगों का काम है, मेरे अकेले का नहीं है। मैं अकेला तो भारत को बचा नहीं सकता। मेरा क्या ठिकाना है? कौन जाने कब तक चलता हूँ। ईश्वर मुझे उठा लेता है तो हिन्दुस्तान का क्या होने वाला है? मैं अकेला थोड़े ही हिन्दुस्तान को बचा सकता हूँ। वह तो ईश्वर पर निर्भर है और अगर वह साथ रहेगा और उसकी मेहरबानी रही तो हिन्दुस्तान बच सकेगा। जब तक मैं ज़िन्दा हूँ मैं समझता हूँ कि कोई ऐसा नहीं कर सकता कि चलो हिन्दुस्तान में कुछ तूफ़ान हो रहा है, इसलिये उसको गुलाम बनाओ और कब्ज़ा करो। ईश्वर मेरी इस प्रतिज्ञा का पालन आपकी मार्फ़त कराये! यही मेरी इच्छा है।

★

६ अक्टूबर, १९४७

जिन लोगों को हमारी खुराक की समस्या पर जानकारी होनी चाहिये, वे डा० राजेन्द्र प्रसाद के निमन्त्रण पर, उनको खुराक के बारे में, सलाह देने के लिये यहाँ जमा हुए हैं। इस ज़रूरी मामले में यदि कोई भूल हो जाये तो उसका परिणाम यह हो सकता है कि उस भूल से, जिससे बचा जा सकता है लाखों आदमी मर जायँ। हिन्दुस्तान के भूखे रहने से करोड़ों नहीं तो लाखों की संख्या में, कुदरती तथा इंसान के बनाये हुए दुष्काल से मरने से कुछ अपरिचित नहीं हैं। मैं कहता हूँ कि किसी अच्छी संगठित समाज में हमेशा पहले से ही पानी की कमी से और अनाज की फ़सल बिगड़ने से होने वाली आपत्ति से बचने का पहले से कामयाब इलाज सोच रखा जाता है। इस बात की चर्चा करने का यह मौका नहीं है। इस वक्त तो हमें यही देखना है कि आया हम मौजूदा खुराक की भयंकर परिस्थिति से बचने की उम्मीद रख सकते हैं या नहीं।

मेरा ख्याल है कि हम ऐसी उम्मीद रख सकते हैं। पहला पाठ जो हमें सीखना चाहिये वह है खुद की मदद और स्वाश्रय। अगर हम इस पाठ को हज़म कर लें तो तुरंत ही अपने को विदेशी मुल्कों की मदद पर भरोसा रखने से और आखिर में दिवालियापन से बचा लेंगे। यह बात कुछ अभिमान के तौर पर नहीं कही जा रही बल्कि यह तो एक हक़ीकत है। हमारा कोई छोटा मुल्क नहीं है जो अपनी खुराक के लिए बाहर की मदद पर निर्भर रहे। हमारी जनसंख्या तो चालीस करोड़ है-जो एक बर्रे-आज़म के हिस्से में रहते हैं। हमारे देश में काफी दरिया हैं और भांति-भांति की फ़सलें होती हैं और असंख्य मवेशी हैं। यह तो हमारा ही कुसूर है कि यह मवेशी हमारी ज़रूरत से भी कम दूध देते हैं मगर उनमें इतनी शक्ति आ

सकती है कि वह हमारी ज़रूरत के मुताबिक दूध दे सकें। यदि गत चंद सदियों में हमारे देश को भुलाया न गया होता तो वह न सिर्फ़ अपने लिये पूरी ख़ूराक का प्रबन्ध कर सकता बल्कि वह बाहर के देशों को भी कुछ खुराक पहुँचा सकता। जिसकी कमी दुर्भाग्यवश पिछली लड़ाई के कारण तमाम संसार में हो गई है। इसमें भारतवर्ष भी शामिल है। मुसीबत घटने के बजाय बढ़ती ही जा रही है। मेरी तजवीज़ का यह अर्थ नहीं है कि यदि कोई देश हमें खुशी के साथ खुराक देना चाहें तो हम उसे नामंजूर कर दें। मेरे कहने का आशय तो केवल यही है कि हम भीख मांगते न फिरें। इससे हम में गिरावट आती है। इसके अलावा यह ख्याल करो कि खुराक को एक जगह पहुँचाने में कितनी कठिनाइयां आती हैं। हमें यह भी डर रहना चाहिये कि विदेश से जो अनाज आवेगा वह शायद अच्छा नहीं होगा। हम इस बात को नज़र-अंदाज़ नहीं कर सकते कि मनुष्य स्वभाव हर मुल्क में कुदरती तौर पर कमजोर है। वह कहीं भी न पूर्ण हुआ है न पूर्णता के नज़दीक पहुँचा है। अब हमें यह देखना है कि हमें विदेशी सहायता क्या मिल सकती है। मुझे बताया गया है कि ज़रूरत का केवल तीन फ़ीसदी बाहर से आ सकता है। यदि यह बात सच है और मैंने कई निपुण जानकारों से इस संख्या की सच्चाई मालूम कर ली है तो विदेशों पर भरोसा रखने में कोई मानी नहीं रहते हैं क्योंकि विदेशों पर थोड़ा सा भी भरोसा रखें तो इसका परिणाम यह आ सकता है कि हमें अपनी हर एक इंच जोती जाने वाली जमीन पर जितना ध्यान देने को है वह नहीं देंगे। अगर हम स्वाश्रयी बनने का निर्णय करें या धन पैदा करने वाली फ़सल की बजाय ख़ूराक की फ़सल पर ध्यान दें तो जो ज़मीन बेकार पड़ी है उसे हमें तुरन्त काम में लाना चाहिये।

खुराक के केन्द्रीयकरण को मैं नुकसानदेह मानता हूँ। विकेन्द्रीकरण से काले बाज़ार पर बड़ी आसानी से आघात पहुँचता है तथा खुराक को इधर उधर ले जाने में जो समय और पैसा ख़र्च होता है वह बचता है। इसके अलावा किसान तो हिन्दुस्तान का अनाज और दालें पैदा करता है वह जानता है कि अपनी फ़सल को चूहों वगैरह से कैसे बचाय। अनाज जब एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन पर जाता है तो चूहों को नुकसान करने का मौका मिलता है। देश को करोड़ों का नुक़सान उठाना पड़ता है और लाखों टन अनाज की कमी पड़ जाती है जिसकी हर एक छटाक हमारे लिये क़ीमती है। अगर हर एक हिन्दुस्तानी ख़ूराक पैदा करने की, जहाँ-जहाँ वह पैदा किया जा सकता है, ज़रूरत महसूस करने लगे तो बहुत मुम-

किन है कि हम यह भूल जायें कि देश में अनाज की कमी है। मैंने अनाज अधिक पैदा करने के लिये सुन्दर आकर्षक विषय को पूरी तरह बयान नहीं किया लेकिन जितना मैंने बयान किया है उससे बुद्धिमान् इस बात की ओर ध्यान देंगे कि हर एक आदमी इस शुभ काम में किस प्रकार मदद दे सकता है।

अब मैं यह बताना चाहता हूँ कि जो तीन फ़ीसदी अनाज हम बाहर से शायद हासिल कर सकते हैं यह घाटा कैसे सहें। हिन्दू हर एकादशी को या पंद्रह रोज़ बाद उपवास या अर्ध-उपवास करते हैं, मुसलमान और दूसरे लोगों को इस बात की मनाही नहीं है कि कभी-कभी भोजन का त्याग कर दें खासकर जब कि लाखों भूखों के लिये उसकी ज़रूरत है। अगर तमाम मुल्क इस बात की खूबी को महसूस कर ले तो हिन्दुस्तान विदेशी अनाज की कमी को ज़रूरत से ज़्यादा मिटा देगा। मेरा अपना ख़्याल है कि राशनिंग का अगर कुछ लाभ है भी तो वह बहुत कम है। यदि काश्तकारों को उनकी मर्ज़ी पर छोड़ दिया जाय तो वे अपनी पैदावार को बाज़ार में ले आएंगे और हर एक को अच्छा खाने लायक अनाज मिलने लगेगा जो आजकल आसानी से नहीं मिलता। मैं खुराक की कमी के इस मुख़्तसिर बयान को ख़त्म करता हुआ प्रेसीडेंट ट्रूमैन की सूचना की ओर ध्यान दिलाता हूँ जो उन्होंने अमेरिकन लोगों को दी है कि उन्हें रोटी कम खानी चाहिये ताकि योरुप वालों के लिये अनाज बचा सकें जिसकी उन्हें सख़्त ज़रूरत है। प्रेसीडेंट ने यह भी कहा कि इस त्याग से अमेरिकन लोगों की सेहत ख़राब नहीं हो जायगी। मैं प्रेसी-डेंट ट्रूमैन को उनके परमार्थिक बयान के लिये बधाई देता हूँ। मैं नहीं मान सकता कि इस दान के विचार के पीछे अमेरिका को पैसा बनाने का ख़्याल रहा होगा। मनुष्य को उसके कार्य से जांचना चाहिये न कि उस भावना से जिससे वह प्रेरित हुआ है। केवल परमात्मा ही मनुष्य के हृदय को जानता है। यदि अमेरिका भूखे यूरोप के लिये खुराक का त्याग कर सकता है तो क्या हम अपने ही लिये यह छोटा-सा त्याग नहीं कर सकते। अगर बहुत को भूखे मरना ही है तो कम से कम हम इतना श्रेय तो लें कि हमने अपनी मदद करने के लिये जो बन सकता था वह किया। यह मेहनत हमारे देश को ऊँचा उठाती है।

हमें उम्मीद करनी चाहिये कि डा० राजेन्द्र प्रसाद ने जो कमेटी बुलाई है वह जब तक कोई अमली हल इस खुराक की स्थिति को सुधारने का न निकाल लेगी, काम न छोड़ेगी।

*

७ अक्तूबर, १९४७

कल जो मैंने कहा उस में तो एक शब्द भी आज जो हिन्दू मुसलमान के बीच में चल रहा है, उस बारे में नहीं था। लेकिन आज ऐसा कुछ हो गया है कि मुझको बिलकुल ख़ामोश रहना नहीं चाहिये। यहां नहीं हुआ है, वह हुआ तो है देहरादून में। खासा सज्जन मुसलमान था; उसको कत्ल कर दिया। जहाँ तक मुझको पता है, उस ने कुछ गुनाह नहीं किया था, और कोई कानून हाथ में लिया हो, ऐसा भी नहीं है, लेकिन चूँकि वह मुसलमान था इसलिए उसको काट डाला। मुझ को बुरा लगा कि ऐसा ही हम करते रहे तो आखिर में हम कहां जाकर ठहरेंगे। आज तो मैं देखता हूँ कि मेरे पास काफी मुसलमान भाई बन्द पड़े हैं। मेरा दिल झिझकता है। अगर मैं उनको कहूँ कि आज यहाँ से जाओ, उस जगह पर चला जा—वह कैसे जाए। आज मैं पाता हूँ कि ट्रेन में मुसलमान सही-सलामत हैं ऐसा भी नहीं। जिसको जो चाहे कम्पार्टमेंट से उठा कर फेंक देते हैं या दूसरी तरह कत्ल कर डालते हैं। मैं यह समझता हूँ कि पाकिस्तान में ऐसी ही चीज़ हो रही है। लेकिन ऐसा हम करते रहें तो उससे हम को क्या फायदा पहुँचने वाला है। आखिर में हम अपने आपको पहचानें तो सही। अपने धर्म को भी तो पहिचानें। सब का धर्म सब के पास रहता है। हमारा धर्म क्या सिखाता है? क्या हम धर्म को छोड़ कर काम कर रहे हैं? क्या कांग्रेस पागल थी? आखिर ६० बरस तक कांग्रेस क्या करती आई? अगर कांग्रेस ने आज तक गलती की तो वह मुल्क की दुश्मन थी, और मैं कहूँगा कि पीछे कांग्रेस को हटा देना चाहिये। आज जो अपने को कांग्रेसी मानते हैं वे भी साफ-साफ़ कह दें कि हम कांग्रेस को छोड़ देते हैं। दूसरी कोई पार्टी बना लेते हैं। उसमें कोई शिकायत नहीं हो सकती है। लेकिन

कुछ भी करो, सारी दुनियां के सामने और हमारे लोगों के सामने मैं इतना तो कह सकता हूँ कि हम अपने हाथों में कानून न लें। ले लेंगे तो हम अपने को मार डालने की कोशिश करेंगे और आज़ादी गंवा बैठेंगे। तो पीछे जब दूसरा कोई आकर हिन्दुस्तान पर कब्ज़ा कर लेगा तो पीछे हम हाथ मलना शुरू कर देंगे कि हमने क्या गज़ब कर दिया। वह कोई अच्छी बात नहीं है। ऐसी बातों में एक पाठ हमें सिखाया जाता है। एक नेवला था उसने बच्चे को बचाने के लिए एक साँप मार डाला। उसका मुंह खून से लाल हो गया। माँ तो आती है बेचारी बाहर से। सर पर पानी का बर्तन है। कुएं पर गई थी, पानी लेने। मिट्टी का बर्तन था। वह नेवला तो नाचता-नाचता आया कि मैंने तुम्हारे बच्चे को बचा लिया, पर वह समझी कि उसने बच्चे को मार डाला है वह बर्तन उस पर डाल दिया। बर्तन का पानी गया, बर्तन टूटा, नेवला मर गया। भीतर जाकर देखती है बच्चा तो पालने में पड़ा था और खेल रहा था, वह भी खुशी से अपनी माँ को मिलना चाहता था। और सामने साँप मरा पड़ा है, तो वह समझ गई कि नेवला उसका दोस्त था, अफ़सोस हुआ, कहा मैंने ख़ामख़ाह उसे मार डाला। तो ऐसा हम न करें कि आखिर में हम, जैसे उस माँ को पछताना पड़ा, वैसे पछताएँ कि अरे हमने अपनी हुकूमत का कहना न माना। हुकूमत हमने बनाई है, क्या हम उसे बिगाड़ेंगे?

हमारे हाथों में आज हुकूमत आ गई है, अपने प्रधान आ गये हैं। आज मुख्य प्रधान यहां जवाहरलाल हैं। वह तो सच्चा जवाहर है, और उसने काफ़ी लोगों की सेवा की है। सरदार हैं, दूसरे हैं। क्या वे हमको नापसन्द हैं? आज कहें जवाहरलाल तो निकम्मा है, वह ऐसा हिन्दू कहाँ है? और हमको तो जैसा हम कहते हैं ऐसा ही करने वाला चाहिए कि जो मुसलमानों को छोड़ दे, उनको निकाल दे। तो ऐसा जवाहरलाल नहीं है, न मैं ही हूँ यह मैं क़बूल करता हूँ। मैं अपने को सनातनी हिन्दू मानता हूँ, तो भी ऐसा सनातनी नहीं कि सिवा हिन्दू के और किसी को हिन्दुस्तान में रहने नहीं दूँ। कोई किसी धर्म का हो, लेकिन हिन्दुस्तान का वफ़ादार है तो वह हिन्दुस्तानी है और उसको यहाँ रहने का उतना ही हक़ है जितना मुझको है। भले ही उसके जाति वालों की तादाद बहुत छोटी हो। धर्म मुझको यही सिखाता है। बचपन से मुझको सिखाया गया कि इसको रामराज्य कहो या ईश्वरीय राज्य कहो। कभी हो नहीं सकता है कि एक आदमी इस वक्त विधर्मी है इसलिये वह नालायक़ है, नापाक है। तो आप समझें कि गांधी भी तो कैसा हिन्दू है। गांधी के हाथ में ताक़त नहीं है, वह प्रधान नहीं है। जवाहरलाल

है तो उसे चाहो तो हटा सकते हो। सरदार है, कौन सरदार ? वह बारदोली का सरदार है। उसकी मानते हो ? तो उसके भी मुसलमान दोस्त पड़े हैं। उनके दोस्त इमाम साहब जो गुजरात में हमारी कांग्रेस के सदर थे मर गए। अब इमाम साहब के दामाद अहमदाबाद में हैं। मेरा ख्याल है वे डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस के प्रधान हैं। खासा आदमी है, बड़ा भला है। मैं तो उसे बहुत जानता हूँ। उसने इमाम साहब की लड़की से शादी की। वे इमाम साहब जो दक्षिण अफ्रीका से मेरे साथ आये थे अपना कारबार छोड़ कर अपनी बीवी को साथ लेकर आये और मेरे साथ रहे। वे मर भी गये, उनकी जवान लड़की बैठी है क्या मैं उसे छोड़ दूँ और कहूँ कि अब तू हमारे काम की नहीं है क्यों कि आखिर में तू मुसलमान है। मुसलमान है इसमें कोई शक नहीं। लेकिन वह भली है, अच्छी है, ऐसा मैं कह सकता हूँ। उसको पता नहीं है कि उसको जाना पड़ेगा। अगर सरदार उसे जाने दे तो पीछे वह कहाँ रहने वाली है। हम अपने हाथों में कानून न लें। और जो कानून होने वाला है वह सर्दार या जवाहरलाल करें। आर्डिनेन्स बनावें और पीछे वह प्रजा पर छोड़ दें, ऐसा प्रधान आज हो नहीं सकता। माना कि अंग्रेज़ों के समय वह सब पहले चला था, उन्होंने जो किया सो हम भी करें क्या ? हम जिसकी शिकायत आज तक करते रहे हैं वही शिकायत हमारे लिये की जाय ? ऐसा हम बर्दाश्त न करें। यही मैं तो कहना चाहता था।

*

मुद्रक : यूनाइटेड प्रेस, दिल्ली

प्रार्थना-सभाओं

में

गांधी जी के भाषण

दिल्ली, ८-१०-४७ से १४-१०-४७ तक

★ ★

अंक ४

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
मिनिस्ट्री आफ़ इन्फार्मेशन ऐण्ड ब्राडकास्टिंग
गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया

★

मूल्य—चार आने

भूमिका

महात्मा गान्धी की दिल्ली की प्रार्थना-सभाओं में दिये गये ७ भाषणों की पहली, ८ भाषणों की दूसरी और ७ भाषणों की तीसरी किस्त हम जनता के सामने उपस्थित कर चुके हैं। ७ भाषणों की यह चौथी किस्त है। इसी प्रकार महात्माजी के भाषणों के और भी सग्रह क्रमशः निकालने का प्रबन्ध किया गया है।

महात्मा जी के सन्देश की जनता को कितनी आवश्यकता है यह कहने की बात नहीं। भारतीय जनता का नैतिक स्तर ऊंचा उठाने और उसके हृदय में सद्भावना भरने में ये भाषण निश्चय ही सहायक सिद्ध होंगे।

* *

८ अक्टूबर, १९४७

एक सज्जन मेरे पास आते हैं, अच्छे हैं। वे देहरादून से आ रहे थे। ट्रेन में काफ़ी आदमी थे। तो किसी स्टेशन पर, मैं स्टेशन का नाम तो भूल गया, उनके डिब्बे में एक आदमी आगया। बाकी तो उस डिब्बे में सब हिन्दू थे, सिक्ख थे। किसी के हाथ में तलवार थी, किसी के छुरा था। उन्होंने नये आने वाले को देखा, किसी ने पूछा कि आप कौन हैं। वह तो बेचारा अकेला आदमी था, उसने कहा भाई मैं तो चमार हूँ। लेकिन उनको शक हुआ। उसका हाथ देखते हैं, तो उसका नाम हाथों में गुदा हुआ है। कभी लोग हाथों में अपना नाम लिखवा लेते हैं। तो वह तो मुसलमान साबित हो गया और किसी ने उसके छुरा भोंक दिया और पीछे जमुना में जो बीच में रास्ते में आती है उठा कर फेंक दिया। यह कार्यवाई तो की एक ही आदमी ने, लेकिन इतने आदमी थे, वे भी उनके गवाह रहे। मुझसे बात करने वाले सज्जन यह सब देख न सके और मुंह दूसरी ओर फेर लिया। मैंने तो उनको कहा कि अगर आपके दिल में रहम आगया था और आप उस चीज़ को ठीक नहीं समझते थे, तो आपने क्यों नहीं उस आदमी को कहा कि अरे ऐसी वहशियाना बात न करो। पचास साठ हिन्दू-सिक्ख उस डिब्बे में थे, उनमें एक बेचारा मुसलमान। यह कहां की इन्सानियत है कि उसको कोई मार डाले, और जमुना में फेंक दे। वह बिल्कुल मर गया था ऐसा तो न था, उसके छुरा भोंका गया था और वैसा ही फेंक दिया गया था। आपमें इतना रहम था, तो इतना आपने क्यों नहीं किया? क्यों नहीं उसको मरने से बचाया? उसने कहा कि मुझको दुःख तो हुआ, लेकिन मैं अपना फर्ज भूल गया। मुझको सूझा नहीं कि क्या करना चाहिये? तो मैंने कहा यह तो कोई अच्छी बात नहीं है, यह कोई इन्सानियत नहीं है। हम इतने लोग पड़े

हैं, एक हमारा मुसलमान भाई आता है, उसका इस तरह से खून कर देते हैं, फेंक देते हैं, ऐसा करने वाले का हाथ पकड़ो और रहम से मुहब्बत से कहो कि आप यह क्या करते हैं ? किसको मारते हैं ? उसने तो कोई गुनाह नहीं किया है। उसको आप न मारें। और अगर वह न माने तो उस भाई की जान बचाने के लिये आप अपनी जान कुर्बान कर दें, तो मुझे बड़ा अच्छा लगेगा। एक आदमी को पचास साठ मिलकर मार डाले। इसमें क्या बहादुरी है ? लेकिन इतने आदमी जमा हुए हैं, उसमें से एक आदमी को किसी ने मारने का इरादा कर लिया और वह उसको मार डालता है। तो सब बैठे देख रहे हैं उनके दिल में या तो यह ख्याल होता है कि चलो मार डाला अच्छा है। इसमें बात क्या है ? मैं कहूँगा कि जो लोग इस तरह सोचते हैं, वे बहुत भारी गलती कर रहे हैं। वे मारने वाले ऐसे भी लोग होते हैं जिनके दिलों में रहम तो है और वे मारने को अच्छा काम नहीं समझते, लेकिन चूंकि उनको अपनी देह प्यारी है, इसलिये वे कुछ नहीं कर सकते और वे भूल जाते हैं कि उनको ऐसे मौके पर क्या करना चाहिये था। इसमें भूलना क्या था ? एक आदमी इस तरह की वहशियाना हरकत करे, तो आप उससे कहें कि आप ऐसा मत करो। यह कितनी बुरी बात है कि जिन आदमियों को यह काम पसन्द नहीं था, वे भी उसके गवाह होते हैं। मैं आपको कहना चाहता हूँ क्योंकि मैंने नजरों से देखा है कि एक आदमी ऐसा बुरा काम करता है तो दूसरे आदमी जो खड़े रहते हैं वे उसको पसन्द भी नहीं करते लेकिन हिम्मत नहीं कर सकते कि आगे बढ़कर रोकें। एक भी भाई हिम्मत करके उठ खड़ा होता है और उसे रोकता है और कहता है कि अगर उसे मारोगे तो मैं तुम्हारा हाथ पकड़ लूँगा, नहीं मानोगे तो खुद मरूँगा लेकिन उसको नहीं मरने दूंगा, तो वह तो मैं समझूँगा। लेकिन अगर मेरे जैसा आदमी है, वह तो अहिंसा पर रहेगा, खुद मर जायगा, मार तो सकता नहीं, लेकिन उसकी जान अपनी जान देकर बचायेगा। मुझे तो इसमें कोई शक नहीं है कि अगर कोई इस तरह हिम्मत करता, तो वह आदमी बच जाने वाला था। और अगर उसे बचाने की कोशिश में अपना खून हो जाता तो वह तो सच्चा बहादुर आदमी साबित हो जाता। इसी का नाम सच्ची अहिंसा है। सच्ची अहिंसा यह नहीं है कि बलवान के सामने तो हम अहिंसा का उपयोग करें, लेकिन कमज़ोर पर हिंसा करें।

अंग्रेज़ों के लिये हमने अहिंसा का इस्तेमाल किया लेकिन आज हम हिंसा अपना रहे हैं। किनके साथ ? अपने भाइयों के साथ। तो अंग्रेज़ों के साथ जो हमने

अहिंसा को अपनाया, वह बहादुरों की अहिंसा नहीं थी। उसका नतीजा हिन्दुस्तान आज पा रहा है, और उसका नतीजा आज मैं भी पा रहा हूँ, आप भी पा रहे हैं। मैं कबूल करता हूँ कि मैं आपको सच्ची अहिंसा नहीं सिखा सका। मैं तो आपको बहादुर की अहिंसा बतलाता हूँ। आज यहाँ मुसलमान पड़े हैं, पाकिस्तान वहाँ हिन्दुओं के साथ बुरा करता है, तो हम भी यहाँ वही करें? वे क्या कोई बहादुरी का काम करते हैं। मैं तो कहता हूँ कि पाकिस्तान जो करता है, वह बुरा करता है और हम यूनियन में अगर उसकी नक़ल करते हैं, तो वह भी बुरा है। पीछे यह कहना कि किसने पहले किया, किसने बाद में किया, किसने कम किया, किसने ज़्यादा किया, यह तरीक़ा दोस्त बनाने का नहीं है। सच्चा तरीक़ा दोस्ती, का तो यह है कि हम हमेशा इन्साफ़ पर रहें और शरीफ़ बने रहें। इस तरह करने से जंगली और दीवाना भी आखिर में सुधर जाता है। हम इसमें नहीं जाना चाहते कि किसका गुनाह बड़ा है, और किसका छोटा और किसने पहले शुरू किया। ऐसा कहें, तो यह सब मैं जहालत समझता हूँ। वह दोस्ती का तरीक़ा नहीं है। जो कल तक दुश्मन थे, उनको दोस्त बनना है, तो भले ही कल तक उनमें दुश्मनी रही हो लेकिन आज जब उन्होंने दोस्ती कर ली है, तो पीछे वे सब कल की बात भूल जाते हैं। उसको याद क्या रखना था? दोस्ती का यह तरीक़ा नहीं है कि लड़ना होगा तो लड़ेंगें, उसके लिए भी तैय्यारी कर लें, और अगर दोस्ती हो गयी तो दोस्त बन कर रहेंगे। इस में से सच्ची दोस्ती पैदा नहीं हो सकती।

अब मैं दूसरी चीज़ पर आ जाता हूँ, और इस बारे में थोड़ा सा कह दूँ तो अच्छा है। आज दुनिया में अख़बारों की ताक़त बहुत बढ़ गयी है। जब एक मुल्क आज़ाद हो जाता है, तब पीछे उसकी ताक़त और भी बढ़ जाती है। आज़ादी के ज़माने में यह नहीं हो सकता है कि जो अख़बार निकालने वाले है, उनको सिर्फ़ इतनी रिपोर्ट देनी है, और यह ख़बर नहीं देनी है, वह सब बन नहीं सकता। मगर लोकमत ऐसे वक्त में बड़ा काम कर सकता है। अख़बार जो गन्दी बात कहते हैं, या झूठी बात कहते हैं, या दूसरों को उकसाने वाली बात लिखते हैं, या तो हुकूमत उनको बन्द करे और उन पर क़ानून लगावे, कोर्ट में चली जाय। लेकिन वहाँ जाने से हुल्लड़ मच जाता है, और काम बढ़ जाता है। हुकूमत ऐसा भी नहीं कर सकती। अंगरेज़ों का ज़माना दूसरा था। उनको क्या पड़ी थी? तिलक महाराज जैसे आदमी को पकड़ कर छै बरस के लिये सज़ा कर दी। अख़बार में उन्होंने कुछ दिया था, ऐसी कोई खास बात भी नहीं लिखी थी। तो भी उनको छै बरस की

सज़ा मिली। और पूरी सज़ा भुगतनी पड़ी। इस तरह से बहुतों को जेल जाना पड़ा। मुझको भी छै बरस की सज़ा हो गयी थी। ६ वर्ष रहा नहीं, यह दूसरी बात है। लेकिन सज़ा हुई छै बरस की, क्योंकि मैंने यंग इण्डिया में एक लेख लिखा था। कोई बुरा नहीं लिखा था, लेकिन सज़ा मुझ को दी गयी। आज आज़ादी के ज़माने में यह सब नहीं हो सकता। आज तो जो अख़बारनवीस हैं, एडीटर हैं, और जो अख़बारों के मालिक हैं, उनको सच्चा बनना है, लोगों का सेवक बनना है। अख़बारों में गलत और झूठी ख़बरों को न आने देना चाहिये और न ही लोगों को उकसाने वाली बातें छापनी चाहिये। आज आज़ादी के ज़माने में तो यह पब्लिक का फ़र्ज़ हो जाता है कि गन्दे अख़बारों को न पढ़े, उनको फेंक दे। जब उन्हें कोई लेगा नहीं तो वे अपने आप ठीक रास्ते पर चलने लगेंगे। आज मुझे बड़ी शर्म लगती है यह देख कर कि गन्दी और ग़लत ख़बरों को पढ़ने की लोगों की आदत सी हो गयी है। ऐसे अख़बार आज चलते हैं। एक चीज़ मैंने देखी वह रिवाड़ी का क़िस्सा है। एक अख़बार ने लिख दिया कि रिवाड़ी के मेव लोगों ने जो वहाँ पड़े थे, सारे हिन्दुओं को मार डाला, मकान जला डाले और माल, मवेशी लूट लिये। मेवों ने इतना बुरा काम किया यह ख़बर देख कर मुझे बड़ी चोट लगी दूसरे रोज़ अख़बार में रिवाड़ी के बारे में कोई ख़बर ही न थी। यह सब बनाई हुई बात थी। मैं परेशान था कि उस अख़बार में रिवाड़ी की बात कैसे आ गयी। मैं तो कहूँगा कि जिस सज्जन ने रिवाड़ी की बातें लिखी थी, उसे यह साफ़ करना चाहिये, अगर ग़लती की थी तब भी और अगर जान-बूझ कर ऐसा लिख दिया था तो भी उसको माफ़ होना चाहिये। उसने खुदा के सामने बड़ा गुनाह कर लिया है, ऐसा नहीं होना चाहिये था। ऐसा वह करे तो हमारा काम आगे नहीं बढ़ सकता है। हकूमत तो आज अख़बार वालों की चौकसी नहीं कर सकती, वह चौकसी तो मुझ को करनी चाहिये, आपको करनी चाहिए। हम अपने हृदय को साफ़ करें, गन्दी चीज़को पसन्द न करें। गन्दी चीज़ को पढ़ना छोड़ दें। अगर हम ऐसा करेंगे तो, अख़बार अपना सच्चा धर्म पालन करेंगे। एक बात और कह कर मैं खतम करूँगा।

जैसे अख़बार हैं, वैसे ही हमारी मिलिटरी है और पुलिस है। मिलिटरी और पुलिस सबके दो हिस्से हो गये? वह उन्होंने नहीं किया यह मैं क़बूल करता हूँ, लेकिन हो गया। तो यहाँ की जो मिलिटरी है, उसमें हिन्दू हैं सिक्ख हैं। और मुसलमान फ़ौज, पाकिस्तान में चली गयी है। अगर हिन्दू, सिक्ख फ़ौज और पुलिस अपने दिल में ऐसा समझें कि हम तो हिन्दू हैं, सिक्ख हैं, इसलिये हिन्दू की

ही रक्षा करेंगे। हिन्दू है उसने एक गुनाह किया है, तो उसको छिपायेंगे। जो मुसलमान हैं, तो उनके लिये हम सिपाही कहाँ हैं, मिलिटरी कहाँ है, उनकी हम रक्षा क्यों करें? ऐसा हमारे लोग समझ लें, और पाकिस्तान में जो मुसलमान फ़ौज है, पुलिस है वह ऐसा समझे कि जो हिन्दू है उसको मारो, उसकी रक्षा करना हमारा धर्म नहीं है। ऐसा अगर हो तो हिन्दुस्तान का भला नहीं हो सकेगा। हुकूमत के पास तो पुलिस है, फ़ौज है। लेकिन मुझे न तो पुलिस चाहिये न मिलिटरी चाहिये। मैं तो लोगों से कहूँगा कि आप हमारी पुलिस बन जाइये, फ़ौज बन जाइये हिन्दू अगर यहाँ मुसलमानों को मारते हैं तो उन्हें बचाना है। हमें उस काम से हटना नहीं है। मैं मर भी जाऊँ लेकिन पीछे नहीं हटूँगा। तो मेरी हुकूमत तो ऐसी है। यह कोई मैं हवा में बात नहीं कर रहा हूँ सच्ची बात है, सो कहता हूँ। तो वही बात मैं हुकूमत की मिलिटरी और पुलिस से कहता हूँ। उनका पहला धर्म यह हो जाता है कि मुट्ठी भर भी मुसलमान अगर यहाँ पड़े हैं, तो उनकी रक्षा करनी है। अगर उन पर जो यहाँ पड़े हैं, हिन्दू हमला करते हैं, सिक्ख हमला हैं, तो पुलिस और फ़ौज को उनको बचाना चाहिये। अपनी जान को ख़तरे में डाल कर भी उनको बचाना चाहिये। तब वह सच्ची पुलिस है, सच्ची मिलिटरी है। हिन्दुस्तान को जो आज़ादी मिली है, वह भी एक अजीब किस्म की है। सारी दुनिया ऐसा कहती है और मैं भी कहता हूँ कि इस तरह से किसी भी हुकूमत ने किसी मुल्क की आज़ादी वहाँ के लोगों को नहीं दी है। बिना किसी लड़ाई झगड़े के और खून ख़राबी के हमने अपनी आज़ादी पायी है। तो ज़रूरी है कि हमारी जो मिलिटरी हो, पुलिस हो, वह ऐसी न हो कि जेब भरने के लिये काम करे। उनको जितना मिलता है, उससे सन्तोष रखना चाहिये। उनको यह नहीं सोचना कि मीठाई मिले, जलेबी मिले और दूसरे स्वादिष्ट भोजन मिलें। सिपाही तो वह है जो सूखी रोटी नमक मिलता है उसको खाकर पेट भर लेता है और अपने धर्म का पालन करता है। लेकिन अगर वह समझे कि दूसरे आदमी का लड़का तो कालिज मदरसे में जाता है, उसके लिये तो मोटर रहती है बाईसिकल रहती है और क्या क्या चीज़ें नहीं रहती हैं और हमारे पास तो, कुछ भी नहीं है इसलिये रिश्वत लेना है, प्रजा को खाना है। तब वह प्रजा के सेवक नहीं रहते। इस कारण मैं कहता हूँ कि रोटी का टुकड़ा खा कर जो मिले उसमें राज़ी रहकर अपना काम बिना धर्म के भेदभाव के करे वही सच्चा फ़ौजी और सिपाही है। वह कभी ऐसा न सोचे कि मैं हिन्दू हूँ इसलिये मुसलमान को मारूँ। मुसलमान अगर बदमाशी करे, तो उसे

पकड़े और सज़ा दिलवाये, वह दूसरी बात है। लेकिन क्या जो बेगुनाह आदमी ह, मगर मुसलमान है, उसको हम यहाँ इसलिये मारें कि दूसरे मुसलमान जो वहाँ हैं वे बिलकुल बदमाश हैं। अगर कोई भी हिन्दू ऐसा करता है तो सिपाही का धर्म हो जाता है कि वह उस मुसलमान की रक्षा करे। तब मैं कहूँगा कि वह जो हिन्दुस्तान का नमक खाता है, उसको सही अदा करता है। और अगर हमारी पुलिस और मिलिटरी ऐसा नहीं करती है तो वह नमकहराम बनती है।

ऐसा मैं पाकिस्तान की मिलिटरी और पुलिस के लिये भी कहूँगा। लेकिन वहाँ तो मेरी कुछ चलती नही है। मैं किस को कहूँ किस को न कहूँ। लेकिन मैं जो यहाँ कहता हूँ अगर यहाँ वैसा होता है, तो वहाँ अपने आप बाद में वैसा होना है, इस बारे में मुझे कोई शक नहीं है। तो आज तो लोगों के दिमाग़ बिगड़ गये हैं, वे कहते हैं कि वहाँ हमारे भाइयों पर ऐसा होता है, तो हम यहाँ भी वैसा क्यों न करें? लेकिन ऐसा कहना इनसानियत नहीं है। इसलिये मैं तो जब तक मेरे में साँस हैं, चीख़ चीख़ कर यही कहता रहूँगा कि हम अपने को साफ़ रक्खे, शरीफ़ बने रहें, हमारे अख़बारों को शरीफ़ रहना है, मिलिटरी और पुलिस है, उसको शरीफ़ रहना है। यह चीज़ अगर नहीं रहती है तो हमारी हुकूमत चल नहीं सकती है और पीछे हम बेहाल हो जायँगे। पाकिस्तान में कुछ भी हो, हमें शरीफ़ रहना है। वह दीवाना बनें, तो भी हमें तो शरीफ़ ही रहना है। तो मैं कहता हूँ हमें शराफ़त हर हालत में अपने में रखनी है। इतना तो करो। अगर मेरी न सुनी तो मैं कहता हूँ कि सब बेहाल होने वाले हैं।

*

९ अक्टूबर, १९४७

हमेशा मैं किसी न किसी रूप में वही बात कह देता हूँ। लाचार ऐसा हूँ इसी काम के लिये तो यहां पड़ा हूँ। मुझे कहना चाहिये कि क्यों कि आप उदार हैं। भले हैं इसलिये शांति से मेरी बात सुन लेते हैं। इसलिये मैं आपका उपकार मानता हूँ। धन्यवाद ही दे सकता हूँ। लेकिन मेरे में ऐसा तो है नहीं कि चलो मैंने सुना दिया और लोगों ने शांति से सुन लिया और खतम हुआ, उस से मेरा पेट नहीं भरता। हमारे इतने लोग परेशान पड़े हैं। हिन्दुस्तान में बहुत जगह पड़ी हैं। उनके लिये क्या करना चाहिये? उन लोगों का धर्म क्या है? मुसलमान का धर्म क्या है? जो लोग एक किस्म की खराब आबोहवा पैदा करते हैं उन्हें हमें समझना है समझाना है तब तो पीछे जो लोग दूसरी जगह पड़े हैं उन तक भी मेरी आवाज़ पहुँचेगी।

मेरे पास कुछ लोग जो लोग परेशानी में हैं वे आ गये थे। वे लोग बड़े अच्छे हैं। पाकिस्तान के पश्चिमी पाकिस्तान के हैं। मेरे पास दस बारह रोज पहले आ गए थे। पहले मैंने कहा मुझे सब कुछ लिख कर दो। उन्होंने लिख कर बयान दे दिया। ताकि मुझ से कुछ हो सकता है तो करूँ। उनका कहना यह था कि जो पाकिस्तान में पड़े हैं उन लोगों के आने का कुछ प्रबन्ध हो, नहीं तो वे आ नहीं सकते।

रास्ते में खतरा रहता है। उनके पास अनाज है पर अनाज साथ में कैसे ला सकते हैं? रखने कौन देगा? हवाई जहाज में आ जायं, मोटर से आ जायें ऐसा ही रास्ता आज हो सकता है। ट्रेन में आज बड़ी दुश्वारियां हैं। जैसे पहले चलती थीं ऐसे ट्रेनें चलती भी नहीं। जो अब तक आ नहीं पाये हैं उनका पीछे क्या हाल हुआ

वह भी पता नहीं। ऐसी हालत में वे आ जायें तो अच्छा है। लेकिन मैं सोचता हूं कि हम हैं कहाँ ? और कहां जा रहे हैं।

अब मैं ज़रा मन को बंगाल की ओर ले जाऊँ, वहां भी तो मैंने काफ़ी काम किया है। पूर्वी बंगाल में भी और पश्चिमी बंगाल में भी। पूर्वी बंगाल में तो नोआखली है जो आज पाकिस्तान में है। वहां मैं चला गया था और वहां बड़ी लम्बी पैदल यात्रा की। रोज़ अलग-अलग जगह पर चला जाता था। वहां के लोगों से बातचीत करता था। हिन्दू बहनों-भाइयों में जो डर भरा था उसे निकालता था। राम नाम से निकालना ठहरा। राम नाम लेते हुए कोई मार डाले तो मर जायें। ऐसा हमें क्या जीने का मोह पड़ा है ! क्या ज़िन्दा रहने के लिये राम नाम को छोड़ दें ? डर के मारे राम नाम न लें ? औरतें अगर कुमकुम लगाती हैं तो वह न लगाएँ ? वहां जो औरत विधवा नहीं होती वह शंख की चूड़ियां पहनती है। यह सौभाग्य की निशानी है। जो विधवा बन जाती हैं वे नहीं पहनतीं। तो क्या डर के मारे शंख की चूड़ी न पहनें हालां कि वे विधवा नहीं हैं ? जो शुभ चिन्ह के रूप में शंख की चूड़ियाँ पहनती थीं वे आज पहनने से झिझकती थीं तो मैंने उनको समझाया कि ऐसे नहीं करना चाहिये। वे समझ गईं और कहा कि अब पहिनेंगी। अब मैं सुन रहा हूं कि वहां से आहिस्ते-आहिस्ते लोग चले आते हैं। इसका मुझे पता नही चला वहां तो मेरे आदमी पड़े हैं। शायद मैंने आपको कहा है कि जो अच्छे आदमी मेरे साथ थे वे सब वहां पड़े हैं। प्यारेलाल वहां पड़े हैं, खादी प्रतिष्ठान के लोग वहां पड़े हैं, कनु गांधी वहां पड़े हैं, ऐसे काबिल लोग वहां पड़े हैं। सतीशचन्द्र भी वहां पड़े हैं। वे सब लोगों को हिम्मत देते हैं लेकिन फिर भी लोग भागे चले आते हैं, वहां लोगों को परेशानी है, होनी भी चाहिये। लेकिन वहां से भागना क्या था ? कहां से भागेंगे और भाग कर वे करेंगे क्या ? वे सोचें। हमारे यहां कुरुक्षेत्र में २५००० शरणार्थी पड़े हैं, औरतें हैं मर्द हैं। कुछ औरतें हैं जिनके बच्चे होने वाले हैं। उनमें से कोई मर जाये तो बड़ी बात नहीं होगी क्योंकि वहां उनका इलाज आज कौन करेगा ? वहां मकान भी नहीं हैं, लोग परेशान हैं, क्यों कि वे पंजाब से भाग कर आये हैं। तो मैं अपने दिल मे सोचता हूँ कि मुझे उन लोगों को क्या सलाह देनी चाहिये ? जितने आए हैं इससे ज्यादा तो अब भी पड़े हैं। हम कोई दस बीस की तादात में हों, लाख दो लाख की तादात में हों तो उन्हें समझा सकें संभाल सकें। करोड़ों की तादाद में इस बड़े मुल्क में लोग पड़े हैं। वहां लोगों को तबदील करना, एक जगह से दूसरी जगह पर ले जाना छोटीबात मत समझो। इस

में परेशानी इतनी है कि वे बिचारे बगैर मौत के मर जाते हैं, भूखों मर जाते हैं। हुकूमत सबको सब चीज़ पहुँचाने की कोशिश करे तो भी पहुँचा नहीं सकती है। चाहे कितनी भी कोशिश करे। हकूमत के पास आज जो सिपाही हैं मिलिटरी है, सब का इन्तज़ाम अंग्रेज़ों के पास जैसा था वैसा तो हो नहीं सकता। होना नहीं चाहिये। हुकूमत के पास जो फौज है, वह लोगों की मारफत काम चला सकती है। लोग चाहें तो वे हकूमत के हाथ हैं पैर हैं। अगर वे उन लोगों को मदद न दें और उनके पास से मदद की उम्मीद करे तो वह मिल नहीं सकती। यह मैं वज़ीरों से भी कहता हूँ। मैं देखता हूँ कि हुकूमत बेफिकर नहीं है। मैं करीब-करीब हमेशा उनको मिलता हूँ। वे लोग भी परेशान हैं यह मैं आप को कहना चाहता हूँ। मगर वे करें क्या? आखिर में हकूमत तो वे जानते नहीं थे। कांग्रेस चलायी मगर वह तो मुट्ठी भर की थी। हमारे दफ़्तर में जितने नाम रजिस्टर हैं उतने भी तो कभी हाजिर नहीं हुये और हमारे दफ्तर में जितने हैं वह तो मुट्ठी भर आदमी हैं, थोड़े पैसों में काम करना रहा। आज करोड़ों का काम करना है। करोड़ों रुपया पड़ा है, और हजारों की तादाद में जो आदमी पड़े हैं उनका थोड़ों की मारफत काम करना है।

यह काम कैसे हो सकता है। और कैसे पच्चीस हजार आदमियों को समय पर खाना पहुँचा सकते हैं। वह सोचता है हजारों नये आदमी रोज आते हैं, तो वे भूखों रहते हैं। कपड़ा पूरा नहीं है, और जाड़े के दिन आ रहे हैं। जो हाल यहां का है वही हाल आप समझें कि पाकिस्तान में है। पाकिस्तान में कोई जन्नत है और हमारे यहां दोज़ख है ऐसा नहीं है। या यह कहो हमारे यहां जन्नत है तो वह है नहीं यह मैं नजरों से देखता हूँ, और पाकिस्तान में दोजख हो ऐसा भी नहीं। आखिर में दोनों जगहों में इन्सान हैं कोई अच्छा है कोई बुरा है लेकिन उस अच्छापन और बुरापन का हिसाब कौन निकाले। निकाल कर हम क्या पायेंगे? मेरे सामने तो बड़ा प्रश्न ही यह हो जाता है, और आपके सामने भी यही होना चहिये, कि ऐसे लोग जो पड़े हैं। जिन्हें आना है या जो आ गए हैं उनकी जो हो सके हिफाजत करें। लेकिन जो आये हैं उनके लिये भी हमारी कोशिश यही होनी चाहिये कि वे आखिर अपने घर चले जायें। मैं आप को कहता हूँ कि उन्हें अपनी जगह पर जाना है। मैं तो जानता हूँ कि जो देहात में रहने वाला आदमी है वह अपने देहात को छोड़ कर नहीं जायेगा। एक एकड़ जमीन हो तो उसके पीछे वह ख्वार हो जायगा। हज़ारों की तादाद में लाखों की तादाद में लोग चले जायें तो कहाँ जायें, कैसे रहें, जाते-जाते तो रास्ते में मरते जाते हैं। इस लिये मैं कहता हूँ कि हमें मरना है तो हम मरेंगे।

किसी जगह पर पड़े हैं तो वहां पड़े रहेंगे। पीछे क्या होता है देखेंगे। पाकिस्तान रहते हैं तो वह देखने वाला नहीं है ऐसा नहीं। देखने वाला ईश्वर तो है, और दूसरा कोई है या नहीं हुकूमत तो है।

अभी बंगाल में मैंने कहा हमारे दोस्त सब पड़े-हैं। तो जो हुकूमत पश्चिमी बंगाल में है वह पूर्वी बंगाल की हुकूमत को लिखे, कि यहां क्या है। लेकिन वहाँ के लोग वहाँ भी क्या हर जगह पर, जो हुकूमत कहे उस की तामील नहीं करते। अफसर लोग उस की तामील नहीं करते। उनके दिल दिल में ऐसा गुमान आ गया है अब तो आज़ादी आ गई है अब कौन है हमें पूछने वाला। अंगरेज़ थे। वह तो गए। उन की लाल आँखें देख कर तो यह काँप उठते थे। अब क्या हो गया है? अंगरेज़ों के सामने काँपते थे इस का मैं गवाह हूँ। लेकिन आज सब को लगे कि हम को कौन पूछने वाला है? हम अपने जनरल हैं सिपाही हैं, ऐसी आज़ादी हम पा गये हैं उस आज़ादी में अच्छा लगे सो करेंगे तो मैं आप को कहना चाहता हूँ कि इस तरह काम नहीं चल सकता।

दोनों हुकूमतें मानती हैं कि हमें इन्साफ करना ही है तो पीछे जोर आ जाता है। लेकिन माना कि हुकूमत इन्साफ नहीं करना चाहती तो क्या होगा? आखिर हो क्या सकता है? मैं तो लड़ाई करने वाला आदमी हूं नहीं, मैं तो लड़ाई से भागूँगा। लेकिन जिस के पास हथियार रहते हैं, सिपाही या पुलिस रहती है, मिलिटरी रहती है, उस को लड़ना नहीं तो दूसरा क्या करना है? मैं तो कुछ कर नहीं सकता हूँ, लेकिन जिसको करना है, उसे तो करना ही है। तब लड़ना होगा। मेरे धर्म के आदमी जहाँ पड़े हैं, वहाँ वे परेशान पड़े नहीं रह सकते हैं। तो हमको कुछ करना होगा। वह तो दोनों हुकूमत के लिये मैं बात करता हूं। दोनों हुकूमत के लिये होता है। उसमें जो जालिम हैं उसको यह हक नहीं कि दूसरे जालिम को सज़ा दे। जो हुकूमत लोगों को अच्छी तरह से नहीं रखती या नहीं रख सकती वे दूसरी हुकूमत का इसी दोष के लिये सामना करेंगे क्या? ऐसा कोई कर सकता है? इन्साफ के लिये लड़ते-लड़ते हम मर गए, हुकूमत मर गई तो मैं समझ सकूंगा। लेकिन हम आज इस तरह डर के मारे मर जायें मरते-मरते वहाँ से भाग आवें? आधे तो आते आते मर जाते हैं। पीछे आते हैं तो लेकिन रखना कहाँ? उनको खाना कहां से दोगे? वे क्या बेकार बैठे रहेंगे? बेकार न बैठें तो उनको काम धन्धा देना होगा। इस देश में आपके करोड़ों लोग भूख से मरते हैं, करोड़ों बेकार बैठे हैं, उनके लिये तो हम कुछ कर नहीं पाते तो जो लोग बाहर से आते हैं बाहर से नहीं किसी दूसरे प्रांत से

आये हैं, परेशानी में पड़े हैं उनके लिये काम कहां से निकालोगे? वह जो पेशा करते थे, वह कैसे होगा, वे कैसे करेंगे और क्या करेंगे? संकट यह बड़ी है, इसमें से खराबी पैदा होती है, वह खराबी मैं जो बताता हूँ, उसमें हो नहीं सकती और पीछे लोग बहादुर बनते हैं। लोग मरने का इल्म सीख जाते हैं। मरने का इल्म सीख ले तो हमारा भी भला है और जगत का भी भला है। मैंने आपको जो उपाय बताया है वह हम हिन्दुस्तान को समझा दें तो सब का भला है हम बहादुर बनते हैं और पीछे सारा जगत हमारी तारीफ़ करने वाला है, उसमें मेरे दिल में कोई सन्देह नहीं।

★

१० अक्टूबर, १९४७

आज भी काफी कम्बलियाँ वगैरह आ गई हैं। थोड़े भाई पैसे भी दे गये हैं। बड़ौदा से एक तार भी आया है कि हम काफी कम्बलियाँ यहाँ से भेज सकते हैं। मेरा ख्याल है कि उन्होंने लिखा है कि आठ सौ कम्बल तो तैयार हैं, लेकिन यहाँ रेल वाले ले नहीं सकते। ठीक है कि आज रेल पर इतना बोझ पड़ा है कि हर कोई कुछ भेजना चाहे तो वह नहीं हो सकता। हो सकेगा तो मैं यहाँ की हुकूमत के पास से चिट्ठी ले लूँगा कि वहाँ से कम्बलियाँ आ जायँ। तब हमारे पास ठीक-ठीक सामान तैयार हो जायगा। पूरा तो अभी नहीं हुआ है लेकिन, मेरी उम्मीद ऐसी है कि भगवान किसी न किसी तरह से वह पूरा कर देगा, और कोई ठण्ड के मारे परेशान न होगा।

अभी एक बहन ने अंगूठी भेजी है उसका भी आज तो मैं यही उपयोग कर सकता हूँ कि अंगूठी को इसी काम में लगा दूँ और ऐसा ही करने की चेष्टा होगी।

अब हमारे सामने एक गहरा प्रश्न है जिसके बारे में मैंने तो काफी कह दिया है। खुराक की तंगी है और इसलिये परेशानी होती है। आज़ादी तो मिली लेकिन आज़ादी मिलते ही हमारी परेशानियाँ बढ़ गई हैं ऐसा हम महसूस करते हैं। मुझे लगता है कि अगर हम सच्ची आज़ादी को हज़म कर लेते हैं तो ऐसी परेशानी नहीं होनी चाहिये। सच्चे आज़ाद लोग किस तरह से चलें? हमारी आज़ादी भी कैसी कीमती आज़ादी है कि जिसमें हमको किसी के साथ सोल्जर जैसे लड़ते हैं ऐसी लड़ाई नहीं करनी पड़ी। लड़ाई तो एक किस्म की थी लेकिन उस लड़ाई की सारी दुनिया तारीफ़ करती है। उस लड़ाई के अन्त में हम को आज़ादी मिली तो उस आज़ादी की कीमत हमारे पास बहुत ज़्यादा होनी चाहिये लेकिन है नहीं। यह हमारी

कमज़ोरी है। तो मैं क्या पाता हूँ कि जो मैंने बात कही है तो वह बड़ी सीधी है और बिलकुल व्यवहार की बात है। यानी बाहर से खुराक नहीं मंगवाना। ऐसी व्यवहार की बात सुनते ही लोग काँप क्यों उठते हैं? कहते हैं आदत पड़ गई है। आदत तो पड़ी है पर वह तो कई बरसों की नहीं। वह हमारी आदत कहीं भी नहीं जा सकती है कि हमको कोई रोटी खिलावे तो हम खायें। हमारे लिये ऐसा इन्तजाम बने कि हमें छः आउंस, आठ आउंस, बारह आउंस अनाज जो कुछ भी हो उतना अनाज हमें मिले तब हम खा सकते हैं और उसके लिये नई-नई चिट्ठियाँ लिखें। वह तो व्यवहार के बाहर की बात हो गई। जो मैं कहता हूँ वह बिलकुल व्यवहार की बात है। और उसमें परेशान क्या होना था। हिन्दुस्तान जैसा बड़ा मुल्क जिसमें करोड़ों की तादाद में हम पड़े हैं, ज़मीन भी हमारे पास काफी पड़ी है, ईश्वर की कृपा से पानी भी बहुत है। ऐसे स्थान हैं हिन्दुस्तान में जिस जगह पानी नहीं मिलता। ऐसे रेगिस्तान पड़े हैं यह मैं जानता हूँ लेकिन ऐसा नहीं कहा जा सकता कि हिन्दुस्तान में किसी जगह पानी मिलता ही नहीं है। तो हमारे पास पानी पड़ा है, ज़मीन पड़ी है, करोड़ों की तादाद में लोग पड़े हैं हम क्यों परेशान बनें।

मेरा तो कहना इतना ही है कि लोग इसके लिये तैयार हो जायँ कि हम अपने परिश्रम से अपनी रोटी पैदा कर लेंगे। रोटी खाने के लिये अनाज पैदा कर लेंगे। इससे लोगों में एक किस्म का तेज पैदा हो जाता है और उस तेज से ही आधा काम हो जाता है। कहा जाता है और वह सच्ची बात है कि मौत के डरसे जितने आदमी मरते हैं उससे बहुत कम सच्ची मौत से मरते हैं। एक आदमी को ऐसा हो गया कि मैं तो आज चला, कल चला। किसी आदमी को क्यों मुझको ही ले लो। मुझे खाँसी हो गई तो खाँसी के कारण मैं समझ लूँ कि मैं तो अब मर जाऊँगा तो मरना तो जब है तब मरूँगा, वह तो भगवान के हाथ में पड़ा है, लेकिन मैं अगर आज से परेशान हो जाऊँ और ऐसा मान लूँ कि मैं तो अब मरा तो वह बेमौत मरना है। और रोज मरना, अब चला हाय! अब क्या होगा, तो इस तरह जो मेरे समीप में लोग पड़े हैं उनको भी परेशान करूंगा और मैं भी परेशान हूँगा और हमेशा सूखता जाऊँगा। हमेशा रोता ही रहूँगा कि अब मैं चला। उससे अच्छा तो यह है कि जब तक हमको मौत नहीं आती तब तक हम आराम से पड़े रहें और समझें कि कोई हमको मारने वाला नहीं है, कोई मारने वाला है तो ईश्वर है। जब उसका जी चाहेगा उठा लेगा। एक तो यह चीज़ कि हम मौत का डर छोड़ देते हैं तो हमको हमारी परेशानी भी छोड़ देती हैं। इस तरह से मैं कहता हूँ कि जब हम यह करेंगे, तब

हम परेशान न होंगे किसी को यह नहीं सोचना चाहिये कि हम किसी की मेहरबानी से अपनी खुराक पावें, बल्कि हम अपनी मेहनत से उसे पैदा करें, तभी मैं कह रहा हूँ कि हम बगैर मौत के न मरें। आज जो चिटें मिलती हैं, राशनिंग होती है और इसी तरह के जो तरीके हमें बेमौत मारने के हैं, उनको हम छोड़ दें। यह तो खुराक की बात है।

ऐसी ही बात कपड़ों की है। मैंने तो कह दिया है कि अब जितना कपड़ा मिलता है, उससे चौगुना मिल सकता है, 'हमारे मुल्क में कपड़ों की तंगी कैसी ? मेरा तो ऐसा विश्वास है कि खुराक की तंगी तो थोड़ी सी हो भी सकती है, लेकिन कपड़ों की तंगी इस हिन्दुस्तान में नहीं होनी चाहिये। क्यों नहीं होनी चाहिये ? क्योंकि हिन्दुस्तान में जितनी रुई पैदा होती है वह हमको जितनी कपड़ों के लिये रुई चाहिये उससे बहुत अधिक है। हिन्दुस्तान में कातनेवाले, बुनने वाले, इतने काफ़ी पड़े हैं कि अपने आप कात सकते हैं और सूत को बुन सकते हैं और आराम से पहन सकते हैं, तब तो पीछे हम बिल्कुल आज़ाद बन जाते हैं... खाने के लिये, कपड़े के लिये, और मिल से भी हम आज़ादी पा लेते हैं। आज तो नहीं पायी, और अभी पा नहीं सकते तो उसमें हमारा अनजानपन है। मेरा ख़्याल था कि हम ऐसा करेंगे। लेकिन आज तो वह नहीं है, वह ज़माना तो चला गया कि जब मैं सारे हिन्दुस्तान में घूम-घूम कर खद्दर का प्रचार करता था। बहनों को कहता था कि कातो, जितना कात सकती हो उतना कातो। उन्होंने कताई की भी, लेकिन काता बिना समझ के। उन्हें मज़दूरी की परवाह नहीं थी, वह कातती थीं और कपड़े बनवा लेती थीं। यह होता था लेकिन आज तो शक्ल दूसरी है। आज तो तुम्हारे पास कपड़ा ही नहीं है। तो मैं तो कहता हूँ कि अब हम अपने कपड़ों के लिये सूत पैदा करें, कातें और उसको बुनवा लें और बुनें। अपने आप बुनने में कोई तकलीफ़ तो है नहीं। लेकिन वह भी न करें तो क्या करें ? हाँ, तो जो मैं बात कर रहा था उसमें से नतीजा यह आता है कि लोग तो जो कपड़े की दूकानें पड़ी हैं वहाँ चले जायँ, कपड़ा ले लें। हुकूमत है वह भी मिलों के पास से कपड़ा ले और पीछे लोगों में बाँटना शुरू कर दे। इसके अलावा जो लोग कर सकते हों वह एक, दो महीने के लिये, चार महीने के लिये, वह व्रत ले लें कि हम कुछ कपड़ा लेने वाले नहीं हैं। कपड़े के लिये खद्दर चाहिये। छींट वगैरह जो महीन कपड़े हैं वह न लें। हम इतने महीने तक वह न लेंगे, इसका मतलब तो यह होता ही नहीं कि हम नंगे रहने वाले हैं। इतने में खादी तैयार कर लेंगे तो जाड़े के दिनों में झंझट से छूट जायँगे। यहाँ

कम्बल की बात तो नहीं है। यहाँ तो इतनी ही बात है कि हमें पहिनने के लिये जो खद्दर चाहिये वह खुद बना लेंगे, बाजार से नहीं खरीदना चाहते हैं इतना हम करें तो कपड़े का दाम एकदम गिर जाता है। आज तो कपड़े का बाज़ार भी गरम होता जाता है। सभी बाज़ार गर्म होता जाता है। थोड़ा कपड़ा तो हमें चाहिये, कमीज़ बनवाना है, कुर्ता बनवाना है, उसके लिये थोड़ा गज कपड़ा तो चाहिये, तो खद्दर लो। और मैंने कहा है कि चाहिये तो यह कि वह खद्दर हम अपने हाथ से बना लें। तय कर लें कि कपड़े की दूकान पर न जायेंगे। ऐसा हम व्रत लेकर बैठ जायँ कि इतने महीने तक नहीं खरीदेंगे, तो मैं कहता हूँ कि सब झंझट निकल जाता है, और कपड़ों के लिये और खुराक के लिये हम आज़ाद हो जाते हैं। दूसरा क्या होता है कि लोगों में मेरी समझ में आत्म-विश्वास आ जाता है और लोग स्वावलम्बी बन जाते हैं, और वह समझते हैं कि कपड़े की तंगी हमें क्या होने वाली है। हम तो कपड़ा अपने लिये खुद पैदा कर लेंगे, करवा लेंगे। हमारी अपनी खुराक है वह पैदा कर लेंगे, या तो करवा लेंगे। यह सब करें तो उसमें से एक बड़ा भारी बुलन्द नतीजा आ जाता है हम आज़ाद तो बने मगर राजनीतिक अर्थों में आज़ाद बने। हमारी करोड़ों की आर्थिक स्थिति आज सही नहीं हो गई। वह हम महसूस नहीं करते। पीछे महसूस करेंगे जब यह समझें कि अब हमारे यहाँ हम खुराक पैदा कर लेते हैं, उसका दाम हम जितना चाहें उतना ले लेते हैं, कपड़ा हम अपने आप बना लेते हैं। रुई तो पड़ी है। या तो कहीं मिलों से ले लेते हैं, कपड़ा मिलों में मिलने की कोई गुंजाइश नहीं है ऐसा समझ लेना चाहिये, कुछ भी हो लेकिन कम से कम इतना तो समझें कि हम परेशानी उठाने वाले नहीं हैं। तो हम कम से कम आर्थिक आज़ादी पा जाते हैं। और जो गरीब लोग हैं उनको भी पता चलता है कि हमको आज़ादी मिल गई है। इतना काम हम करें पीछे इसका दूसरा नतीजा खुद ही आ जायगा।

आज हम आपस-आपस में झगड़ते हैं लेकिन झगड़ा करने के लिये फ़ुर्सत तो होनी चाहिये। जब हम काम में गिरफ़्तार हो जायेंगे और सब मजदूर जैसे बन जायेंगे तब एक मिनट भी हमको न झगड़ा करने को रहेगा न किसी से मार-पीट करने को। खाना तो हमारे पास है। पहिनना, उसका भी हमारे पास इन्तज़ाम है। हम शराबखोरी छोड़ दें, जुआ खेलना छोड़ दें। इस तरह से सिलसिलेवार हम सीधे चलते जाते हैं, तो मैं कहता हूँ पीछे कोई दोष ही हम में नहीं रहता। ऐसा अपने आप हम महसूस कर लेते हैं कि अब हम आपस-आपस में लड़ेंगे ही नहीं। न कोई मुसलमान रहा न हिन्दू रहा। कोई बदमाशी करेगा, तो उसका जवाब हम दे देंगे।

उसके साथ लड़ना है तो लड़ेंगे। लेकिन आज हम क्यों बग़ैर मौत से मरना शुरू कर दें ?

इसलिये मैं तो कहूँगा कि जो चीज़ मैंने आपको सिखा दी है और सुनाने की चेष्टा की है वह अगर अच्छी तरह से आपके दिलों में जम जाय, और उस पर चलने का फैसला हम करें तो मैं कहता हूँ कि हम बहुत ऊँचे चढ़ने वाले हैं। और हमें किसी की ओर देखना नहीं पड़ेगा कि कौन हमें मदद देता है। हमें मदद किसकी चाहिये ? मदद तो हमको ईश्वर देने वाला है, और वह किसको मदद देता है ? जो आदमी अपने आपको मदद देने के लिये खुद तैयार रहता है, उसी को ईश्वर मदद देता है।

*

११ अक्टूबर, १६४७

आज भाद्रपद की कृष्णपक्ष की द्वादशी है। यह दिन गुजरात में यानी काठियावाड़ में कच्छ में रेंटिया बारस के नाम से समझा जाता है और उस वक्त लोगों का ध्यान रेंटिया की ओर यानी चर्खे की ओर और चर्खे के इर्दगिर्द में जो चीज़ें समझी जाती हैं उनकी ओर खिच जाता है। एक सिलसिला चलता है तो, पीछे उसको कोई छोड़ता नहीं, लेकिन मैं आज ऐसा नहीं पाता हूँ कि रेंटिया द्वादशी का हम कोई उत्साह से पालन करें। रेंटिया का विस्तृत अर्थ भी मैंने दिया है और हिन्दुस्तान ने मान लिया है कि चर्खा अहिंसा का प्रतीक है। उसकी निशानी है। आज वह निशानी तो गुम हो गई है। अगर वह निशानी रहती तो आज हमारे सामने जो चीज़ें बन रही हैं वह बनने वाली नहीं थीं। लेकिन बनती है तो भी उस निशानी का स्मरण तो मैं आपको करा दूं। मेरा जन्म दिन दो अक्टूबर को मनाया था सो काफी था। लेकिन कई वर्षों से अंग्रेज़ी तारीख भी मानी जाती है और जो हिन्दी तिथि है उसको भी माना जाता है। इस तरह से वह दो दिन हैं और उनके बीच में जितना फर्क रह जाता है वह सब का सब समय उत्साह से चर्खा उत्सव मनाने में दिया जाता है। लेकिन आज जैसा मैंने कहा ऐसा कोई मौका मैं पाता नहीं हूँ। तो भी अगर दैवयोग से कोई भी चर्खे को और जिस पर वह निशानी है उस अहिंसा को मान ले तो अच्छा ही है। पाँच आदमी भी इसे मान लें तो अच्छा ही है। और करोड़ करें तो और भी अच्छा है। लेकिन एक ही करे तो भी वह अच्छा है। इसलिए मैंने आप लोगों का ध्यान इस ओर खींचा है।

करांची में हमारे मंडल साहब हैं और वे पाकिस्तान का जो प्रधान मंडल है उसमें कोई प्रधान हैं। ऐसा कहा जाता है कि वे हरिजन हैं और बंगाल के हैं

तो भी कायदे आज़म ने उन्हें पाकिस्तान के प्रधान मंडल में स्थान दे दिया है। उन्हीं की सूचना से एक बात बन गई है। उसमें दूसरे दो तीन का नाम मैं भूल गया हूं, वे भी शरीक हो गये हैं। सब के सब शरीक हैं, ऐसा तो नहीं हो सकता। लेकिन दो हुए तो भी क्या, एक हुआ तो भी क्या। लेकिन एक सरक्युलर निकल गया है कि जितने हरिजन भी सिन्ध में रहते हैं उनको हाथ पर एक पट्टी रखनी चाहिए। उस पट्टी पर ऐसा लिखा जायगा कि यह हरिजन है, याने अछूत है अस्पृश्य है। जिससे उन्हें कोई हलाक न करे, कोई निकाल न दे। उसका लाजमी नतीजा मेरी समझ में यह आता है—(वह अगर मेरे शक की ही बात है तो अच्छी ही बात है लेकिन बैग्र एक आ ही जाता है) कि वह हरिजनों को आज तो नौकरी मिल जायगी और पीछे मान लें कि वे हरिजन वहां ही रहें तो (सब के सब रहने वाले तो नहीं हैं बाज़ तो वहाँ से निकल भी गए हैं और निकलने वाले हैं, ऐसा मैंने सुना है। मेरे पास बहुत खत आ गये हैं, लेकिन जितने वहां रह जायं) उनको पीछे आख़िर में इस्लाम कबूल करना है। ऐसा नतीजा आ जाता है मेरे सामने तो यह भयंकर नतीजा है। एक आदमी ऐसा मानकर कि वह सच्ची चीज़ है अपना मज़हब छोड़ देता है और कोई भी धर्म कबूल कर लेता है तो उस चीज़ का मैं कहूँगा कि सबको हक है। आज मैं अपने को सनातनी हिन्दू मानता हूँ, कल मुझको ऐसा लगे कि सनातन हिन्दू क्या है इस धर्म को मै पसन्द नहीं करता, तो उसे छोड़ सकता हूँ, लेकिन वह बहुत भारी बात है मैं अपने धर्म को कबूल नहीं करूं तो मुझे कौन रोक सकता है। मेरे दिल में कोई लालच नहीं है कि मैं क्रिस्टी हो जाऊंगा, तो मेरी आर्थिक स्थिति को दुरुस्त करूंगा, या और कोई भी फायदा उठाऊंगा मैंने तो अपने ईश्वर के साथ हिसाब कर लिया फिर दुनिया इसकी मुखालिफत करे तो भी मैं वही करूंगा। मैं मानता हूं कि यह हालत आज एक भी हरिजन की नहीं होगी। यह बात मैं दावे से कहना चाहता हूँ क्योंकि मैं हरिज़न बन गया हूँ, अछूत बन गया हूँ, उनका धर्म मैंने कबूल कर लिया है। मैं यह उम्मीद करता हूँ कि आज पाकिस्तान में जितने हरिजन पड़े हैं या कोई दूसरे पड़े हैं उनके लिये इतना ऐलान कर देना चाहिये कि वे सुरक्षित हैं। पीछे से वह बिल्ला लगाने की ज़रूरत नहीं रहती। सब के लिये ऐसा ऐलान होना चाहिए कि कोई भी शख्स आज ऐसा कहेगा कि मैंने धर्म का परिवर्तन राजी से कर लिया है तो वह माना नहीं जायगा। धर्म अपने दिल की बात है। इन्सान जाने और उसका ईश्वर जाने! लेकिन पाकिस्तान की हुकूमत में कोई भी आदमी ऐसा दावा आज नहीं कर

सकता कि उसने अपने धर्म का परिवर्तन जानबूझ कर किया है। ऐसा ही माना जायगा कि उसने किसी डर की वजह से या मजबूर होकर ऐसा किया है इसलिए आज ऐसा उनको कहना है किसी के धर्म का परिवर्तन हो ही नहीं सकता।

दूसरी एक बात रह जाती है। हमारे सामने इसी महीने दो त्योहार आ रहे हैं। एक तो दशहरा है। वह बड़ा बुलन्द त्योहार है। उसको बहुत लोग मानते हैं, सारे हिन्दुस्तान में हिन्दू लोग मानते हैं। लेकिन उसकी महिमा बंगाल में बहुत अधिक है। मैं बंगाल में रहा हूँ इसलिए मैं जानता हूँ कि दशहरे की क्या महिमा वहाँ मानी जाती है। यह त्योहार आता है उससे ठीक दो दिन के बाद बकरीद आती है। पहले जब बकरीद होती थी तो हिन्दू-मुसलमान में कोई बड़ा वैमनस्य नहीं था। आज की तरह लड़ाई नहीं करते थे तो भी दिल में खटका रहता था। और जो अंग्रेज़ी सलतनत थी उसको भी कुछ तैयारी रखनी पड़ती थी कि बकरीद के दिन कुछ हो न जाय, हिन्दू मुसलमानों के बीच में लड़ाई न चल जाय। कोई भी मौका मिल सकता था गाय को काटे, गाय को सजावट के साथ ले जाय, और हिन्दुओं को उकसाने के लिए ऐसा करें। दशहरे में तो सब जगह सजावट करते हैं बाजा तो बजाना है, औरतों-मर्दों की सजावट होने वाली है। नये कपड़े पहन कर कोई गाड़ी पर सवार होंगे कोई घोड़े पर सवार होंगे, वह सब करेंगे तो क्या वह भी एक लड़ाई का मौका हो जायगा और बकरीद भी लड़ाई का मौका हो जायगा। मैं तो कहूँगा कि जो हिन्दू और मुसलमान दोस्ताना तौर से साथ-साथ रहना चाहते हैं उनका यह धर्म हो जाता है कि वे मर्यादा से इन त्योहारों का पालन करें। ऐसी चीज़ कोई न करें जिससे सामने का आदमी गुस्से में आ जाये। बगैर इन सब के आज हम गुस्से से भरे हैं, और गुस्से में जब आ जाते हैं तो एक की दस बना देते हैं। ऐसी हालत में ऐसी कोई बात हम न करें जिससे गुस्सा बढ़े।

अंग्रेज़ी हुकूमत ने जाते हुए जो काम किया उसमें एक दोष रह गया। हिन्दुस्तान के दो टुकड़े कर डाले और दो हुकूमतें बन गईं। आज तो दोनों दुश्मन जैसे बन गये हैं। संभव है कि आपस-आपस में कभी भी लड़ाई न करें। लेकिन ऐसा सामान बन रहा है कि जिससे यह कोई समझ नहीं सकता है कि आगे क्या होगा। लेकिन आशा रखें कि हम दोनों समझ जायँ और अगर नहीं समझेंगे तो अपनी आज़ादी हार बैठेंगे। मुल्क को हार बैठना धर्म की बाजी है, उसको गँवा कर बैठ जाना यह बड़ी भारी गलती होगी। मेरी तो यह प्रार्थना है ईश्वर सबको ज्ञान

दे और हम सब शुद्ध हो जायँ। वह बड़ी अच्छी बात होगी।

एक और चीज़ मैंने कह दी है, दक्षिण अफ्रीका में हमारे जो लोग पड़े हैं, उन्हें सावधान हो कर काम करना है और यहाँ जो दो हुकूमतें हैं, उन दोनों को हमारे जो भाई वहां पड़े हैं उन्हें पूरी सहायता देना चाहिये, और उनका उत्साह बढ़ाना चाहिये।

☆

१२ अक्टूबर, १९४७

आज भी काफी कम्बलियाँ आ गईं रजाई भी। और रजाई के बारे में तो मैं यहाँ तक कह सकता हूँ कि मिलों की तरफ से भी रजाइयां तैयार हो रही हैं वह रजाइयाँ भी आ जायंगी। मेरे दिल में इतनी आशा जरूर हो गई है कि जिस रफ़तार से ये रजाई और कम्बलियाँ वगैरा आ रही हैं उससे इस जाड़े के दिनों में जो लोग यहाँ इकट्ठे हो गये हैं, यहाँ के माने दिल्ली में और उसके इर्दगिर्द, उनको तकलीफ़ नहीं होनी चाहिये। यह तजवीज़ भी हो रही है कि वह सबकी सब रजाइयाँ जिनको मिलनी चाहियें या कम्बलियाँ या जो दूसरी चीज़ें पहिनने को आ जाती हैं वह सब ज़रूरतमन्दों को मिलें। एक बात उसमें समझने के लायक है कि जो कम्बलियाँ जाती हैं वह आखिर में फट जायँगी, मगर आज वह पानी से और ओस से बचा सकती हैं। लेकिन रजाई आ गई तो खतरा रहता है कि वह पानी से नहीं बचेगी। बाकी तो ईश्वर की कृपा रहेगी तो जाड़ों के दिनों में पानी नहीं आना चाहिये लेकिन ओस काफी पड़ती है और सब को कम्बलियाँ शायद न मिल सकें, सब को तम्बू भी मिल सकेंगे या नहीं सो मेरे दिल में शक है। एक चीज़ है। मैं आज बात कर रहा था तब बता दिया था। वह मैं यहाँ भी बता देना चाहता हूँ। जिन लोगों के हाथों में रजाइयाँ चली जाती है वह समझें कि न्यूज़ पेपर काफ़ी पड़े हैं वह मिल जाय तो रजाई पर अगर न्यूज़ पेपर रखें तो पीछे ओस रजाई में से होकर नहीं आ सकती। दूसरी खूबी रजाई की यह है कि उसमें काफ़ी रुई आ जाती है और उसमें काफ़ी गरमी रहती है। जब रुई टूट जाती है तब रजाई को खोल सकते हैं। रजाई का कपड़ा धोकर रुई को धुनकर फिर से भर सकते हैं। तो वह नई चीज़ बन सकती है। जो देख-भाल करके उस चीज़ को इस्तेमाल करने वाले हैं उनके लिए वह

बड़ोकाम की चीज़ है। हमारे पर यह एक बड़ी भारी आपत्ति आ पड़ी है लेकिन जो ईश्वर का स्मरण करते हैं और ईश्वर का काम कर लेते हैं उनको ऐसी आपत्ति से भी सीख मिल जाती है। दो किस्म की बातें हो सकती हैं। एक तो जब आपत्ति आ गई तो आदमी घबराहट में पड़ जाता है, या तो गुस्से में आ जाता है, तब पीछे वह ज़्यादा दुख पाता है। लेकिन आपत्ति में वह सोचे कि हम बेगुनाह हैं तो भी आपत्ति आती है लेकिन हम तो भी इस वक्त ईश्वर को भूलने वाले नहीं हैं? उनकी मदद मांगने वाले हैं। ऐसे लोग उस आपत्ति में से भी सुख को पैदा कर सकते हैं। काफ़ी लोग जो इधर आ गये हैं और आश्रित बन गये हैं वह आख़िर लोग थे, उनके पास काफ़ी पैसा था, दूसरे प्रकार का धन था। बड़ी-बड़ी हवेलियाँ थीं वे सब चली गईं, खो गईं। मैंने तो कह दिया है जो जहाँ से आ गया है जब तक वहां वापिस पहुँच नहीं सकता है, और वहां सही सलामत नहीं रह सकता है तब तक हमारी दोनों हुकूमतों के लिये कष्ट की बात है। अगर हम लोग जिन्दा रहना चाहते हैं, आज़ाद रहना चाहते हैं तो कभी न कभी हमें इस तबादले के पाप का पश्चात्ताप करना है। पश्चात्ताप उसका नाम है कि हमने जो भूल की उसको दुरुस्त करें तब वह सच्चा प्रायश्चित्त है। दूसरा नहीं हो सकता। जो सचमुच गलती को दुरुस्त कर लेता है उसका पश्चात्ताप काफ़ी हो गया। गलतियाँ दुरुस्त करना है तब तो जो लोग आज आये हैं जान लेकर, जान बचाकर भाग आये हैं उनको वापस जाना है। वह जब होने वाला है तब होगा लेकिन दरम्यान में क्या करोगे? मैं यह कहना चाहता हूँ कि दरमियान में लोगों को अगर अच्छे डाक्टर लोग मिल जायें—जो निराधार बन गये हैं उनमें डाक्टर भी रहते हैं वकील भी रहते हैं सब किस्म के लोग रहते हैं—वह डाक्टर सेवा का ही काम करें और दूसरे भी जो उनके मातहत पड़े हैं वे भी ऐसा करें तब बहुत बुलन्द काम कर सकते हैं और हम उस आपत्ति में से एक नया पाठ सीख लेते हैं।

मैं शरणार्थियों के बीच गया तो मुझे बताया गया है कि उनमें करीब ७५ फ़ी सदी आदमी ताज़िर थे। तो मैं चौंक उठा कि इतने ताज़िर लोग यहां तिजारत कैसे कर सकेंगे। लाखों की तादाद में ताज़िर आ गये हैं वे सब एकाएक तिजारत करने लगेंगे तो सब जगह गोलमाल हो जायगा। अगर ऐसे मन में रक्खें कि हम तो कुछ न कुछ मेहनत करेंगे, हम नई चीज़ सीखेंगे और वह सीख लें तब तो काम चल सकता है। वर्षों से जो ताज़िर रहे हैं

वे अपनी तिजारत भूल जायँ। जगत् में ऐसा होता है अगर एक चीज़ नहीं मिल सकती है तो पीछे दूसरी चीज़ ढूंढों। हम बेकार नहीं बैठेंगे, जुआ नहीं खेलेंगे, शराब में अपना समय गँवाना नहीं चाहते हैं कुछ काम तो करेंगे हीं। मेहनत करेंगे। जो ताजिर हैं लेकिन जिसका शरीर अच्छा है हाथ-पैर अच्छे चल सकते है वे थोड़ी मेहनत का काम करें। ऐसी मज़दूरी काफी रहती है जिसमें बहुत सीखने की ज़रूरत नहीं रहती। ऐसी चीज़ें वह करें और सब मिलजुल कर काम करें। साथ में कैसे काम होता है वह सीख लें। तब हमारे लिये जो यह एक नरक जैसी चीज़ तैयार हो गई उसमें से हम स्वर्ग बना सकते हैं।

मैं समझा रहा था और मैंने सोचा कि आज तो यह चीज़ अच्छी तरह से आप लोगों के सामने रक्खूँगा और आपकी मार्फ़त सबको सुना दूंगा। जो निराधार लोग पड़े हैं वे यह सुनेंगे और करेंगे तो उनको बड़ा फ़ायदा होगा और मुल्क को भी बड़ा फ़ायदा होगा। और जो हमारे ऊपर दुःख आ गया है उस दुःख में से हम सुख पैदा कर लेंगे।

इस सिलसिले में मैं यह कहना चाहता था कि जो रजाइयां हमारे पास अभी नहीं आई हैं लेकिन हर जगह से आने वाली हैं उसका हम क्या करें? उसमें जो कपड़ा रहता है वह मैला बन गया हो तो उसको निकाल कर धो सकते हैं। उसकी जो रुई पड़ी है उसको हम रख लेते हैं। रुई तो बिगड़ती ही नहीं उसको सुखा लेते हैं और उसको हाथ से साफ़ कर लेते हैं धुनकी की भी ज़रूरत नहीं। हां उसे कातना हो, तब दूसरी बात है। उस रुई को दुबारा गदेले बनाना है या रजाई बनाना है तो वह आराम से हो सकता है। मेरी समझ में हाथों से वह सस्ते दाम में बन सकती है, और जल्दी बन सकती है। मिलों के पास काफी कपड़ा पड़ा है। यहाँ मैं खाने की चीज़ की बात नहीं करना चाहता। काफी कपास पड़ी है। उसमें से रजाई बहुत शीघ्रता से बन जाती है और लोगों को वह दे दी तो जाड़े से वे बच जायेंगे। इसलिए यह चीज़ किस तरह से हो सकती है वह लोगों को बताना है और पीछे जो एक निराशा फैल गई है उसमें से हमें आशा खड़ी करना है। एक भजन है कि आशा तो लाखों निराशा में से पैदा होती है यह बात सच्ची है। वह कवि का वाक्य है। लाखों निराशा में छिपी हुई आशा को हम देख लेना चाहते हैं। उसको देखने के लिये हमको क्या करना है? जितने निराधार लोग बन गये हैं उनको पहले तो यह समझ लेना चाहिये कि वे सारे हिन्दुस्तान के हैं, पंजाब के ही नहीं, सरहदी सूबे के नहीं या सिन्ध के ही नहीं। जितने सूबे हैं

वे हिन्दुस्तान में पड़े हैं सो वहां के लोग हिन्दुस्तान के हैं। एक शर्त से हम सब हिन्दुस्तानी बन सकते हैं, और रह सकते हैं, हम किसी पर बोझ न पड़ें। जैसे दूध में मिश्री दाखिल करो तो वह दूध को मीठा बनाती है और दूध में मिल जाती है और दूध में से निकाली नहीं जा सकती है। दूध वैसा का वैसा रह जाता है। इसी तरह से मिश्री की तरह वे लोग जिधर चले जायँ वहाँ एक दूसरे के साथ लड़ते नहीं रहें। द्वेष नहीं करें, मिल-जुल कर रहें आपस-आपस में सहयोग बना लें और सब के सब मेहनती आदमी बन जाते हैं। तब होता यह है क्या कि जिस सूबे में वे चले जाते हैं उसे दुरुस्त कर लेते हैं। तब सूबे के लोग ऐसा कहेंगे कि हमारे यहाँ ऐसे चाहे जितने आदमी आ जायँ उनको हम समा सकते हैं।

मेरी उम्मीद तो ऐसी है कि जिन्हें मेरी आवाज़ पहुँच सकती है ऐसे जो निराधार लोग पड़े हैं उनमें जो काम करने वाले हैं वे उन लोगों को यह चीज़ बता दें कि आप भले आदमी बनें। किसी जगह भी जाकर बोझ न बनें और हर जगह पर रहें तो जैसे मैंने बता दिया है इस तरह मुहब्बत से रहें, साथ-साथ मिलजुल कर रहें। किसी को धोखा न दें। हमको अपना वक्त गंवाना नहीं चाहिये। एक-एक मिनट ईश्वर के लिए हो, ईश्वर के काम के लिये, सेवा के लिए हो। हम तो सेवा के लिए पैदा हुए हैं। पीछे हम भूल जायँगे कि हम दुख में गिरफ्तार होकर पड़े थे, शोक में हैं। हमारे पास इतने लाखों की तादाद में लोग पड़े हैं वे सेवा करें। हम पैदा हुए हैं सेवा करने के लिए। हम तय करें कि हम अपने मुल्क को ऊँचा ले जायंगे, गिरायेंगे नहीं। इतना अगर हम सीख लें तो मैं समझता हूँ कि हमारी धन्य घडी होगी और पीछे हमें कोई फ़िक्र न रहेगी। गलती तो होती है। इन्सान गलतियों का पुतला है। मगर आखिर में गलतियाँ दुरुस्त करना भी इन्सान का काम है। हम अपनी गलतियाँ दुरुस्त कर लेते हैं तो हम इन्सान बन जाते हैं।

★

१३ अक्टूबर, १९४७

कल मैंने शरणार्थी कैम्पों के बारे में कुछ बातें कही थीं। अंग्रेज़ी तर्जुमे में कुछ छूट गया था आज उसे विस्तार से कहता हूँ क्योंकि मैं उस चीज़ को बहुत महत्त्व देता हूँ। अगरचे हमारे यहां धार्मिक और दूसरे मेले होते हैं, कांग्रेस मिलती है, कान्फ्रेन्सें होती हैं मगर आम तौर पर हमें कैम्प जीवन की आदत नहीं। मैं १९१५ में हरिद्वार कुम्भ मेले पर गया था। मुझे और मेरे साथियों को भारत सेवक संघ (सर्वेन्ट्स आफ़ इन्डिया) के कैम्प में काम करने का मौका मिला था। अगरचे मेरी और मेरे साथियों की अच्छी तरह देख भाल की गई, मगर मेरे मन पर यह असर पड़ा कि हमारे लोगों को कैम्प में रहना नहीं आता। हमें सार्वजनिक सफ़ाई की तरफ़ ध्यान देने की आदत नहीं। परिणाम में भयानक गंदगी पैदा होती है और छूत की बीमारियाँ फूट निकलने का ख़तरा रहता है हमारे पाखाने, इस कदर गंदे होते हैं कि क्या बात करना। शायद यह कहना ज़्यादा सही होगा कि पाखाने बनाये ही नहीं जाते। लोग समझते हैं कि पाखाने तो कहीं भी बैठा जा सकता है और गंगाजी या जमनाजी का किनारा, इस काम के लिये खास पसन्द किया जाता है। पड़ोसियों का ध्यान किये बिना जहां-तहां थूकना तो अपना हक समझा जाता है। खाना पकाने का इन्तज़ाम भी अच्छा नहीं होता। मक्खियाँ तो हर जगह हमारी साथिन होती हैं। हम भूल जाते हैं कि मक्खी एक क्षण पहले गंदगी पर बैठी होगी और किसी छूत की बीमारी के कीड़े उससे चिपके हुए होंगे। रहने की जगह, तम्बू वगैरह भी ठीक तरीके से नहीं लगाये जाते। मैं कोई चीज़ बढ़ा चढ़ा कर नहीं कह रहा। कैम्पों में जो शोर होता है उस की तो बात ही क्या करना।

तरीके से कैम्प बनाने और पूरी तरह से सफ़ाई रखने के लिये किसी मिलिटरी

कैम्प को देखिये। मैं मिलिटरी की ज़रूरत नहीं समझता। मगर उसका यह मतलब नहीं कि मिलिटरी में खूबियां नहीं। वे हमें नियमन में साथ रहने, सार्वजनिक सफाई, समय पर काम करना, हर एक ज़रूरी काम के लिये वक्त रखना इन सब चीज़ों में पाठ सिखा सकते हैं। उन के कैम्पों में पूर्ण शान्ति रहती है। वे घंटों में कैनवस का शहर खड़ा कर लेते हैं। मैं चाहता हूँ हमारे शरणार्थी कैम्प उस आदर्श को पहुँचे। तब वर्षा आवे या न आवे उन्हें तकलीफ़ नहीं होगी।

अगर सब काम करें तो ऐसे कैम्प खड़े करने में बहुत खर्च नहीं होता। शरणार्थियों को खुद खेमे लगाने चाहिएं खुद सफाई करना, झाड़ लगाना, सड़कें बनाना, खन्दकें खोदना, खाना पकाना, कपड़े धोना वगैरह कोई काम ऐसा नहीं जो उनकी शान के खिलाफ समझा जाय। कैम्प का हर एक काम, हर एक के करने लायक है। ध्यानपूर्वक और समझपूर्वक काम किया जाय तो जनता के मनोभाव में यह तबदीली ज़रूर लायी जा सकती है। तब आज की विपत्ति को भी ईश्वर की छिपी प्रसादी समझा जा सकता है तब कोई शरणार्थी कहीं भी बोझ रूप नहीं होगा। वह कभी अकेले अपने आप का ख्याल नहीं करेगा बल्कि अपने सब मुसीबतज़दा भाइयों का ख्याल रखेगा और जो दूसरों को नहीं मिल सकता वह अपने लिये नहीं मांगेगा। यह बात सिर्फ विचार करते रहने से नहीं बल्कि जानकार आदमियों की देखरेख और रहनुमाई में काम करने से हो सकती है।

रजाइयां और कम्बल आ रहे हैं। आशा है जल्दी ही सर्दी से बचने का काफ़ी सामान इकट्ठा हो जायगा।

★

१४ अक्टूबर, १६४७

आज भी काफी कम्बलियां आ गईं। यहां एक आर्य कन्या विद्यालय है, उसकी दो शिक्षिकायें और विद्यार्थिनियां आ गई थीं। उन्होंने पैसा इकट्ठा किया है, वह भी कम्बलियां लेने के लिये। वह बिचारी कितनी ला सकती थीं। थोड़ी कम्बलियां लाईं। लेकिन एक बड़ी बात मुझको सुनाई, मुझे वह अच्छी लगी। उन्होंने सुनाया कि जब वह व्रत रखने की बात निकली मैंने कहा कि महीने में कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष होते ही हैं तो एक पक्ष में एक दिन सब निकाल दें, और उस रोज़ खाना छोड़ दें तो जितना बाहर से खाना आता है वह सबका सब हमें मिल जाता है, क्योंकि इतना बच जाता है। पैसा देकर बाहिर से अन्न लेना मैं एक बड़ा दोष समझता हूँ। उस दोष से हम बच जाते हैं। यह सुन कर विद्यालय की शिक्षिका ने विद्यार्थिनियों के साथ मशविरा किया। उन्होंने किसी को मज़बूर नहीं किया। मगर सबने तय किया कि हम हर गुरुवार को व्रत रक्खेंगे और उससे जो बच जाता है वह दान दे देंगे। उनके पास जो बचा करता है, वह देने की कोशिश करती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि थोड़ी ज़मीन है उससे हम अनाज भी पैदा करेंगी। दोनों काम खुराक बचाना और अधिक पैदा करना हमने अपने सर पर ले लिया है। यह सब मुझको उनकी जो कम्बलियां और पैसे आगये हैं उससे ज्यादा प्रिय था। पीछे एक ईरान के एलची साहब और उनकी धर्मपत्नी आये। थोड़ा बैठे लेकिन एक बड़ा ढेर कम्बलियां दे गये। कहा यह कम्बलियां किसी को दे सकते हो तो दो। मैंने कहा मैं तो एक भिक्षुक हूँ। जितना मुझको मिल जायगा लूंगा और उसकी जिसे दरकार है उसे दे दूंगा।

मेरे पास काफी सिक्ख भाई आगये थे। दो तीन हिस्से में आये थे। उनसे काफी बातें हुईं। बातें क्या हुईं वह तो मैं आपको बता कर क्या करूंगा उसमें कोई

ऐसी खुफिया बात नहीं थी लेकिन बातों का निचोड़ मैंने निकाल लिया है और वह यह है कि वह भी पूरा-पूरा समझ जाय और इसी तरह से दूसरे भी समझ जायँ कि हम इस तरह से आपस-आपस मे लड़ कर कुछ हासिल नहीं करने वाले। न्याय देना, सजा देना, बदला लेना इत्यादि काम करना है तो हुकूमत करे। हुकूमत के मार्फत से जितना हो सकता है उतना हम करें। मेरा ऐसा ख़्याल है कि वह सब के सब इस बात पर राजी हैं। बाकी हिस्से को मैं छोड़ देता हूँ।

पीछे एक तीसरी बात मैंने सुन ली। कुछ आदमी को गिरफ़्तार किया गया है। हमारी हुकूमत है, गिरफ़्तार करे तो वह हुकूमत के हाथ है। बाज दफा उनसे निर्दोष आदमी भी गिरफ़्तार हो सकते हैं। जान-बूझ कर बेगुनाहों को गिरफ़्तार करें, ऐसी गलती तो हमारी हुकूमत से होनी नहीं चाहिये। और स्वच्छन्दता से किसी को गिरफ़्तार करें ऐसा भी नहीं होना चाहिये। लेकिन कुछ भी करें आखिर इन्सान तो इन्सान है, गलतियों से भरा हुआ पुतला है, वह कोई फरिश्ता नहीं है, वह ईश्वर तो है ही नहीं। तो गलतियां करेगा। गलती से कुछ बेगुनाह आदमियों को पकड़ लिया तो उसमें क्या आन्दोलन करना था? लेकिन मैं सुनता हूँ कि कुछ आन्दोलन हो रहा है कि ऐसे आदमियों को क्यों पकड़ा। वह तो बेगुनाह आदमी है। बेगुनाह आदमी है या नहीं वह तो हुकूमत को देखना है। हुकूमत के पास अगर कोई सामान पैदा करके रक्खे कि फलां आदमी बेगुनाह है वह तो मैं समझ सकूंगा। लेकिन हुकूमत को इस तरह हलाक करें आन्दोलन के बल से किसी को छुड़वा लें, तो वह ठीक नहीं है। जब अंग्रेज़ी सल्तनत से लड़ते थे और बाज दफा जो जेल वग़ैरह में भेजे जाते थे उनके लिये कहते थे कि उनको क्यों नहीं छोड़ते। वे बेगुनाह हैं वह तो था लेकिन राज्य की नजर में वह गुनहगार थे हमारी नज़र में नहीं थे। उस वक्त तो हमने अंग्रेज़ी हुकूमत के सामने आन्दोलन किया कि उन्होंने हमारे नेताओं को क्यों पकड़ लिया। लेकिन आज किसके सामने आन्दोलन करें। अपनी सारी सरकार पंचायती राज है। पंचायत के वह प्रतिनिधि हैं, उन्हें नेता भी तो हमने बनाया है। इसलिये मैं कहूँगा कि आज वह मौक़ा नहीं कि आन्दोलन के दबाव से हम हमारी हुकूमत को दबा लें। एक तो यह हमारी हुकूमत है, उसके पास वह मिलिटरी ताक़त नहीं है जो अंग्रेज़ों के पास पड़ी थी। अंग्रेज़ों के पास सारी नौका सेना पड़ी थी। जिस नौका सेना के लिये एक वक्त कहा गया था कि वह अजित है, बेजोड़ है। आज तो वह दावा नहीं चल सकता। वह दूसरी बात है लेकिन कैसा भी हो उसके पास सब पड़ा था। उसके बल हमारे ऊपर राज्य चलता था। आज हमारे ऊपर हम राज्य चलाते

हैं। अगर हमको मालूम है कि कोई दूसरी ताकत हमारे ऊपर राज्य नहीं चलाती है और जो राज्य करते हैं उनको हमने बनाया है, तो जिनको हम बनाते हैं उसको हम उठा भी सकते हैं। इसलिये मैं कहूँगा कि ऐसा आन्दोलन हमें नहीं करना चाहिये।

चौथी बात मैं आपको सुनाना चाहता हूँ वह यह है, मैंने इस बारे में काफी तो कहा है, कि किस तरह से हिन्दुस्तान में पूरी-पूरी शान्ति पैदा हो सकती है। यह पेचीदा प्रश्न है। मैं कोई खुश नहीं होता हूँ कि आज तो दिल्ली में कुछ गड़बड़ चलती ही नहीं। कहीं एकाध आदमी मार दिया इस तरह से कुछ चले भी लेकिन जैसा सिलसिलेवार पहले चलता था वैसा नहीं है। यह अच्छा है। इससे हुकूमत तो खुश रह सकती है लेकिन मैं नहीं रह सकता क्योंकि मैं हुकूमत करने के लिये नहीं आया हूँ। इत्तफाक से यहाँ रह गया। मैं तो इस उम्मीद में रहा कि दोनों के दिल फूट गये हैं, उनको दुरुस्त करना है और ऐसा करने में मदद करना है। इससे पहिले भी आपस-आपस में लड़ते थे मगर लड़ लिया तो पीछे एक हो गये। आज तो हमारे दिल ज़हरीले हो गये हैं कि मानों एक दूसरे के सदियों से दुश्मन हैं, इस तरह से मानना शुरू कर दिया है। हमारे लिये बड़ी नामुनासिब बात है। होना तो यह चाहिये कि हम कोई बुजदिल न रहें न मुस्लिम, न सिक्ख, और न हिन्दू। तो पीछे हमको किसी का डर न रहेगा। मुसलमानों को सिक्खों का डर छोड़ना चाहिये, और डर के मारे भाग जाते हैं उसे बन्द करें। हिन्दुओं को और सिक्खों को मुसलमानों का डर छोड़ देना चाहिये। तब जब हम आपस-आपस का डर छोड़ देंगे और सिक्ख, हिन्दू, मुसलमान, जब एक दूसरों से नहीं डरेंगे तब पीछे हम चाहें तो एक बड़ा भारी मिलिटरी ताकत बन सकते हैं। और हम चाहें तो हिन्दुस्तान एक बड़ी अहिंसक और अजीत सैन्य बन सकता है। दो रास्ते हमारे पास पड़े हैं तीसरा नहीं है। आज जो चलते हैं वह कोई रास्ता नहीं है। वह तो हैवानियत का रास्ता है। उसमें आगे बढ़ने का रास्ता नहीं है। तो मैं बतलाना चाहता हूँ कि किस तरह से हम एक दूसरों के नजदीक आ सकते है। सबसे बड़ी चीज़ तो यह है कि मुसलमान, हिन्दू, सिक्ख एक दूसरों की गलतियां निकालते रहे जैसे आज निकालते हैं वह छोड़ दें। सब अपनी गलतियां देखें और अपनी गलतियों को पहाड़ सा बना कर देखें। ऐसा नहीं कि मुसलमान कहे कि हमने भी एक ज़माने में गलतियां कीं लेकिन उससे क्या हुआ। देखो तो सही

हिन्दू और सिक्ख की जो पहाड़ सी गलतियां है उनके सामने हमारी गलतियां कुछ भी नहीं हैं। और ऐसा ही हम कहना शुरू कर दें कि अच्छा चलो हिन्दू, सिक्ख हैं उन्होने गलतियां की हैं लेकिन मुसलमानों ने किया उसके सामने वह कुछ नहीं यह जवाब नहीं। गलतियों का जवाब गलतियों से दे दिया इसमें कौन सी बड़ी बहादुरी है ? यह तो जगत में होता आया है। ऐसा कह कर हम हिन्दू और सिक्ख अपने दिल को फुसला लें, मैं कहूँगा कि यह कोई तरीक़ा ही नहीं है। इस तरह हम कभी आपस-आपस में दिल साफ करके बैठ नहीं सकते। आज तो नौबत यहां तक आ गई है कि पाकिस्तान सरकार कहती है कि इतने मुसलमानों को हम नहीं लेंगे, तो हमारे दिल में शक पैदा हो जाता है कि उसमें भी कुछ दगे की बात है। उसमें दगे की बात होना क्या था। और अगर है तो दगा उसके दिल में पड़ी है उससे हमें क्या ? हम इतना बहादुर नहीं रहेंगे कि शक से कुछ न करें तो पीछे मरने वाले हैं। इस बात को मैं छोड़ दूं। मैं तो इतनी बात कहता हूँ कि मुसलमानों को, हिन्दुओं को, और सिक्खों को कि दूसरे की गुनाह की तरफ इशारा भी न करें। अपने हो गुनाह को कबूल करें अगर मानते हैं कि गुनाह हुआ है तो उसको कबूल कर लेना चाहिये। मैंने कल कहा कि यह एक जहरी बात है कि बस हिन्दू हैं वह तो हमारे दुश्मन। ऐसे हम दुश्मन बने तो उसका नतीजा बुरा ही आनेवाला है। पाकिस्तान तो हो गया उससे क्या ? लेकिन हम पागल नहीं बनेंगे। कल तक दुश्मन थे आज दोस्त बने। लेकिन जब दोस्त बने तब हमें ऐसा कहना है कि हम किसी जमाने में दुश्मन थे तब हमने दुश्मनी की लेकिन अब तो दोस्त हो गये हैं। दुश्मनी भूल गये हैं। हुकूमत को हिन्दू, सिक्ख और हिन्दुस्तान में जो कोई भी रहता है उनको साफ-साफ, दिल से कहना है कि इतनी गलती तो हम से हो गई, आप की गलती हुई है सो आप जानें। मगर हम क्यों गलती करें ? नहीं करेंगे। ऐसा अगर दोनों आपस में सच्चा मुकाबला करें एक मुकाबला तो यह है कोई आकर एक मुक्का दे तो हम उसके दो मारें, लेकिन उसके बदले में यह मुकाबला करें कि हम तो बदले में बेगुनाह ही रहेंगे और भले बनेंगे। मुकाबला करेंगे भलेपन में, अच्छा होने में, तब कहता हूँ कि हमारे लिये खैर है। तब मैं आराम से दिल्ली छोड़ सकता हूँ। मेरे नसीब में अगर दिल्ली में, यहीं पड़ा रहना है और दिल्ली ही में मरना है तो मर जाऊंगा। ऐसा करना मैं जानता हूँ दूसरा मैंने सीखा नहीं है। मरना तो एक दिन है ही, कर नहीं सकते हो तो मरो तो सही। लेकिन मारना नहीं है। मैं तो सब को यही कहता हूँ कि अरे इतना

तो सीख लो। करेंगे या मरेंगे। तीसरी चीज़ नहीं है। अब हमें भागना नहीं। हमारे नसीब में जो होगा वह दूसरा तो बन नहीं सकता। हमें किसी से दुश्मनी नहीं करनी, वह हिन्दुस्तान की शान्ति का मार्ग नहीं है। हिन्दुस्तान की शान्ति का मार्ग तब हो सकता है जब हम किसी से लड़ें ही नहीं। सब डर छोड़ देते हैं। मुसलमान यहां रहते हैं तो रहें। क्या हमें वे मार डालेंगे, कैसे मारेंगे, क्यों मारेंगे ? क्या सब यहां से हट जायं ? क्यों हट जायं और कहां हट जायं ? आज पाकिस्तान वाले कहते हैं कि हम तो इतने मुसलमानों को हजम कर सकते है मुसलमान तो सारे हिन्दुस्तान में पड़े हैं। एक छोटा पाकिस्तान पड़ा है, उससे कैसे सब भरें ? यह कहे हम और नहीं ले सकते तो सुनना होगा। उसमें क्या फरेब पड़ा है ? पड़ा या नहीं पड़ा है, उससे हमें क्या ? हैं लेकिन हम इस चीज़ को तो समझ लें कि हमारे पास भाई भी पड़े है। मुसलमान अगर बदमाश हैं तो उसको मारो, कानून करो जो आदमी दगाबाज साबित होगा, हिन्दुस्तान का बेवफा साबित होगा, उसको शूट करना है तो करो। पांच को करो, हचास को करो, चार करोड़ को करो, मुझे कोई परवाह नहीं है, वह तो मैं समझ सकता हूँ लेकिन एक आदमी यों ही आकर उसको मार डाले वह कैसे बरदाश्त हो सकता है ? नहीं करना चाहिये। और हम खुद भी ऐसे पागल क्यों बनें ? ऐसे बुजदिल क्यों बनें ? इसलिये मैंने आपको बतला दिया है कि अगर दोनों हुकूमतों को अच्छी तरह से रहना है तो एक दूसरे के साथ, भलाई में मुकाबला करें। तुम्हारी गलती ज़्यादा है यह बताते रहने से हमारी जय नहीं होने वाली है। लेकिन हम यह समझ जायं कि हां, यह सब गलतियां हुई हैं इनको हम दुरुस्त करेंगे। और सब साफ़ कर देंगे तो खैर है। कह तो काफी सकता हूँ लेकिन आज के लिये मैंने आपको काफी कह दिया इतना हज़म करलें तो बस है।

* *

मुद्रक : यूनाइटेड प्रेस, दिल्ली

प्रार्थना-सभाओं में गांधी जी के भाषण

दिल्ली, १५-१०-४७ से २२-१०-४७ तक

* *

अंक ५

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
मिनिस्ट्री आफ़ इन्फार्मेशन ऐण्ड ब्राडकास्टिंग
गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया

*

मूल्य—६ आने

भूमिका

दिल्ली की प्रार्थना-सभाओं में दिये गये महात्मा गान्धी के २६ भाषणों को हम अब तक चार खंडों में प्रकाशित कर चुके हैं। ८ भाषणों का यह पांचवाँ और अंतिम संग्रह है।

महात्मा जी के सन्देश की जनता को कितनी आवश्यकता है यह कहने की बात नहीं। भारतीय जनता का नैतिक स्तर ऊंचा उठाने और उसके हृदय में सद्भावना भरने में ये भाषण विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होंगे। महात्मा जी के अपने ही शब्दों में होने के कारण इन भाषणों का अपना विशेष स्थान है।

महात्मा जी के भाषणों के कई संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुके हैं पर उनमें इस विशेषता का अभाव है। आशा है इसी विशेषता को ध्यान में रखते हुए हम आल इंडिया रेडियो द्वारा तैयार किये गये रेकार्डों के आधार पर दिल्ली की प्रार्थना-सभाओं में दिये गये बापू के समस्त भाषणों का एक पूरा संग्रह जनता की सेवा में भेंट कर सकेंगे।

* *

१५ अक्टूबर, १९४७

मुझे दुःख है कि आज बिजली न होने के कारण मेरी आवाज़ सब तक नहीं पहुँचेगी। आप बड़ी शान्ति रखते हैं इसलिये मेरी आवाज पहुँचनी तो चाहिये लेकिन खांसी के कारण वह और भी धीरे हो गई है। बहुत ऊंची आवाज़ में नहीं निकाल सकूंगा। जो दूर हैं वह थोड़ा आगे आ सकते हैं तो मेरी उम्मीद है कि सब सुनेंगे। मैं ऐसा नहीं चाहता कि आप कुछ सुनें ही नही और पुतले जैसे बैठे रहें और मेरी आवाज़ इस यन्त्र के मार्फत दूसरों को पहुँचे। आप कुछ सुन रहे हैं? (हां, हां।) तो ठीक है आप सुन रहे हैं, ज़रा कोशिश करें और कानों को बस मेरी आवाज़ के सुनने के लिये इस्तेमाल करें दूसरे काम के लिये नहीं तो मेरी उम्मीद है कि मेरी आवाज़ आप तक पहुँच जायगी। ऐसा भी है कि आज तो मुझे हमेशा से खांसी काफ़ी कम आती है। कल रात से कुछ ठीक है। रात को मुझको दिक नहीं किया और आज दिन को भी नहीं। सो मुझे कुछ हौसला भी है कि थोड़ी तो मैं आवाज़ बढा सकूंगा। लेकिन सब न सुन सकें तो मेरी लाचारी है। आहिस्ते आहिस्ते और चलते चलते मेरी आवाज जितनी तेज कर सकता हूँ उतनी करने की कोशिश करूंगा।

मेरे पास काफ़ी लोग हमेशा आते हैं। उसमें कई लोग तो कम्बलियां लेकर आये। किसी ने तो पैसा भी दिया, एक बहिन ने दो हज़ार का एक चेक भेज दिया। वह कहती है कि में यहाँ से कम्बलियां लूं तो उसमें दिक़्क़त होने वाली है और पीछे जैसी सस्ती वहां आपको मिल सकती है ऐसी सस्ती मुझको मिलने वाली नहीं है। इसलिये मैं दो हज़ार की हुण्डी भेजती हूँ। तो अच्छा है। इस तरीके से दूसरे भी कम्बल आये हैं। अभी दो मुसलमान भाइयों की तरफ से आये थे। उन्होंने इकट्ठा करके कुछ कम्बलियां और कुछ पैसे भेज दिये थे। तो मैंने कहा कि आप यहां

काम करने वाले हैं, इन्हें रक्खो। यहां भी हर जगह पर बांटना है, आप खुद बांट दें। तो उसने कहा वह तो खुद नहीं आये थे वह तो कारीगर लोग हैं, कैसे आ सकते हैं तो उन्होंने कहला भेजा कि नहीं हम तो गांधी के हाथ में ही सुपुर्द करना चाहते हैं और हम तो यह चाहते हैं कि हमारा भाव मैत्री का हो और दोस्ताना तरीका हो। जो हिन्दू बरबाद हो गये हैं और यहाँ निराधार होकर पड़े हैं, उनमें इन्हें बांटा जाय। मुझको यह अच्छा लगा। और दूसरों ने भी इसी तरह मुझको कहला भेजा कि हम जो पैसा भेजते हैं और कम्बलियां भेजते हैं वह इसी तरह से बांटो। जो मुसलमानों के हाथों से आता उन्हें खास कहा जाता है कि वह कहें वैसा बांटा जायेगा सो उन्होंने ऐसे कहा। आज एक दूसरे का गैर इतबार हमारे दिलों में पड़ा है। ऐसे मौके पर अगर चन्द मुसलमान ऐसा करें, चन्द हिन्दू, चन्द सिक्ख ऐसा करें तो उसे तो हमें स्वर्ण अक्षरों में लिख देना चाहिये। अंग्रेजी में तो एक ऐसी किताब भी निकली है कि वह किताब जिससे सुनहरा काम का बयान दिया जाता है। जितने काम ऐसे किये गये हैं उनका उसमें बयान देते हैं। अच्छा लगता है।

हम रोज भजन सुनते हैं। भजन सुनने में यह रहता है कि साधु सन्तों की वाणी हम सुनें। उस वाणी में कोई क्रोध नहीं आ सकता है, राग नहीं रहता है, द्वेष नहीं रहता है मोह नहीं रहता है। वे लिखते हैं और हमारे कानों तक वह पहुँचता है। वह साधु सन्त तो बिचारे मर गये। कोई एक हज़ार, दो हज़ार वर्ष के पहले मर गये, लेकिन उनकी वाणी तो शान्त नहीं हो गई। वह तो चलती ही रहेगी और जितने वर्ष आगे बढ़ते हैं उतनी वह वाणी पवित्र बनती जायेगी। ऐसा समझ कर हम उसे गाते हैं और बोलते हैं। सारी दुनिया में ऐसे लोग पड़े हैं, कोई मुसलमान है, कोई हिन्दू है कोई दूसरे।

मुसलमान कहते हैं कि हम तुमको कट्टर शत्रु मानते थे मगर अब देखते हैं कि तुम तो किसी के दुश्मन नहीं हो, सबके दोस्त हो। तो मुझे यह अच्छा लगता है। मैं तो सबका दोस्त हूँ, मेरा वह दावा है। मुझको किसी के प्रमाण पत्र की जरूरत नहीं। मेरा दावा यह है कि मेरे नजदीक सब दोस्त हैं, ऐसा नहीं है कि चलो मुसलमानों की, पारसियों की, यहूदियों की और क्रिस्टियों की मैं खुशामद करूं और उनको खुश रक्खूं और हिन्दू कौन है, सिक्ख कौन है वह तो मुझको क्या करने वाले हैं, इसलिए उनकी बेपरवाही करूं। ऐसा घमंडी आदमी मैं नहीं हूँ। मैं तो एक की सेवा करता हूँ तो सबकी सेवा उसमें आ जाती है। सबकी सेवा करके

मुसलमान की सेवा कर लेता हूँ । अगर एक मुसलमान की सेवा कर लेता हूँ जो कि मानो खूनी है लेकिन उसकी खूनी वृत्ति पीछे शान्त हो जाती है वह अच्छे काम में लग जाता है, ऐसे मुसलमान मेरे पास पड़े हैं तो इसमें मैंने मुसलमान का तो भला किया लेकिन दूसरों का भी भला कर लिया। मेरे जीवन में, पाँच सात वर्ष का जीवन थोड़े ही है, ६० वर्ष के पहले से ठीक उसी धारा के मुताबिक मेरा जीवन चला है, ऐसे लोगों के साथ मैं मिला जुला हूँ । उसमें देखा है कि कोई बुरा है ही नहीं । इसलिये जब मेरे चारों ओर वह चीज़ आई तो मैंने सोचा कि वह आप लोगों को सुना दूं । मेरे पास आती है कि सिक्खों के लिये ऐसा कहा जाता है कि हर एक सिक्ख मुसलमान को अपना दुश्मन मानता है और हर एक मुसलमान सिक्ख को अपना दुश्मन मानता है । एक दूसरे को दुश्मन मानना शुरू हुआ है। यह बात बिल्कुल गलत है । ठीक है सिक्ख काफी तादाद में दीवाने बने, मुसलमान दीवाने बने, लेकिन ऐसा कहना कि सारे सिक्ख की औलाद और सिक्ख जाति ऐसी है या मुसलमान की जाति ऐसी है वह मैं कहूँगा कि वह अधर्म की चीज़ है। मेरे सामने दृष्टान्त पड़े हैं, और वह जो कहने वाले हैं वह खुशामद करने के लिए नहीं कहते। वह मुझको सुनाते हैं हिन्दू सिक्ख सुनाते हैं, हमको तो मुसलमानों ने बचाया है । चारों ओर से हमला हो रहा था आक्रमण होता था लेकिन मुसलमान हम को लेगये और हमको अपने घरों में रक्खा । जहां तक बन सकता था वहां तक अपने घरों में रक्खा और पीछे जब हार गये और जब देखा कि अब तो यहाँ हमला होने वाला है, तो सोचा, मुसलमानों पर हो उसकी तो परवाह नहीं लेकिन जिनको आश्रय दिया है अपने घर पर उस पर हमला हो जायेगा यह कैसे बरदाश्त करें । सो किसी न किसी तरह से इन सिक्खों और हिन्दुओं को हटाया जाय । इससे वह आज बचे हुए हैं । जो बचे हैं उनकी जबान से या उनके रिश्तेदारों की जबान से मैं यह बातें सुनता हूँ । ऐसा कई जगह हुआ है । हिन्दुओं और सिखों ने, मुसलमानों को बचाया है । पंजाब में भी ऐसा मिलता है, सरहदी सूबे में भी कई जगह ऐसा मिलता है । कोई जगह ऐसी खाली नहीं जहां ऐसे शरीफ मुसलमान न मिले हों और ऐसे शरीफ सिक्ख न मिले हों और ऐसे शरीफ हिन्दू न मिले हों। हर जगह पर ऐसे लोग पड़े हैं । मैं हमेशा बातें तो काफी सुन लेता हूँ तो मुझको ऐसा लगा कि मैं आपको भी वह सुना तो दूं ।

दूसरी चीज़ तो आप अखबारों में देखते हैं। अखबारों को तो मैंने एक दफा कह दिया है कि कैसा अच्छा हो कि अखबार हमको इश्तयाल दिलाने

की बातें छोड़ दें। कोई न लिखे कि आज इस जगह पर हिन्दू ने काटा, या सिक्ख ने काटा या मुसलमान ने काटा। इसके बदले में जितनी अच्छी चीज़ें हों वह छापें। बुरी चीज़ें छिपी नहीं रहतीं, वह किसी न किसी तरह से लोगों की नजरों में आ जाती है। तो अच्छा यह है कि जितनी अच्छी चीज़ें हैं वह उनको वजन दें। एक ने अच्छा किया तो ऐसा न कहें कि हज़ारों मुसलमानों ने ऐसा किया। एक सिक्ख ने किया तो लाखों सिक्खों ने किया ऐसा कहो तो वह बुरी चीज़ है। उसका असर नहीं होता। जिसकी हस्ती नहीं है उस चीज़ को सुनाने से क्या फ़ायदा हो सकता है? उससे तो नुकसान ही होता है। एक सिक्ख की उसने भलाई की, दोस्ताना तौर से बर्ताव चलाया तो वह कहना चाहिये उसको जितना श्रृंगार कह सकते हो कहो, लेकिन कहें खालिस बात। बढ़ा कर या कम करके नहीं ऐसी चीजें अगर अखबार में भरी रहें तो अखबार जो आज एक बड़ी जबर्दस्त ताकत बन गये हैं, वह बहुत बड़ा काम कर सकते हैं।

अभी मुझको एक और बात सुनानी होगी। आज मैंने अख़बार में देखा यू० पी० में कोर्ट इत्यादि की भाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि रखी है। कितने ही हिन्दू और सिक्खों ने यह सुना होगा तब सोचा होगा। चलो अच्छा है अब हमको दांव मिल गया। हमारी हुकूमत है इसलिये हम ऐसा कर सके। क्या कर सके? मैं देखता हूँ कि अब से कोर्टों में, धारा सभा में, लेजिस्लेटिव कौंसिल, असेम्बली में ऐसे ही हर जगह पर यहाँ की ज़बान हिन्दी होगी और वह देवनागरी लिपि में लिखी जायगी। लेकिन उसके साथ ही साथ ऐसा कह देना कि उर्दू तो निकम्मी चीज़ थी चली गई बुरी बात है। काफ़ी तादाद में मुसलमान यहाँ पड़े हैं। वह तो उर्दू बोलने वाले हैं अच्छा होगा कि वह लोग भी देवनागरी लिपि में लिखें। अगर हम दोनों लिपियों में लिखते हैं तो पीछे ज़बान तो एक ही रहने वाली है, एक ही रह सकती है। दूसरा क्या हो सकता है। पहले कोर्ट में जो अर्ज़ी जानी होती थी वह देवनागरी लिपि में न होकर उर्दू लिपि में लिखी जाती थी। ईश्वर भला करें मालवीय महाराज का, वह तो चले गये मगर उन्होंने काफ़ी काम किया। उन्होंने सोचा कि हिन्दी ने या देवनागरी ने कुछ गुनाह तो नहीं किया, वह ठीक बात है, वह चलने वाली चीज़ थी, लेकिन मालवीय जी महाराज भी ऐसा नहीं कहते थे कि यह उर्दू लिपि है उसे मार डालो। वैसा मैंने उनकी ज़बान से सुना नहीं। मैं उनके साथ काफ़ी बैठा हूँ। डाक्टर भगवानदास हैं, वह भी लिखते हैं तो उसमें पीछे कोई कठिन उर्दू शब्द आ जाता है तो वह उसका हिन्दी ब्रैकेट में

लिख देते हैं और जब संस्कृत शब्द आते हैं तब भी ऐसा ही करते हैं जिससे हिन्दी उर्दू जानने वाले दोनों समझ सकें। इसलिये उन्होंने दोनों तरह के शब्द लिखने का रिवाज डाला। उसी यू० पी० में आज ऐसा बन गया है कि उर्दू का बहिष्कार हो। बन गया है या बन जायगा मगर उसे सुधार सकते हैं। सरकुलर निकला है तो उसे तबदील कर सकते हैं। मैं जानता हूँ कि इस बारे में मेरी आवाज़ अकेली ही होगी। उससे मुझे क्या। एक भी आवाज़ रहे, अकेली ही रहे लेकिन अगर वह सही है, धर्म की बात बताती है, धर्म को बतलाने वाली चीज़ है, तो शास्त्रों ने कहा है कि एक ही कहने वाले हो तो भी लोगों को वह सुना तो दो। वे सुनें या न सुनें वह उनकी बात है। इसलिये मुझको लगा कि मैं यह आपको सुनाऊंगा, और आज सुना दिया। मैं यह कहूँगा कि यू० पी० वाले तो बड़े काम करने वाले हैं। वह अपने साथ मुसलमानों को रखना चाहते हैं, वह नहीं कहते हैं कि वहां जितने मुसलमान हैं वह चले जायं। एक जगह आज ही अख़बार में देखा कि जितने मुसलमानों की तादाद पाकिस्तान छोड़कर है उसमें एक चौथाई तो यू० पी० में रहते हैं। अब क्या वे करें। मुझको, आपको सबको यह सोचना है कि क्या इतने मुसलमान हैं उनको मार डालें, मारें नहीं तो क्या उनकी तौहीन करें, उनको गुलाम बना दें? या कि उनको भगा दें? कहें आप यहां नहीं रह सकते। चले जायँ। मेरे जहन में यह चीज़ आती ही नहीं। मुझको तो बुरा लगेगा कि क्योंकि मेरी यानी हिन्दुओं की तादाद बहुत है, मैं आज घमंडी बन जाऊं। और मुसलमान थोड़ी तादाद में पड़े हैं इसलिये मैं मुसलमानों को बस दबा दूं, उनको गुलाम कर दूं या सब को मार डालूं। अगर ऐसा नहीं होने देना तो उनको चले जाना है। इन तीनों चीज़ों में से एक भी मैं बरदाश्त नहीं कर सकता हूँ। इससे मेरा क्या भला होगा? अगर मैं आज बड़ी तादाद में हूँ तो जो छोटी तादाद में पड़ी हैं उनका मैं यह हाल करूं तो मेरा हाल आयन्दा क्या होने वाला है? मेरे बच्चों का क्या हाल होगा, लड़कों का क्या होगा? जब मैं यह सब सोचता हूँ तो कांप उठता हूँ और कहता हूँ कि ऐसा हमसे कभी नहीं होना चाहिये। इसलिये मैं कहूँगा कि हम इतनी बड़ी तादाद में पड़े हैं और काफ़ी संस्कृत जानने वाले हैं, इतना ही नहीं उर्दू भी काफ़ी जानते हैं तो भी कहते हैं कि उर्दू में हम नहीं लिखेंगे, हम तो हिन्दी में ही लिखेंगे, वह मुझको लगता है कि अच्छा नहीं है।

कहो सब हिन्दी सीखें, उसमें मुझे कोई दिक्कत नहीं आती। तो सबको जितने मुसलमान पड़े हैं, हिन्दू पड़े हैं दोनों को दोनों लिपियों में लिखना है, दोनों

लिपि में उनको इम्तिहान देना है, वह उर्दू भी जानें और देवनागरी भी जानें उससे कोई शिकायत नहीं कर सकता है। और करें भी तो उसके कुछ मानी नहीं रहते। ऐसे शिकायत करने वाले हमेशा पड़े रहते हैं। ईश्वर का नाम लेने में भी शिकायत करने वाले दुनिया में पड़े हैं। कोई पुण्यात्मा बने उसकी भी शिकायत करने वाले पड़े हैं इसमें भी कोई चालाकी होगी, फरेब होगा। ऐसे कहने वाले दुनिया में पड़े हैं तो ऐसी शिकायत तो होगी। लेकिन पीछे उसकी कोई हस्ती नहीं रहने वाली। तो मैं यह कहूँगा कि ऐसा हमें आज करना नहीं चाहिये जैसा हमने अभी शुरू कर दिया है। खास करके जब कहते हैं कि हम मुसलमानों को हटा देना नहीं चाहते। वह खुद ही चले जायँ तो ठीक है, वह तो मैं बिल्कुल समझ सकूंगा। लेकिन हम उनको मजबूर करें और पीछे उनकी जबान से कहला दें कि उन्हें यहाँ नहीं रहना है क्योंकि हम उसकी तौहीन करते हैं, उनको हम गुलाम जैसा बनाते हैं, या तो उससे भी ज्यादा, मार डालते हैं, काट डालते हैं। पीछे आप कहें कि हम कहाँ काटते हैं, हम कहां कहते हैं कि आप जायँ वह निरर्थक होगी। आप सबको मार डालें या सबको गुलाम बनायें तो उनको जाना ही है। मैं कहूँगा कि उनको जाने पर मज़बूर करना है। अगर हम उनको खुशहाल रखते हैं लेकिन उनकी झूठी खुशामद नहीं करते हैं, वह कहें कि हमको तो गवर्नर बना दो, या हमको यह चीज़ दे दो वह चीज़ दे दो वह नहीं दे सकते हैं, ऐसा करें और उस पर वह नाखुश होकर चले जायं तो भले चले जायं। वह दूसरी बात है। लेकिन हम अपने फर्ज़ अदा करें और पीछे उन्हें जाना हो तो चले जांय। लेकिन हम अपना फर्ज़ अदा न करें और पीछे सोचें कि वे चले जायें तो वह तो उन्हें मजबूर करने जैसी बात हो जाती है। मैं कहूँगा आप देखें तो सही कि यू. पी. में यह चीज़ कैसे बनी? उनकी जो सब से बड़ी मसजिद है वह यहां पड़ी है, आगे चलो आगरा पड़ा है, आगरे में इतने मुसलमानों की यादगारें पड़ी हैं, फोर्ट पड़ा है, ताज महल पड़ा है, क्या उसका कब्जा लेकर हिन्दू बैठ जायेंगे? और चलो आगे, लखनऊ में चले जाओ तो लखनऊ में जहां देखो, वहाँ तो कुछ न कुछ उनकी निशानी देखने में आती है। पीछे देवबन है वहां चले जाओ तो इतनी आलीशान उनकी जगह पड़ी है, जहां इतना सिखाया जाता है, उर्दू सिखाई जाती है, अरबी सिखाई जाती है फ़ारसी सिखाई जाती है। वहां तो आपके नेशनलिस्ट मुसलमान बहुत पड़े हैं जिन्होंने इतनी मारपीट बरदाश्त की है तो भी अपने विचारों पर कायम रहे हैं आजमगढ़ चले जाओ जिस जगह जाओ वहां वही चीज़ देखने में आती है। काफी हिन्दू यहां यू. पी

में पड़े हैं, उर्दू जानने वाले हैं। सर तेजबहादुर सप्रू उर्दू के विद्वान हैं। यू. पी. में पड़े हैं, असल तो काश्मीर के हैं। उनका खाना पीना एक ही है। उनके इतने मुसलमान दोस्त पड़े हैं, क्या करें। उनको कहोगे कि नहीं आपको उर्दू तो छोड़नी होगी और देवनागरी लिपि में लिखना होगा? शायद डाक्टर सप्रू देवनागरी लिपि जानते होंगे लेकिन नहीं जानते तो उनको कहो, कि उन्हें तो वह जानना ही होगा तो वह मुश्किल होगा। वे इतने बूढ़े हो गये हैं, शायद मुझ से बूढ़े हो गये हैं, तो उसको क्या मजबूर करना था? हां उनके लड़के हैं वह तो सब देव नागरी जानते हैं ऐसा मेरा ख्याल है। नहीं जानते तो सीख लें यह मैं समझ सकूंगा। लेकिन उनका यह कहना कि उर्दू को भूल जाओ वह कैसे हो सकता है। और भी बड़े-बड़े हिन्दू बुजुर्ग पड़े हैं वे उर्दू जानने वाले हैं। यह कहो कि वे तो मुसलमान राजाओं के जमाने से उर्दू सीखे हैं, हमारी जबान से अच्छा नहीं लगेगा। मुसलमान वहां के राजा बन गये थे। यू० पी० में जो मुसलमान पड़े हैं वह तो, मैंने एक दफा कहा है, एक वक्त हिन्दू थे। उसमें से मुसलमान बने हैं। तो क्या उनको हम मार डालें या उन्हें हिन्दू बनायेंगे। वह हो नहीं सकता। वह सब चीज़ करें तो, आज दुनिया में चलने वाली चीज़ नहीं है और हम अपने हाथों से अपना गला काटने वाले हैं। इसलिये मैं कहूँगा कि इतनी ज्यादती हम न करें। अगर हमने ऐसा किया तो हमारी ज्यादती की इन्तहा होने वाली है। दो लिपि सीखने में इतनी बड़ी बात क्या है? बात इतनी ही रह जाती है कि एक लिपि के बदले मेरी लड़की, मेरा लड़का, मेरी बीबी सब दो लिपियां सीखें। उसमें उनका कोई नुकसान नहीं होगा, उससे फ़ायदा ही पहुँचता है। लेकिन थोड़ी सी हमको मेहनत करनी पड़ती है। वह क्यों न करें? यह कहो कि रोमन लिपि लिखो तो लोग खुश हो जाते हैं। वह क्यों? वह तो गुलामी में से आयी और वह तो यहां बनी भी नहीं तो मुगल वगैरह जो आये वे तो यहां के बने। वह नहीं कहते थे कि हमारा मुल्क मध्य एशिया में पड़ा है। ऐसा नहीं है कि मुसलमान अरबिस्तान से आ गये हैं मोपले कोई नहीं कहते कि हमारा मुल्क हिन्दुस्तान से बाहर है। ऐसा कोई मुझ को मिला नहीं हैं। वे ऐसे यहां के बन गये हैं। उनको क्या आप विदेशी बना देंगे? उनसे आप कहेंगे कि तुम्हें यहां से चला जाना है? ऐसा करें तो मैं यह कहूँगा कि वह हमारी ज्यादती की इन्तहा होगी। इसलिये मैंने सोचा कि आपको यह सब कहूँगा और आप भी समझ लें कि मेरा काम ऐसा ही बना है। मेरे हाथ में कोई हुकूमत है नहीं।

मैं तो मुहब्बत से समझा सकूं या बता सकूं, जो जाहिर मत है, जनता का

मत है उस पर असर डाल सकूं, तो मेरा काम काफ़ी हो जाता है। मैं किसी को मजबूर नहीं कर सकता इसलिये मैं बार बार कहूँगा कि यू. पी. के लोगों ने जो किया है उसको फिर से सोचने में आपकी नदामत नहीं होने वाली। अच्छी बात समझ कर जो करेगा, उस पर ईश्वर भी खुश होगा और उससे हम हिन्दू धर्म की रक्षा करने वाले हैं। आज जो हो रहा है इस तरह से हम हिन्दू धर्म क. रक्षा नहीं कर सकते, इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं है।

* *

१६ अक्टूबर, १९४७

एक वस्तु तो मैं भूल जाता था। मैसूर में क्या हुआ वह आप लोगों ने देखा होगा। मैसूर में तो रामस्वामी मुदालियर वह दीवान हैं और मैसूर को इंडियन यूनियन में आ गया है। मैसूर के लोग काफी लिखे पढ़े हैं, काफी सत्याग्रह भी करने वाले हैं, काफी तकलीफ़ भी सहने वाले हैं, तो इस वक्त भी लोगों की तरफ से कुछ सत्याग्रह हो रहा था। प्रजा की मांग थी कि मैसूर के लोगों को प्रजातन्त्र चाहिये और लोगों को राजतन्त्र में काफी हिस्सा होना चाहिये। राजा है तो राजा तो रहे लोग राजा के वफादार भी रहेंगे लेकिन राजतन्त्र के मातहत रहे। होना तो ऐसा ही चाहिये, इसमें कोई शक नहीं है। तो भी ऐसा होता नहीं था। पीछे लोगों ने सत्याग्रह शुरू किया। मुझे तार दिया कि हम सत्याग्रह करते हैं, समझ बूझ कर हम कभी सत्याग्रह के कानून के बाहर नहीं जाने वाले। उस कानून में रह कर हमको जितनी तकलीफ़ बरदाश्त करना होगा वह करेंगे। आखिर में वहां आज जो दीवान हैं वह काफी बाहोश हैं। सारी दुनिया में उन्होंने भ्रमण किया है तो पीछे वह लोगों को हलाक करते रहें ऐसा कैसे हो सकता है। सो आखिर में रियासत के सत्ताधीशों और प्रजामंडल वालों के बीच में सुलह हो गई और जो कैद में चले गये थे वह सब छूट गये। मैसूर राज्य और लोगों के बीच में एक खासा सुलहनामा बन गया। लोगों की जो बाकानून दलील थी, मांग थी, वह सब राज की तरफ से स्वीकृत हो गई है। यह बड़ी बात है। हर जगह कुछ न कुछ असन्तोष तो चल रहा है। इतने में यह हो जाता है सो अच्छा है। तो हमको दोनों को, राजा और प्रजा को, दीवान साहब, महाराजा साहब और सबको धन्यवाद देना चाहिये क्योंकि वे धन्यवाद के, मुबारकबादी के लायक हैं। उन्होंने कबूल

कर लिया है कि लोगों को राजी रखकर ही अपना काम चलाना है। कैसा अच्छा हो कि सारे के सारे देशी राज्य मैसूर के जैसा करें, जिससे लोग राजी रहें और राजा भी राजी रहे। राजा गद्दी पर बैठे रहें लेकिन ऐसे जैसे कि इंग्लैंड के राजा गद्दी पर बैठते हैं। जो प्रधान कहे, जो प्रजा कहे वह उसको करना है, उसके बाहर वह नहीं जा सकता। तो एक तो वह बात मैं आप लोगों को कहना चाहता था।

दूसरा तो आप लोगों को कह दिया है। यह तो एक गृहस्थ का मकान है। बिरला भाई यहाँ सबको आने देते हैं वह उनकी कृपा है। हमें उनकी कदर करनी चाहिये। मैं जानता हूँ कि यहाँ हमारी छोटी प्रार्थनासमाज बन गई है। प्रार्थना-समाज में तो लाखों लोग आते भी मैंने देखा है लेकिन यहां ऐसी जगह नहीं है, और मैं ऐसी आशा भी नहीं करता हूँ। इतने आते हैं वह काफ़ी हैं। लेकिन उनमें पंजाब से और दूसरी जगह से आये हुये पीछे निराश्रितों में से भी यहाँ आते हैं तो मैंने सुना कि प्रार्थना में आने वाले दरख्तों के फल तोड़ लेते हैं। सुनकर मुझे बड़ी चोट लगी, फलों वाले बहुत दरख्त तो हैं नहीं। लेकिन जो कुछ भी हैं उसमें से एक भी फल को हम में से कोई छू नहीं सकता। मैं तो किसी चीज को छूता नहीं हूँ। एक पत्ती भी मैं नहीं छूता। उनका आज यहाँ माली रहता है कुछ भी छूने से पहले उसकी इजाजत लेनी चाहिये। बगीचे की देखभाल करने वाला रक्षक माली है। माली को अच्छा नहीं लगेगा कि अपने आप कोई एक भी फल काटे। फल काटने का समय रहता है, क्या काटना चाहिये, क्या नहीं काटना चाहिये, यह तो माली ही कह सकता है। हम उसके पास से मांग सकते हैं। लेकिन जबर्दस्ती तो नहीं कर सकते। ऐसा एक किस्सा बन गया है। सो मैंने सोचा कि आप लोग जो यहां आते हैं वह तो ईश्वर का नाम लेने के लिये आते हैं, हृदय में भी ईश्वर को रखते हैं। तो कम से कम प्रार्थना समाज में हम पवित्र रहें, पाक रहें और मन को साफ करें तब हमारे दिल में ऐसा नहीं आना चाहिये कि हम किसी की चीज़ ले सकते हैं। इसके तो माने हो गये कि हमने चोरी की। हम चोरी कैसे करें? हम तो सज्जन हैं, हम तो अच्छे हैं, आज सब दुख में पड़े हैं वह दूसरी बात है। लेकिन जो हमारी सज्जनता है उसको हम कभी न छोड़ें। मैंने सोचा कि इतना मैं कह दूंगा और आप लोग मैं जो कहता हूँ, जिस दृष्टि से और मोहब्बत से कहता हूँ उसको समझ बूझ कर चलेंगे तो मुझको बड़ा अच्छा लगेगा।

अभी मेरे पास एक शिकायत आई है मेरे पास सारे दिन भर लोग आते ही रहते हैं। उन्होंने कहा यह क्या बात है कि प्रार्थना सभा में तुमने तो जो सिविल

सर्विस है, पुलिस है, मिलिटरी है उनको योग्यता का प्रमाण पत्र दे दिया कि वे तो बड़े अच्छे हैं, जो हुकुम होता है उसकी तामील करते हैं। मैंने कहा भाई ऐसा तो मैंने कहा नहीं, और कहा भी हो तो मैं मानता हूँ कि मैंने बेवकूफ़ी की, असावधानी में कह दिया। लेकिन मैंने तो कहा ही नहीं। ऐसी असावधानी मैं करता नहीं हूँ। मैंने क्या कहा वह समझने लायक बात है। एक क्रिया फल है उसका हम अच्छी तरह से इस्तेमाल न करें तो अर्थ बदल जाता है। कोई कहे कि वह आदमी आता था ऐसा कहे तो एक चीज़ हो जाती है। अगर ये कहो कि उसको आना चाहिये तो दूसरी चीज़ बनी। मैंने जो कहा था उससे मैंने किसी को प्रमाण पत्र नहीं दिया, मुझको ऐसा करने का हक नहीं है। मैं उनको पहिचानता नहीं हूँ, शायद किसी को नाम से पहचानता हूँगा। मुझको क्या पता है वह सब वफ़ादारी से काम करते हैं, या नहीं। मैंने तो उनको कहा कि जो पुलिस के लोग हैं, मिलिटरी के लोग हैं, सिविलियन हैं वे अधिकार से हक़ की बात कहें तो हमारा धर्म है कि उसके मुताबिक करें। मुझे कहा गया है कि उनसे गैर इंसाफ़ हो सकता है। वे इंसाफ़ की ही बात करेंगे ऐसा नहीं। लेकिन हम अपना काम अच्छी तरह से करना चाहते हैं। हम पंचायती राज्य चाहते हैं तो पंचायती राज्य का पहिला नियम यह है कि पंचायत जो हुक्म करे उसकी तामील करें। उससे उलटा हमने अंग्रेज़ी सल्तनत के सामने करके बताया। करके बताया इतना ही नहीं उसमें से हमने अच्छा नतीजा भी पाया, बुरा नहीं। अगर हम अपने दिल को अहिंसक बना सकते तो पूरा नतीजा पाते और आज जो नजारा हमारे सामने है वह कभी नहीं होता। वह तो हुआ। पूरा नतीजा तो हमने नहीं पाया इतना तो हुआ कि अंग्रेज़ी हुकूमत यहाँ से उठ गई। थोड़े अंग्रेज़ अफसर तो पड़े हैं, हमारे गवर्नर जनरल साहब हैं वह भी अंगरेज़ हैं, मगर उनको आज हमारे मातहत रहना है, आज वे हमारी सरदारी नहीं कर सकते। वह तो बहुत बड़े हैं, गवर्नर जनरल हैं, वह नौका सेना के बड़े अफ़सर रहे हैं, बड़े तेजस्वी हैं, वह बादशाही कुटुम्ब के हैं मगर वह हमारे नौकर होकर रहते हैं। हमारा प्रधान मंडल है वह कहे उसके मुताबिक उन्हें करना पड़ता है। अगर ऐसा न करें तो एक दिन के लिये काम चल नहीं सकता। इतना फर्क आज हो गया है। जो अंग्रेज़ रहते हैं वह आज हमारे ऊपर हुक्म करने वाले नहीं हैं। वे हमारे हाकिम नहीं, बल्कि हम उनके हाकिम हैं। इस प्रकार आज जो हमारी हुकूमत क़ायम हो गई है वह पंचायत राज्य है और उसके हुक्म पर सबको चलना चाहिये। हमारे लोगों का जो हुक्म निकले उसकी सबको ताईद करनी चाहिये। उनकी ग़लती हो सकती है।

वे लोग ग़लती करें तो उसका हमारे पास कोई इलाज नहीं, ऐसा थोड़े है ? उसका इलाज हमारे हाथ में यह है कि हम हुकूमत के पास चले जांय, उन्हें उनकी ग़लती बतावें। हम अखबारों के पास चले जांय, शिकायत करें कि देखो इस अफ़सर ने ऐसा कर लिया वह बिल्कुल निकम्मा था, उसने रिश्वत खा ली, उसने जो हुक्म दिया वह देने के लायक़ नहीं था। मैंने सुना है कि किसी किसी जगह पर रेल्वे स्टेशन पर उन लोगों ने कोड़े मारना शुरू कर दिया है। किसी अफ़सर को कोड़े मारने का कोई हक नहीं है और जो इस तरह करता है वह अपने अधिकार से बाहर जाता है। तो ऐसी शिकायत तो हम कर सकते हैं लेकिन एक अफ़सर ने ऐसा किया तो हम भी उसके सामने कोड़ा मारें तो पीछे हम गिर जाते हैं। ऐसा हमें नहीं करना चाहिये। मैं यह सब कहना चाहता था। हमें कैसा होना चाहिये यह मैंने कह दिया। पहिले जो सिविल सर्विस थी, मिलिटरी थी, पुलिस थी वह तो एक पर राष्ट्र के, अंग्रेज़ी सत्ता के मातहत काम करते थे, वह हमको मार सकते थे और वह हमारे हाकिम बन कर बैठ गये थे। वायसराय साहब के नाम से हमारे ऊपर हुक्म चलाते थे, चला सकते थे, रिश्वत खाते थे लेकिन आज के सिविलियन ऐसा काम नहीं कर सकते, उसको रिश्वत नहीं खानी चाहिये। खाते नहीं हैं वह मैं नहीं कहना चाहता। मुझको उसका पता नहीं है। अगर खाते हैं तो बड़ा गुनाह करते हैं, आपका गुनाह करते हैं, हमारा गुनाह करते हैं, हिन्दुस्तान का गुनाह करते हैं। अभी कल तक जो रिश्वत खाते थे वह भी गुनाह करते थे, मगर वे हमारे नौकर नहीं थे, नौकर तो वह अंग्रेज़ी सल्तनत के थे। उसका गुनाह करते थे। जो कुछ भी करना चाहते थे वह करते थे। लेकिन आज कितना बड़ा फर्क पड़ गया है। वह फर्क बतलाने की मेरी चेष्टा थी वह मैंने आपको बतला दिया।

अभी एक दो बात रह जाती है। नोआखाली के लोग मेरे पास आ गये थे। मुझको सुनाया कि वहां अमन है सो तो ठीक है लेकिन जो पूर्वी पाकिस्तान है जिसमें नोआखाली है, त्रिपुरा है, ढाका है, ऐसे काफी शहर पड़े हैं वहां से और ज़्यादातर ढाका डिस्ट्रिक्ट के लोग वहां से भागे जाते हैं। उनको कुछ ऐसा लग रहा है यहां कुछ ज़्यादती होने वाली है और हम यहां आराम से सामान रख नहीं सकते। जिन्हें ऐसा लगे वे भले चले जायं। जो बंगाली भाई मेरे पास आ गये उन्होंने पूछा उसके लिये क्या होना चाहिये। तुम तो कहोगे कि नहीं भागना चाहिये। तो मैंने कहा कि मैं ज़रूर ऐसा कहूँगा। मैं उन लोगों को और ऐसे सब लोगों को जो पाकिस्तान में पड़े हैं कहना चाहता हूँ कि उन्हें अपना स्थान नहीं

छोड़ना चाहिये। जो बहादुर हैं वह डर से अपनी जगह नहीं छोड़ते। डर तो बुज़दिल को लगता है। जो बहादुर लोग होते हैं वे किसी से डरते नहीं। यदि डरते हैं तो केवल ईश्वर से। मर जाने के पीछे वह अपनी जगह छोड़ें। बुज़दिल बनकर कोई भी आदमी किसी जगह पर नहीं रह सकता। बुज़दिल बनकर जान बचाकर भाग आवें। ऐसा मेरी जबान से आप कभी सुनने वाले नहीं हैं। लेकिन जिनमें हिम्मत हो, जिसमें मरने की ताक़त हो वह रहे, उसकी लड़की रहे, उसकी पत्नी रहे, उसकी मां रहे, बाप रहे, सब कोई रहे। अगर मरना पड़े तो मर जाय। साफ़ कह दे हम किसी को मारना नहीं चाहते हैं। हम आपको तकलीफ़ देना नहीं चाहते हैं। हम इस पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तान के वफ़ादार बनकर रहना चाहते हैं और अगर हम पाकिस्तान पर किसी की तरफ़ से हमला हुआ तो उस हमले का सामना करने वाले हैं। हिन्दू हैं तो क्या हुआ, सिक्ख हैं तो क्या हुआ, हमारा फ़र्ज़ है कि हम यहां पड़े हैं, यहां के रहने वाले हैं तो यहां के वफ़ादार रहें। जिस दरख़्त पर बैठे हैं क्या उसकी जड़ काटने की तज़वीज हम करेंगे? ऐसे बेवफ़ा हम नहीं बनेंगे। बेमानी चीज़ मैं नहीं कहूँगा। लेकिन वहां की हुकूमत, वहां अक्सरियत में मुसलमान पड़े हैं वह गड़बड़ करें और गाली दें, हमारी बहिनें हैं उनपर बदनजर करें तो वह नहीं कर सकते। तब पीछे हमको बताना है कि आप यह नहीं कर सकते। कर सकते हैं तो इतना ही कि हमको मार सकते हैं, हमारी लड़की हैं उसको भी काट सकते हैं। मगर लड़की को छीन नहीं सकते हैं, लड़की को आप उठा नहीं ले जा सकते हैं। और अगर वह ऐसा कहें कि इस्लाम कबूल कर लो और राम नाम मत लो, ईश्वर का नाम मत लो तो हम ऐसा भी नहीं कर सकते।

राम नाम तो हम लेंगे। या तो तुम्हारा दशहरा का दिन है, नकारा बजाता है, वह कहे मत बजाये। आज पाकिस्तान में हिन्दू ऐसा नहीं कर सकते तो उन हिन्दुओं को कहना चाहिये कि नक्कारा तो बजेगा, आपको तकलीफ़ देने के लिये नहीं, मगर वह तो हमारे धर्म का हिस्सा बन गया है। हम नक्कारा बजायेंगे पीछे आप हमारे ऊपर हमला करेंगे, हमें मारेंगे तो मारें वह मगर बहादुरी की बात नहीं होगी। ऐसे बहादुर बनकर वहां न रह सकें तो मैंने कह दिया है कि उनको वह जगह छोड़नी चाहिये।

दूसरा मैं कहूँगा कि अपनी जान बचाने के लिये बड़े आदमी भाग जायें और वहां जो अस्पृश्य माने जाते हैं या जिनको शिड्यूल्ड कास्ट, शूद्र लोग कहते हैं उन्हें पीछे छोड़ दें, वह ठीक नहीं। वे लोग वहां बहुत बड़ी आबादी में पड़े हैं,

और अच्छे तगड़े हैं, लेकिन वह विचारे अकेले इतनी बहादुरी कैसे दिखायेंगे ? वहां जितने सिक्ख पड़े हैं, हिन्दू पड़े हैं, उनके मकान हैं थोड़ी जायदाद है उसको वे छोड़ भागें ? और मेरे पास पैसा पड़ा है, मैं तिजारत करता हूँ, मैं वहां से भाग जाऊं, वह मेरा काम नहीं है । मेरा काम यह है कि मैं डाक्टर हूँ, वकील हूँ या तो मैं एक बड़ा ताजिर हूँ तो मेरा धर्म है कि जब तक सब पड़े हैं तब तक मुझे वहां रहना ही है । जो ग़रीब हैं उनको हम मदद दें, और हमारी मदद से अगर वे वहां आराम से नहीं रह सकते हैं तो वे लोग पहले वहां से चले जायं और पीछे हम लोग जावें । मेरा काम यह नहीं कि मैं तो सिक्ख हूँ सो पहले वहां सें अपना काम उठा लूं, दूसरी जगह मैं अपना इन्तज़ाम कर लूं, वह इन्सानियत नहीं । इस तरीक़े से हम हिन्दू धर्म को, सिक्ख धर्म को या तो इस्लाम को बढ़ा नहीं सकेंगे । उनको बढ़ाने का तरीक़ा यह है कि हम किसी भी धर्म में हों हमें ऐसा करना चाहिये कि हम ग़रीब को साथ लेकर चलें, गरीबों के साथ मरें और ग़रीबों के साथ जीयें, उनके अलावा हम जिन्दा नहीं रहना चाहते । आज तो मैं नोआखाली में नहीं हूँ, पाकिस्तान में नहीं हूँ । ईश्वर ने मुझको कहां ऐसा बनाया कि मैं पूर्वी पाकिस्तान में भी रहूँ, पश्चिमी पाकिस्तान मे भी रहूँ और सब जगह रहूँ । वह तो ईश्वर का काम है । मैं तो इन्सान हूँ, पड़ा हूँ । मेरा शरीर यहां पड़ा है ।-वह तो एक ही जगह रह सकता है । लेकिन मेरी आवाज़ तो सब तक पहुँच सकती है । तो मैंने सोचा कि मेरी आवाज़ पहुँचा दूंगा । पीछे दूसरे काफ़ी वहां शूद्र हैं या तो कहो शिड्यूल्ड कास्ट पड़े हैं । इस बात को आज हमारे अम्बेडकर साहब हैं वह उठा सकते हैं । तो उनको भी कह सकता हूँ कि आपकी क्या राय है वह तो बतला दें । उन्होंने जो शिड्यूल्ड कास्ट में बड़ा काम किया है । तो मेरा धर्म हो जाता है और उनको भी कहूँ उनको इस तरह से करना चाहिये । मैं चाहता हूँ कि वे अपनी ज़बान से जो सीधी-सीधी बात है वह लोगों से कहें, और सुना दें कि वहां जो शूद्र पड़े हैं, दूसरे पड़े हैं वह सब अपने धर्म पर कायम रहें । धर्म के लिये मरें और धर्म के लिये जिन्दा रहें । अपना धर्म छोड़कर ज़िन्दा रहना पाप समझना चाहिये । ऐसा कहने से उनमें ताकत आ जाती है । जो हिन्दू पड़े हैं, सिक्ख पड़े हैं उनका धर्म क्या है वह मैंने बतला दिया है । जो लोग शिड्यूल्ड कास्ट के बड़े आदमी हैं होशियार हैं, उसकी कलम खासी चल सकती है, वे भी इस वक्त अपनी आवाज़ को सुना दें तो अच्छा होगा ।

और पीछे मुझको उन भाइयों ने यह कहा कि सुहरावर्दी साहब को वहां

भेजो। वे ठीक कहते हैं लेकिन सुहरावर्दी साहब तो आज यहां हैं नहीं लेकिन मेरी उम्मीद है कि वह एक दो दिन में आ जायेंगे। तो वह तो ऐसा ही कहने वाले हैं कि मैं नहीं चाहता हूँ कि पूर्व के पाकिस्तान में हिन्दू और सिक्खों को मुसलमान हलाक करें। पाकिस्तान में हिन्दू सिख अपने धर्म पर कायम नहीं रह सकते हैं, राम नाम नहीं ले सकते हैं, ऐसा मैं स्वीकार करने वाला नहीं हूँ। मेरा मतलब यह है कि सब्र करने का इल्म सीख लें। इस तरह से करें। वह बहादुर बनें। उसके साथ ही साथ सुहरावर्दी साहब तो जो कर सके करने वाले हैं। वे वहां जाने वाले हैं। दूसरे लोगों को उन्होंने भेज दिया है। मुझको यकीन है कि वह खुद भी वहां चले जायेंगे। चले नहीं जायेंगे तो करेंगे क्या? अगर वहां पूर्वी पाकिस्तान में हालत बिगड़ जाये तो पीछे कहां नहीं बिगड़ेगी यह कहना मुश्किल है। इसलिये मैं समझता हूँ और आप हम सब का स्वार्थ इसी में है, कि हिन्दू मुसलमान सब मिल-जुलकर रहें और अपने दिल साफ़ रखें। इसी तरह आराम से रोटी खा सकते हैं। अगर ऐसा नहीं करते हैं तो दोनों ही मर जायेंगे। अगर ऐसा होता रहा कि पाकिस्तान में तो सब मुसलमान ही रहें, वहां तो बस अल्लाह अकबर का ही नारा पुकारा जाता है, राम नाम कोई ले नहीं सकता तो वह भारी जुल्म की बात होगी। हिन्दुस्तान में हम ऐसा करें कि यहां तो सिर्फ़ राम नाम और गायत्री रहेगी, यहां अल्लाहो अकबर कोई नहीं कह सकता, अगर ऐसा होता है तो हिन्दू धर्म गिर जाता है। इसलिये मेरा तो दोनों को कहना है कि किसी को बिगड़ना नहीं है। हम सब ईश्वर पर भरोसा रखें, सब बहादुर बनें, कोई बुज़दिल न रहे और आपस में मिल-जुलकर रहें। अगर ऐसे नहीं रह सकते और सोचते हैं कि एक दूसरे को काटें, तो काट तो सकते हैं लेकिन उसका नतीजा क्या होगा वह मैंने आपको बतला दिया है।

*

१७ अक्टूबर, १९४७

मुझ पर कुछ खत भी आये हैं और यों भी लोग मेरी खांसी के बारे में चिन्ता बताते हैं मेरी खांसी अभी तक मिटी नहीं, जब मैं प्रार्थना के बाद कुछ कहता हूँ तो भी खांसी आ जाती है। लेकिन इस में से यह नतीजा नहीं निकलना चाहिये कि अभी मेरी खांसी वैसी की वैसी जारी है, ऐसा नहीं है। चार रोज़ से मैं महसूस कर रहा हूँ कि मेरी खांसी दिन प्रतिदिन कम होती जाती है और उम्मीद ऐसी है जितनी बाकी है वह भी जल्दी निकल जायेगी, और प्रार्थना के समय भी जो थोड़ा दिक करती है वह भी नहीं होगा। सारे दिन घर में बैठा रहता हूँ। एक मर्तबा निकलता हूँ। बाहर की हवा लेना वह बुरी बात नहीं है अच्छी बात है। लेकिन हवा में आने से प्रार्थना के बाद बोलते समय खांसी आ जाती है। जब तक शरीर में शक्ति है, खांसी आना कोई बुरी बात है ऐसा मैं मानता नहीं हूँ। दूसरी बात यह है कि आज मैं किसी डाक्टर या वैद्य की दवा नहीं करता हूँ। डाक्टर तो कहते हैं, और एक तो मेरे सामने बैठे हैं कि शुरू में पेनिसलीन ले लेते तो ३ दिन में खत्म होने वाली चीज़ थी। अब उस को तीन हफ़्ते लग गये हैं। इस चीज़ को मैं मानता हूँ। लेकिन साथ साथ मैं यह समझ गया हूँ कि राम नाम वह सब से ऊंची दवा है। कहते हैं कि रामनाम वह रामबाण दवा है। जैसे राम का बाण काम करता था, और जैसे कोई बाण निष्फल नहीं जाता था, उसी तरह से राम नाम रूपी जो दवा है वह भी निष्फल नहीं जाती, लेकिन हां इस के लिये थोड़ा धीरज तो चाहिये। मेरे लिये इस अवस्था में और आज जो स्थिति दिल्ली में, और दिल्ली में ही क्या, सारे मुल्क में चल रही है, उसमें मैं दूसरा चारा नहीं पाता। जो है सब ईश्वर का ही आधार है। सिवाय ईश्वर की मदद के, सिवाय ईश्वर के नाम के हमारे पास

कुछ है भी नहीं। मनुष्य की हैसियत से कितनी भी कोशिश हम करें वह सब की सब बरबाद हो जाती है। मेरे शब्द एक ज़माने में बड़ा असर रखते थे आज नहीं रखते। तो क्या मैं कोई बड़ा गुनहगार हो गया हूँ? आज मैं दिल से बात नहीं करता हूँ जो पहिले करता था, ऐसा तो है नहीं। मैं जानता हूँ कि मैं तो दिल से ही बात करता हूँ। आप भी वही हैं। लेकिन युग बदल गया है। युग की तासीर तो होने वाली है, सब पर होनी चाहिये, मुझ पर भी होनी चाहिये। मैं तो जैसा था वैसा ही हूँ। १५ के साल में जब दिल्ली आया था तब जो कहा वही आज भी कह रहा हूँ। जो मेरी श्रद्धा सत्य और अहिंसा पर तब थी वही आज है बल्कि अगर हो सकती है तो ज़्यादा है। यह मेरी हालत है इसलिये मैं ने कहा कि आज युग बदल गया है अगर मैं नहीं बदला हूँ। श्रद्धा से जो प्रार्थना सुनते हैं उन पर असर होता है। आदमी स्वभाव से जैसा बना है वैसा ही कर सकता है। इस में कृत्रिमता को कोई स्थान नहीं है। मैं आज जो काम कर रहा हूँ वह राम का नाम ले कर करता हूँ, उस पर मेरी श्रद्धा है, तो क्या वजह है कि इस वक्त मुझ पर कोई व्याधि आ जाती है, वह भी एक मामूली सी चीज़ है। तब मैं राम का आश्रय छोड़ दूं। आदमी को व्याधि होती है तो या तो व्याधि दूर हो जाती है या व्याधि आदमी को दूर कर देती है। वह मर जाता है। तो मरना तो सब को है। जन्म के साथ मरण तो लगा ही हुआ है। उस में कौनसी बड़ी बात है। मैं इतनी भी खामोशी न रक्खूँ और इतना भी राम नाम पर विश्वास न रक्खूं कि उस को मेरे पास से कुछ काम लेना होगा तो मुझे ज़िन्दा रक्खेगा, नहीं तो नहीं रक्खेगा। तब वह मुझको मार डालेगा। दोनों चीज़ें मेरे नज़दीक, आप के नज़दीक, जो राम नाम लेते हैं, उनके नज़दीक अच्छी हैं। अभी लड़की ने जो राम नाम का भजन गाया है उस में कहा है कि तू राम नाम ले उस को क्यों भूलता है। काम को भूल जा, क्रोध को भूल जा, राग को भूल जा, मोह को भूल जा, लेकिन राम नाम को मत भूल क्योंकि वही इस जगत् में तेरा सहारा है। तो इस भजन को गाना और चिन्तन करना यह तेरा काम है। लेकिन ऐन मौके पर जब खांसी आती है तो पीछे चलो पेनिसिलीन ले ली या वैद्य दूसरी चीज़ बतलाता है वह ले ली, तो राम नाम कहां गया? वहां राम नाम पर श्रद्धा नहीं रखते हैं तो पीछे यह बड़ा काम है, पेचीदा मुआमला है उस को करने में राम नाम कैसे काम करेगा? तब क्या मेरा पुरुषार्थ काम करेगा? तो मैं कहता हूँ कि अगर मैं बीमारी में राम पर विश्वास नहीं करूंगा तो हीन बन जाऊंगा, निकम्मा बन जाऊंगा। दूसरे मानें या

न मानें लेकिन मैं अपने नज़दीक हीन बन जाऊँगा। मैं तो मानता हूँ प्रार्थना सब कुछ करेगी पुरुषार्थ कुछ नहीं करेगा। तब इस मामूली सी खांसी को हटाने में राम नाम को कैसे भूल सकता हूँ ? इसलिए अगर खांसी जाने में तीन हफ़्ते लग गये और भी थोड़े दिन जाने वाले हैं, तो उसमें कौनसी बड़ी बात है ? मैं ने यह सब इस कारण से कहा कि किसी को मेरी खांसी की वजह से घबराहट न हो। प्रार्थना के समय भी मुझे खांसी आ जाती है और लोगों को दिक करती है। मुझे तो दिक नहीं करती, मुझ पर उस का कुछ असर ही नहीं होता, असर होता है तो यह कि लोग दिक होंगे कि यह तो बड़ी व्याधि है। व्याधि तो है ही मगर अब वह जा रही है। इतना तो मैं ने आप को इस बारे में कह दिया। राम नाम की बात खांसी निकालने की बात में आ गई।

अब हमेशा जैसी आती हैं उसी तरह से आज भी कम्बलियां आ गईं। कुछ चेक भी आ गये हैं। बड़े शौक से एक मुसलमान भाई बंडल दे गये हैं। वह कारीगर हैं। उस में अच्छी कम्बलियां हैं, ढाई रतल रूई है, कुछ रंगीन कपड़ा भी है। रंगीन है तो मैल नहीं लगेगा सफेद पर मैल जल्दी लगता है और देखने में आ जाता है। रंगीन है तो उस पर मैल दिखने में देरी लगती है। मैल तो लगती ही है। कुछ भी हो वे खूबसूरत तो चीज़ बना कर लाये हैं और ऐसी कम्बलियां रख गये हैं। वह सब की सब जिनको पहुँचनी चाहिये उन को पहुँचाने की चेष्टा हो रही है। अब तो जाड़े के दिन आ रहे हैं। मुझे शिकायत का कारण नहीं। मैं नहीं कह सकता कि लोग जितने उत्साह से भेजना चाहिये उतने उत्साह से नहीं भेज रहे हैं। बहुत से भेज रहे हैं। मैं उन्हें धन्यवाद ही देना चाहता हूँ कि इतनी तेज़ी से वह कम्बलियां मेरे को भेज रहे हैं और पैसा भी भेज रहे हैं। कहते हैं कि भाई पैसे में हम तो सस्ती ले नहीं सकते, इस कारण वह पैसे मुझे दे देते हैं। लेकिन उस पैसे से उन की कम्बलियां लेना है, रज़ाइयां लेना है, और लोगों को पहुँचाना है। ऐसा काम चल रहा है।

तो आप को मैंने सुनाया था कि खोराक के बारे में एक कमेटी बैठ रही है। कमेटी ने अपना काम कर लिया है। राजेन्द्र बाबू ने वह कमेटी बुलाई थी, उस कमेटी की रिपोर्ट के बारे पब्लिक में तो यहां कहने का नहीं है। लेकिन मैं ने तो आप को दो बातें सुना दी हैं। मैंने जो सुनाया और जिसे महीनों से मानता आया हूँ उस चीज़ पर और भी कायम हो गया हूँ, और उसको दोहराना चाहता हूँ। वह चीज़ ऐसी है कि गरीब लोग उस से परेशान होते हैं और कोई मुझको खत

लिखते हैं कोई सुना जाते हैं। जो लोग किसानों में काम करते हैं, वह कहते हैं कि जो तुमने कहा उससे किसान लोग बहुत खुश हो गये हैं। आज अनाज पर जो जाब्ता है वह छूट जायेगा तो हम को काम करने का मौका मिलेगा। आज हमारे पास इतना काफ़ी अनाज पड़ा है वह निकल नहीं सकता। वह सारा अनाज हम क्या खायेंगे? उस में से पीछे पैसा भी पैदा करना है। जितना पैसा पैदा हो सकता है उतना अनाज तो नहीं निकल सकता। तो उनको बुरा लगता है कि वह उसका ब्लैक मार्केट करें और कुछ पैसा ले लें। किसान बेचारे स्वभाव से ब्लैक मार्केट करने वाला थोड़े ही है? करके जायेगा कहाँ? थोड़ा १०, २० रुपया उसको मिल जायेगा, उसको ब्लैक मार्केट क्या करना था, ऐसा प्रपंच क्या करना था तो वह सब खुश हो रहे हैं कि मैं कन्ट्रोल उठाने की बातें करता हूँ। तो मुझको लगा कि फिर भी मैं यह कह दूँ और आप की मार्फ़त से हुकूमत को भी सुनाऊँ, दूसरे लोग जिनके हाथों में यह कारोबार पड़ा है उन लोगों को सुना दूँ कि आप इतनी श्रद्धा लोगों पर क्यों नहीं रखते है कि राशनिंग उठा लें। अनाज पर जो एक जाब्ता लगा है उसको छोड़ देते हैं तो उसका नतीजा कभी बुरा नहीं आ सकता। करके देखो तो सही आखिर में हुकूमत तो आप के हाथों में पड़ी है। ऐसा कुछ होगा कि लोगों को अनाज मिलता नहीं है, लोग बदमाश हो गये हैं, और किसान लोग चोरी करके अनाज भरकर रखते हैं, छिपा रखते हैं, ऐसा कुछ होता है। तो दुबारा राशनिंग करना है, तो करो। लेकिन इतनी भी हिम्मत हम न रखें कि हटा कर देखें तो सही, और इस कारण लोग परेशान हों तो हम कहां है उसका कुछ हिसाब नहीं मिलता। पीछे हमारे लोग में तो पंचायत राज के लिये जो स्वभाव होना चाहिये, वह मिलता नहीं है। इस कारण मैं ने सोचा कि मैं यह बात फिर से कह दूँ।

इसी तरह से कपड़े का है। कपड़े के बारे में मिल मालिक मुझको सुनाते हैं कि अब तो हमारे पास कपड़े का ढेर बन गया है। क्यों बन गया है? कपड़े पर जो अंकुश है उसकी वजह से उस को कहां ले जायें, किस तरह से वह कपड़ा निकालें? तो वह कहते हैं अगर उन्हें छूट दे दी जाय तो जो कपड़ा पड़ा है वह लोगों तक पहुँच तो जाये। उसमें वे अपने फ़ायदे की बात नहीं करते हैं। वह तो बिल्कुल लोगों की तकलीफ मिटाने की बात करते हैं। अगर छूट मिलती है तो कपड़ा जिस तरह से लोगों को पहुँच सकता है पहुँचाया जायगा लेकिन यह कितनी भयानक बात है कि हमारे पास हिन्दुस्तान में अनाज तो पड़ा है लेकिन जिसके पास

अनाज पहुँचना चाहिये उसके पास नहीं पहुँच रहा। यही हाल कपड़े का है। कपड़ा जिनको पहुँचाना चाहिये वहां नहीं पहुँच सकता। मुझको ऐसा लगता है है इसमें कोई बड़ा दोष रहा है। और पीछे हमारी सिविल सर्विस पड़ी है। वह बेचारे अपनी कुर्सियों में बैठ कर काम करने वाले हैं। उनके सामने टेबुल हैं, डेस्क हैं, लाल पट्टी है, वैक्स है। लाल पट्टी लगाना, और फाइल बनाना यही उनका पेशा रहता है। कब वे किसानों के बीच में रहे हैं? किसानों का कब उन्होंने परिचय किया है? मैं उनसे बड़े अदब से कहूँगा कि आप ऐसा क्यों मान बैठे हैं कि अगर अंकुश उठ गया तो हम मरने वाले हैं। आपके अंकुश से लोग मर रहे हैं यह तो मैं अपनी खुली आंखों से देख रहा हूँ। अगर अंकुश हट जायेगा तो लोगों में जो अपनापन है, तेज है, बहादुरी है, सचाई है वह सब बाहर निकल आवेगी। आज तो वह सब हम दबा कर रखे हैं। अंकुश उठाने की बात करते समय यह मान लिया है कि लोग पागलपन नहीं करेंगे बदमाशी नहीं करेंगे। बदमाशी करने वाले तो आज भी कर ही रहे हैं, पागलपन करने वाले पागलपन कर ही रहे हैं। लेकिन जो अच्छाई है वह इस तरह से दब जाती है इसलिए मैं तो कहूँगा कि यह चीज़ जितनी शीघ्रता से निकल सकती है निकल जाना चाहिये। तो मैं ने यह भी बताया था, कि थोड़ा सा स्टाक हमारे पास पड़ा है तो उसे बचा कर नहीं रखना। जो है सो दे दें और कह दें कि अंकुश जाने वाला है। तब लोग जागृत हो जायेंगे। और पीछे अपने आप कपड़ों के दाम जो इतने बढ़ गये हैं, सब चीज़ के दाम बढ़ गये हैं, वह गिर जायंगे। अब कुछ तो ऐसा होना चाहिये। जंग तो है नहीं और हिन्दुस्तान से बाहर कुछ जाता नहीं तो भी क्या वजह है कि कपड़ों के दाम, और अनाज के दाम बढ़ते ही जाते हैं। यह बड़ी नामोशी की बात है। हमारा सिर झुक जाना चाहिये। ऐसा मैं मानता हूँ। इसलिये मैंने सोचा, दोबारा मैं कह दूंगा कि लोगों पर श्रद्धा रखनी चाहिये और कुछ हिम्मत रखनी चाहिये और अंकुश को जितनी जल्दी हटा सकते हैं हटाना चाहिये। इस बारे में मेरे दिल में रत्ती भर भी शक नहीं है और दिन प्रतिदिन मेरा यह विश्वास बढ़ता जाता है।

आज तो हम बेचैन बैठे हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिख सब एक दूसरों को मारने पर उतरे हुये हैं। २४ घंटा वही हवा चलती है। बेहतर है कि हम इस चीज़ को भूल जायें। और काम में लग जायें। हमारे बीच में इतना वैमनस्य पड़ा है, बदमाश पड़े हैं, लेकिन उनका विचार करने से हम उस चीज़ को भुलाने वाले

नहीं। हमारे शास्त्र में लिखा है कि आदमी जो विचार करता है तो उस समय बन जाता है। तो पीछे उसका वमनस्य का विचार २४ घंटे करेंगे तो वैमनस्यमय बन जायेंगे। उसका ज़हर चढ़ जाता है और पीछे इसका नशा हमको भी हो जाता है। हम ऐसे ही विचार करते रहेंगे तो कहने लगेंगे कि मुसलमान है तो उसको काटो और मैं मुसलमान हूँ तो कहूँगा, हिन्दू को काटो, सिक्ख को काटो ऐसा आखिर हमारा स्वभाव बन जायगा। लेकिन अगर यह सब भूल जायँ और कहें अरे यह सब तो चलेगा लेकिन हमें जो दूसरे काम करने हैं वह तो करें और प्रजा में जो करोड़ों पड़े हैं काम करने लगें तो हवा पलट जावेगी। लेकिन आज तो ऐसा है नहीं। कोई खाने को दे तो हम खा सकते हैं। क्या यही हमारा हाल होने वाला है? आजादी में हम बिल्कुल बेकार हो जायँगे और हममें कुछ शक्ति ही नहीं रहेगी। अपनी शक्ति से हम कुछ भी न करें यह तो कोई अच्छी बात नहीं लगती। इसका नाम पंचायती राज्य कभी नहीं है। अब आख़िर बात कहना चाहता हूँ।

दक्षिण अफ्रीका से मेरे पास तार आया है। तार में लिखते हैं कि तुमने तो हम पर बड़ा उपकार किया है। मैं उपकार क्या करने वाला था, जो मुझे अच्छा लगा वह मैंने कर दिया। वहां लोग सत्याग्रह कर रहे हैं। वे सत्याग्रह तो करें, उसमें बड़ा गुण भरा पड़ा है। रामभज दत्त चौधरी ने एक भजन बनाया था, उसमें वह सत्याग्रह की महिमा बतलाते थे, पंजाबी भाषा में भजन था। पंजाब में उन दिनों बड़ा ज़्यादती होती थी। लोग घबराहट में पड़ जाते थे, अंग्रेज़ कहें पेट के बल चलो तो पेट के बल चलते थे। क्योंकि उनको अपनी जान प्यारी थी। जान रखने के लिये पेट के बल चलना! एक गली में से पेट के बल चलाते थे उस गली का नाम तो मैं भूल गया हूँ। वह छोटी सी गली है अमृतसर में। वे लोग पेट के बल सिर्फ़ जिन्दा रहने के लिये चलते थे। अगर वहां खड़े रह जाते और कहते किसको कहते हो पेट के बल चलने को? हम तो पेट के बल नहीं चलेंगे तुम चाहे मार डालो तो ज़्यादा से ज़्यादा इतना ही होने वाला था कि मार डालते। पर इतनी हिम्मत उन में नहीं थी। रामभज दत्त चौधरी ने लिखा 'कदी नहीं हारना भावें साडी जान जावे'। वह बात सच्ची है, सत्याग्रह के लिए तो बिल्कुल सही है। जान चली जाय, पैसा चला जाय लेकिन हमें कभी हारना नहीं है। वह सत्याग्रह है। क्योंकि उसमें सत्य आ जाता है। अगर असत्य काम करना है तो उसमें तो झूठ आ जाता है। वह सत्याग्रह नहीं है। सत्याग्रह असत्य के लिये नहीं है, सत्य के लिये है। स्वमान के लिये है। उसमें कभी हार नहीं होती। तो मैंने

तो कह दिया कि वह लोग भले मुट्ठी भर हों, उससे क्या हुआ ? ऐसा काम करने वाले लोग करोड़ों हो नहीं सकते। वहां तो करोड़ों की आबादी ही नहीं, लाखों तो पड़े हैं। अगर सैंकड़ों मिल गये, मैं तो कहूँगा दस भी मिल गए तो वह दस हिन्दुस्तान का नाम रखने वाले हैं। और हिन्दुस्तान का काम करने वाले हैं। पीछे वह लिखते हैं कि लोगों को यह भी क्यों नहीं कहते हो कि हम को कुछ पैसा भी भेज दें। वह मुझ को चुभता है। क्यों चुभता है ? क्योंकि दक्षिण अफ्रीका में जो हमारे लोग पड़े हैं वह पैसे से मिस्कीन नहीं हैं। दक्षिण अफ्रीका में वह तो पैसा कमाने के लिये गये हैं। वहां परोपकार करने नहीं गये। जो लड़ने वाले पड़े हैं उनके पास पैसा ज़्यादा नहीं है। पैसे वाले पैसा नहीं देते। जिसके पास पैसा नहीं है वह जब कमा लेता है तो उसको पैसा प्रिय हो जाता है। सम्मान थोड़े ही प्रिय होता है। वह तो पैसे में पड़ा है। वह मानता है मान पैसे में है, जान पैसे में। पैसा सब कुछ है और पैसा नहीं तो कुछ नहीं। यह सब झूठ बात है, लेकिन बहुत लोग ऐसा मान बैठते हैं। तो वह कहते हैं कि हम लड़ने वाले तो हैं लेकिन हमारे पास तो पैसा नहीं है। पैसा बिल्कुल मिलता नहीं। पीछे पूर्वी अफ्रीका में हमारे भाई पड़े हैं सारे पूर्वी अफ्रीका का जो किनारा है वह हमारे लोगों से भरा है, हमारे लोग अधिकतर ताजिर हैं। तो पूर्वी अफ्रीका में जो हमारे लोग हैं उनको मैं कहूँगा कि आप दक्षिण अफ्रिका वालों को पैसा भेजें। मैं तो यहां भी कह सकता हूँ कि भेजो लेकिन आज मैं किस मुंह से कहूँ और किस को कहूँ। सारा हिन्दुस्तान आज मिस्कीन सा बन गया है। करोड़पति करोड़ तो कमा लेते हैं। लेकिन वह जो करोड़ कमा रहे हैं उस पर बड़ा टैक्स लगता है। तो उनके पास बहुत पैसा रहता नहीं। पीछे हमारी कमनसीबी से हम आपस-आपस में लड़ाई भी कर रहे हैं इस कारण से हमें करोड़ों का नुकसान हो जाता है। ऐसा एक मिस्कीन मुल्क पड़ा है, वहां यह कहने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ती है कि अपनी जेब में हाथ डालो और जनूबी अफ्रीका में भेजने के लिये पैसा दो। मैं जब वहां पड़ा था, तब आप लोगों ने काफी पैसा भेजा। मैंने तो मना किया था। उस समय गोखले महाराज ज़िन्दा थे। मैंने उनको तार दिया कि भाई पैसे मत भेजो। आपका आशीर्वाद है सारे हिन्दुस्तान का नैतिक सहारा हमारे साथ है वह हमारे लिये काफी है। पैसे हम यहां किसी न किसी तरह से इकट्ठे कर लेंगे। लेकिन वह कैसे रुकने वाले थे ? पीछे तो यहां के लोगों ने एक टकसाल सी बना दी ? पंजाब से बहुत पैसा आया और सारे हिन्दुस्तान से आया। पीछे टाटा तो ऐसे कामों में हिस्सा लेते ही हैं। उन्होंने भी काफी पैसा

दिया। मेरा ऐसा ख्याल है कि पांच-सात लाख या उससे भी ज़्यादा पैसा आ गया। पैसा देने वाला रोक कौन सकता था? गोखले महाराज को कौन रोकने वाला था उन्होंने कहा तो हम भेजेंगे ही। वह तो हमारा धर्म है। तो वह भी एक जमाना था। मगर आज मैं जो हालत यहां पाता हूँ। उसमें किस तरह से अपने लोगों को कह सकता हूँ कि तुम दक्षिण अफ्रीका पैसा भेजो। आज वह दुश्वार है ऐसा मैं समझता हूँ। यहां काफ़ी दुश्वारियां पड़ी हैं। मगर हमारे लोग तो सब जगह पड़े हैं। मारिशस में भी काफ़ी हिन्दुस्तानी हैं। और वहां कोई हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा तो हो नहीं सकता। वहां यह हिन्दू है, यह मुसलमान है ऐसा नहीं है। सब हिन्दी पड़े हैं। और कुली हैं, और दक्षिण अफ्रीका में जो हो रहा है, वह हिन्दू का काम है, मुसलमान का काम है। ईस्ट अफ्रीका में, मोम्बासा में काफ़ी हिन्दी पड़े हैं जो पैसे निकालें तो उससे दक्षिण अफ्रीका में हिन्दियों की लड़ाई चल सकती है? और उनको इमदाद मिल सकती है। इसी तरह से और जगहों में मारिशस वगैरा में हमारे लोग पड़े हैं। ईश्वर की मेहरबानी है कि उन लोगों के पास काफ़ी पैसे पड़े हैं, वे पैसे भेज सकते हैं। आखिर जो इस लड़ाई को लड़ने वाले हैं, वह शौक नहीं करते, वह शराब पी नहीं सकते हैं, रंडीबाज़ी में पैसा नहीं फेंक सकते हैं। उनको खाना चाहिये, खाना तो मिल जाता है। उसमें बहुत पैसा नहीं खरच होते हैं। तो मुझ को लगा कि मैं आपको सुना दूँ कि दक्षिण अफ्रीका में जितने हिन्दी हैं तो उनको आप कह सकते हैं कि आप तो वहां लड़ रहे हैं तो सारे हिन्दुस्तान के लिये। अपने लिये ही नहीं। आप सारे हिन्दुस्तान के मान के लिये लड़ते हैं। लेकिन आज हम वहाँ के लिये पैसा दे नहीं सकते। पीछे कुछ सज्जन सोचें कि हमारे पास पैसा तो काफ़ी भरा है हम भेजेंगे, तो मैं रुकावट नहीं डालना चाहता। लेकिन मेरी हिम्मत नहीं है कि मैं दक्षिण अफ्रीका के लिये यहां हाथ लम्बा करूँ? जब कि हिन्दुस्तान में इतनी पैसे की परेशानी पड़ी है।

१८ अक्टूबर, १९४७

आज भी मैं आपको कह सकता हूँ कि कम्बल अभी भी आ रहे हैं। कुछ चेक भी आते हैं। तो अच्छा लगता है। जिन लोगों को कम्बल की ज़रूरत है उनकी संख्या भी कोई छोटी नहीं है। लेकिन जिस रफ़्तार से कम्बल और दूसरी चीजें आ रही हैं, उससे मैं उम्मीद रखता हूँ कि जाड़े के दिनों में किसी को बगैर कम्बल के या ओढ़ने को कुछ भी दूसरे साधन के बिना रहना नहीं पड़ेगा। मैंने देखा है कि सरदार पटेल ने एक निवेदन निकाल दिया है जिसमें उन्होंने भी लोगों से भिक्षा मांगी है। यह बताता है कि अगर हम हुकूमत की ओर देखकर बैठे रहें तो काम निपट नहीं सकता। अकेली हुकूमत इस काम को कर नहीं सकती। अच्छा है उन्होंने भी ऐसा निवेदन निकाल दिया है। किसी न किसी तरह से जो लोग आज जाड़े को बर्दाश्त नहीं कर सकते उनको ओढ़ने और पहनने को कुछ पहुँचा सकें तो बड़ी अच्छी बात है।

डा० सुशीला भी वही काम कर रही हैं। हमेशा पुराने किले में जाती हैं। इधर-उधर भी चली जाती हैं। आज कुरुक्षेत्र चली गई हैं। क्योंकि वहाँ एक नया शिविर बन गया है। वहाँ सब इन्तजाम तो कर रहे हैं। लेकिन और भी करना चाहिये। वे बड़ी डाक्टर हैं। उनके साथ दूसरी डाक्टर भी गई हैं। दूसरे लोग भी गये हैं। मिसेज़ मथाई भी वहां गई हैं। लोगों को जितनी मदद पहुँचाई जा सकती है, पहुँचाई जाये।

कल मैंने आपसे हिन्दुस्तानी के बारे में बातचीत की थी। अब उस बारे में काफ़ी लोग मुझे लिख रहे हैं कि आप यह कैसा भद्दा काम कर रहे हैं। लेकिन मैं मानता हूँ कि यह भद्दा नहीं है। मैं समझता हूँ कि मैं हिन्दुस्तान और यूनियन

के लिए बड़ा अच्छा काम कर रहा हूँ। उससे उसकी खिदमत होती है। वे लिखते हैं कि आखिर में हिन्दुस्तानी का जो सिलसिला चला वह ऐसे जमाने में चला कि जब हम गिरे हुए थे और गुलामी में थे। हम भूल जाते हैं कि पहले जमाने में जो लोग आये वे आये तो थे चढ़ाई करने के लिये, लेकिन रह गये इसी मुल्क में, और इसी मुल्क के बन गये। इस मुल्क में किस तरह से जीवन बसर हो सकता है यह उन्होंने सोचा। उसमें से पीछे उर्दू जबान निकली और उसे ठेठ तक पहुँचा दिया गया आगे चलकर उसमें उन्होंने ठूंस ठूंस कर अरबी और फारसी के शब्द डाल दिये और उसे जामा भी नया पहना दिया। उसका व्याकरण भी अरबी फारसी में से लिया। हिन्दुस्तानी में ऐसा नहीं है। उसका व्याकरण भी यहाँ का है। उर्दू में जो फारसी के शब्द बहुत बरसों से हैं, उनको चुन चुन कर निकाल देना हमारा धर्म थोड़े ही हो जाता है। जो यहां आये, पीछे यहीं रह गये और यहां के रीति-रिवाज सब ले लिये, उनसे फिर आज हमारा द्वेष करना निकम्मा द्वेष हो जाता है ऐसा मैं मानता हूँ। लेकिन आज जो कहता हूँ उसका तो सबब दूसरा है। अंग्रेजी का तो ऐसा है कि अंग्रेज यहां सल्तनत जमाने के लिये आये थे। उनका दिमाग पुराने मुग़लों की तरह नहीं चलता था। वे हिन्दुस्तान के तो होकर बैठे नहीं और न यहाँ बसने के लिये आये। वे हमेशा ऐसा सोचते थे कि हम बाहर के हैं, बाहर ही रहेंगे और बाहर ही हमारे लड़की लड़के पलेंगे। पीछे उन्होंने यहाँ अपनी सहूलियत के लिये अंग्रेजी भाषा दाखिल कर दी। लेकिन उर्दू की ऐसी बात नहीं थी। वह तो उस वक्त जो भाषाएं यहाँ चलती थीं, अवधी और दूसरी तीसरी उनमें से निकलीं। लेकिन अंग्रेजी का यह हाल नहीं है। तो मैंने कहा कि आज यह तो ठीक है कि अंग्रेजी हुकूमत हमारे सिर पर से चली गई है। लेकिन क्या अंग्रेजी भाषा की हुकूमत हम पर चलती रहेगी? वह हम पर काबू कर रखेगी? हम बगैर अंग्रेजी के कोई कारोबार चला नही सकेंगे, तो हमारा हाल क्या होने वाला है? बहुत साफ-साफ मैं कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की जबान अंग्रेजी हो, यह तो कभी हो ही नहीं सकता। इसमें हम पड़ने की कोशिश तक न करें। और करते हैं तो उसमें हमें हारना है। यह तो मैंने आप लोगों को कह दिया है।

एक भाई जो बहुत सज्जन पुरुष हैं, लिखते हैं कि, तुम तो भूल जाते हो। हिन्दुस्तान में जो कुछ काम करते हैं वे सब अंग्रेजी पढ़े लिखे होते हैं। मैं कहूँगा कि अंग्रेजी पढ़े लिखे तो मुट्ठी भर हैं। ठीक है वे कोर्ट दरबार में चले जाते थे। वहां अंग्रेजी में काम करते थे, क्योंकि अंग्रेजों का उन पर प्रभाव चलता था। राज्य

कर्त्ता की जो भाषा है उसको लोग पसन्द करते थे, क्योंकि जो गुलामी में रहता है, उसको ऐसी आदत हो जाती है। वह तो किया। मगर वे बिचारे करोड़ों, जिनकी मादरी जबान है हिन्दुस्तानी या कि कहो हिन्दी, देवनागरी, कहीं कोर्ट दरबार में जांय जहाँ अंग्रेजी में अर्जियाँ करना पड़े और सब काम अंग्रेजी में चलें, तो कुछ समझेंगे ही नहीं। यह तो हमारी मुफलिसी है कि हम ऐसी सीधी बात बिल्कुल समझना ही नहीं चाहते, हमारा स्वार्थ किस चीज में है वह भी हम नहीं जानना चाहते। अंग्रेजी सल्तनत तो चली गई, उसके साथ ही अंग्रेजी जबान को भी उस जगह से निकाल दें, जो कि हमने उसको दे दी है और जिस जगह के लिये वह कभी हो नहीं सकती।

एक भाई मुझको लिखते हैं कि तुम तो कहते हो लेकिन एक चीज और ध्यान में रखनी होगी। लोग तो सब चीज का ठीक-ठीक मतलब निकालते नहीं हैं। फिर अख-बारनवीस भी ऐसे ही हैं। उनके दिल की बात है। अगर वे चाहें तो उलटा भी लिख दें।

आजकल हम दीवाने बन गये हैं। हिन्दू-मुसलमान से लड़ाई करे उसके साथ बैठ न सके। हिन्दू मुसलमानों का गला काटें। मुझको राजकुमारी अमृतकौर जो कल या परसों शिमला से यहाँ चली आई हैं, सुनाती थीं कि शिमले में जो गरीब लोग पड़े हैं, वे बरसों से वहाँ हैं, क्योंकि वे मुसलमान हैं इसलिये उनको वहाँ से अब हटाना है। ऐसे हम जाहिल बन गए हैं। हटा देने में कितनी तकलीफें उनको बर्दाश्त करनी पड़ी हैं। पाकिस्तान में जो हिन्दू पड़े हैं वे भी यही शिकायत करते हैं। तबादला सिलसिलेवार चलता गया है। चला जा रहा है, लेकिन कहाँ तक? कुछ कहते हैं कि संस्कृतमय जो हिन्दी है, वही राष्ट्र की ज़बान हो सकती है। अंग्रेजी तो अब जाने वाली है। लोग सूबे की भाषा में अपना काम चलायेंगे। मगर सब प्रान्तों में चल सके, ऐसी राष्ट्र भाषा होनी चाहिये। इस बारे में झगड़ा होने का डर है। एक राष्ट्र भाषा न हो तो आपस-आपस में घृणा पैदा हो जायगी। अंग्रेज़ तो अब मुट्ठी भर हैं। वे हुकूमत चला नहीं सकते। थोड़े दिनों में चले जायेंगे। मगर हम ऐसा थोड़े ही कर सकते हैं कि कोई अंग्रेज़ है, और अंग्रेज़ी बोलता है तो उसे काटो। वह बड़ी खतरनाक बात होगी।

हिन्दुस्तान से अंग्रेज़ी सल्तनत तो चली गई फिर बाद में भी क्या यहाँ आपस-आपस का झगड़ा रह जायगा। मैं तो इस ख्याल से भी काँप उठता हूँ। ऐसा हो तो रोना पड़ेगा, या दीवानी बनना पड़ेगा। एक दोस्त हैं, दोस्ताना तौर पर लिखते हैं, तुम बूढ़े तो हो गए हो। मुट्ठी भर हड्डी रह गई है, मगर काम

तो छूटता नहीं। तुम्हारा क्या हाल होने वाला है। जो तुम कहते आये हो उसका नतीजा तो देखो। यहाँ ऐंग्लोइंडियन पड़े हैं। उनका क्या होगा? वे अंग्रेज़ी बोलते हैं। फिर यहाँ गोआ के लोग भी हैं। वे भी टूटी-फूटी भद्दी सी अंग्रेज़ी बोल लेते हैं। क्या उनको हिन्दुस्तानी सीखने के लिये मजबूर करोगे? वे कब हिन्दुस्तानी बोल सकेंगे? कब सीखेंगे? क्या इस बीच वे भूखे मरेंगे? जब तक वह तुम्हारी मनमानी भाषा नहीं जान लेते तब तक क्या वे बेकार रहेंगे? उन पर इतनी जबरदस्ती क्यों? उनमें बहुत से इंजिन ड्राइवर हैं। क्या वह उस काम को नहीं कर सकते जब तक कि आपकी भाषा को न सीख लें? आज वे कहीं बाहर तो जा नहीं सकते। उनका मुल्क तो हिन्दुस्तान ही है। पहले चाहे वे ऐसा सोचते हों कि वे भी अंग्रेज़ी सल्तनत के हिस्सेदार हैं। आज भी जो ऐसा सोचते हैं और उसे अपने दिल से हटा नहीं सकते वे अंग्रेज़ी सल्तनत के साथ ही जाना चाहें तो जा सकते हैं। उन्हें कोई रोक थोड़े ही सकता है। लेकिन वे जायँगे कहाँ? उनको तो इसी मुल्क में रहना है। जिसकी चमड़ी सफ़ेद होती है वे तो कुछ अंग्रेज़ से लगते भी हैं लेकिन काफी के चेहरों से हम पहचान सकते हैं कि उनका खून मिश्रित बन गया है। उनके बारे में मैं कुछ कहूँ और उसको उल्टा मानकर अर्थ का अनर्थ करो तो मैं लाचार हूँ। मैं तो बार-बार लोगों से कहता हूँ कि जो इन्सान पैदा हुआ है, उस इन्सान के साथ दुश्मनी कैसी? यही मेरा शिक्षण है। जब मैं छोटा था तब यही शिक्षण चला रहा हूँ। हाँ, इन्सान में जो बुरी बातें रहती हैं उनसे दुश्मनी करनी चाहिये। जैसे कोई ठग है, किसी का माल लूट लेता है, तो लुटेरे को मारो मत। लूट की आदत है तो उसको छुड़ाना है। शान्तिमय अहिंसक असहयोग से वह काम अच्छी तरह हो सकता है। किसी ने मुझ से पूछा कि तुमने अंग्रेज़ी हुकूमत को हटाने का तरीका तो सिखाया, लेकिन अब हम में जो आपस-आपस की दुश्मनी चलती है उसके लिये क्या तुम्हारे पास कुछ उपाय नहीं है? है क्यों नहीं? है तो सही लेकिन मैं करूँ क्या अगर आप उसको ले नहीं सकते और हजम नहीं कर सकते। तो अंग्रेज़ों को यहाँ से हटाने में बहादुरी की क्या बात थी? अंग्रेज़ तो मुट्ठी भर हैं और हम एक बड़ा समुन्दर हैं जिसमें वे एक बिन्दु मात्र हैं। लेकिन हम यहाँ ४० करोड़ हैं। मुसलमान भी करोड़ों हैं और हिन्दू भी करोड़ों की तादाद में हैं। अंग्रेज़ों को हटाने में हमने एक बात सीखी और वह यह कि हम मार-पीट नहीं करेंगे। अब भी मैं बहादुर की अहिंसा ही बता सकता हूँ। वही एक उपाय है

हिन्दू और मुसलमान कमोबेश में बराबर से ही हैं। लेकिन एंग्लो-इंडियन और गोआनी तो उनके नज़दीक मुट्ठी भर हैं। उनको मजबूर करना इससे ज्यादा बुजदिली क्या हो सकती है? जो अंग्रेजी जबान बोलने वाले हैं उनको काटना क्या और उनको मजबूर क्या करना? पीछे वे भाई लिखते हैं कि तुम जो कहते हो कि हिन्दू और मुसलमान देवनागरी और उर्दू दोनों लिपि सीखें तो इसका नतीजा यह हो जाता है कि एक तीसरी लिपि ज़ोर पकड़ती है, वह है रोमन लिपि। यूरोप में रोमन लिपि चलती है, लेकिन रूस में नहीं चलती। बड़ी तादाद में लोग रोमन लिपि काम में लाते हैं, इसका तो मैं गवाह हूँ। पर झगड़ा यह नहीं होना चाहिये कि हमें रोमन लिपि नहीं चाहिये, देवनागरी लिपि नहीं चाहिये या उर्दू लिपि नहीं चाहिये। उसमें भी हम छोटी नजर क्यों रखें। थोड़ी सी मेहनत से यह काम हम कर सकते हैं। सब सीख सकते हैं।

आपने अखबारों में देखा ही होगा कि शेख़ अब्दुल्ला साहब यहाँ आये हैं और जवाहरलाल जी के साथ ठहरे हैं। उनके वे बड़े दोस्त हैं। वे इत्तिफाक से मेरे पास आज आ गये। मुझे सुनाया, क्योंकि वे जानते थे कि यह मुझको अच्छा लगेगा, इसलिए मुझसे कहा कि वहाँ जेल में मैंने एक फायदा उठाया। मैंने वहाँ हिन्दी बोलना और देवनागरी लिपि में लिखना सीख लिया। वे उर्दू फारसी तो खासी अच्छी जानते हैं और बोलते हैं। वे जेल में वर्षों तो रहे नहीं, और वहां पर कोई रात-दिन यही काम थोड़ा ही करते थे। मगर चूंकि उनके दिल में सीखने की ख्वाहिश थी, इसलिये उन्होंने सीख लिया। तो फिर ऐसी आसान चीज से हम क्यों झिझकें और क्यों जी चुरायें? अगर आप चाहते हैं कि हिन्दुस्तान की खैर रहे और वह हमेशा के लिए सलामत रहे तो इस आपस-आपस की दुश्मनी को मिटाने का जो आसान तरीका है वही मैं आज बता रहा हूँ। बस इतनी ही बात मैं आज आपको कहनी चाहता हूँ।

★

१६ अक्टूबर, १९४७

आप लोग महसूस करते हैं कि ६ बजे प्रार्थना शुरू करते हैं उसमें देर हो जाती है। क्योंकि दिन छोटे ही होते जाते हैं। रोज दो तीन मिनट कम हो जाते हैं। इस तरह से प्रति मास १२ मिनट कम हो जाते हैं और दिसम्बर की २२ तारीख को तो दिन सबसे छोटा रहता है। आजकल अँधेरा जल्दी हो जाता है। इसलिये कल से प्रार्थना साढ़े पाँच बजे होगी।

आज का भजन तो आपने सुन लिया। मेरा ख्याल है कि उस भजन का करुण किस्सा मैंने आपको नहीं सुनाया है। यों तो एक भजन माला बन गई है। यह जो भजन माला है, उसमें जितने भजन हैं उनका कुछ न कुछ इतिहास तो है ही। उसमें कोई सब गिने चुने तो नहीं है, हाँ चंद गिने चुने भी हैं, लेकिन सारा का सारा संग्रह आश्रम में तैयार हुआ है। आश्रम में एक बड़े भक्त थे, जो संगीत शास्त्री भी थे। उनका नाम खरे शास्त्री था। उन्होंने भजनों का यह संग्रह तैयार किया। हाँ उन्होंने मदद ली काका साहब की और दूसरों की भी। उसमें यह भजन था। यह भजन तो मेरा भतीजा मगनलाल गाँधी गाता था, जो दक्षिण अफ्रीका से मेरे साथ रहा था? उस जमाने में तो लड़ाई चल रही थी सत्याग्रह के मारफत स्वराज्य हासिल करने की। थोड़े वर्ष बीत गये, तो कई लोगों को चोट लगी कि अभी तक हमको स्वराज्य नहीं मिला। उसमें हमारी कोई गलती होगी। ऐसा ही मानना चाहिये, यही अच्छा है। भले आदमी को तो ऐसा ही मानना चाहिये। कोई चीज़ टेढ़ी हो जाती है, तो उसका सबब दूसरा है, हमारा पड़ोसी है, या हमारा कोई भाई है, हम नहीं हैं यह शुद्ध विचार का रास्ता नहीं है, यह अशुद्ध विचार है। दूसरों पर सब कुछ दोष डालदेना या जब कोई बात टेढ़ी हो जाती है तो उसमें दूसरों का

दोष है, हमारा तो है ही नहीं, ऐसा मानना ग़लती है। जितने भक्त हो गये हैं उन्होंने यही कहा है। तुलसीदास जी भी यही कहते हैं या कहो, कि सूरदास जी कहते हैं, 'मो सम कौन कुटिल खल कामी', मेरे जैसा कुटिल कौन है, खल कौन है, कामी कौन है। तुलसीदास जी या सूरदास जी हमारी दृष्टि में ऐसे नहीं थे। मगर अपनी दृष्टि से वे अपने आपको ऐसा मानते थे। जितने ईश्वर से दूर रहते थे, उससे उनको कुछ रंज होता था, पीछे चाहे भाई, बहिन, लड़के, दोस्त सब क्यों न पास हों। उसके दिल में से यह आह निकलती है कि मुझसा कुटिल, खल, कामी कौन होगा। अच्छा है कि हम हमेशा अपना दोष अपने में ही ढूँढ़ते रहें। ऐसा ही यह भजन है, 'अजहुँ न निकसे प्राण कठोर'। कवि कहता है कि अब तक ईश्वर के दर्शन न हुए तो भी प्राण क्यों न निकले? हमेशा तो इस भजन को खरे शास्त्री गाते थे, लेकिन बाज दफा जब वह हाजिर न होते या बीमार पड़ जाते तो मगनलाल गाता था। वह संगीत शास्त्री तो नहीं था, लेकिन उसका कंठ अच्छा था। उसका वह भजन अब भी मेरे कानों में गूँजता है। वह तो आश्रम का स्तम्भ था। आश्रम को चलाने में वह पहाड़ सा था, बहुत मज़बूत था। कुदाली अपने आप चलाता था, सबसे आगे चला जाता था। दक्षिण अफ्रीका में तो उसका शरीर बहुत मजबूत था। यहाँ उसको कोई बीमारी तो नहीं थी, लेकिन शरीर क्षीण हो गया था, क्योंकि उस पर सारा बोझ था। बोझ तो वहाँ पर भी था, लेकिन यहाँ तो एक अनोखी चीज़ यह है कि करोड़ों आदमियों में काम करना पड़ता था। रचनात्मक काम का भी बोझ उस पर पड़ता था। रचनात्मक काम के बिना हम रह भी कैसे सकते हैं। उसके बग़ैर स्वराज्य चीज़ भी क्या हो सकती है? आज स्वराज्य तो मिला, लेकिन उसकी कितनी कीमत है? मिला तो भी क्या, आज हम सिद्ध करते हैं कि अगर हम रचनात्मक काम उस वक्त कर लेते तो हमें यह वक्त नहीं देखना पड़ता जो हम आज प्रत्यक्ष में देख रहे हैं। स्वराज्य की जो कल्पना हमने की थी क्या वह यही स्वराज्य है? अगर उस वक्त हम इतना कर लेते तो आज हिन्दुस्तान का इतिहास अनोखा होने वाला था, इसमें मुझे कोई शक नहीं। मगनलाल का जो भगवान् था, वह तो स्वराज्य में ही था। उसका स्वराज्य तो राम-राज्य था, भगवान् के दर्शन तो स्वराज्य में ही हैं। भगवान् का कोई शरीर थोड़ा है। कोई कहते हैं कि वे चतुर्भुज मूर्ति हैं, उनके हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म हैं। यह सब हमारी कल्पना है। ईश्वर के पास शंख, चक्र, गदा, पद्म क्या होना था? वह तो निरंजन और निराकार है, वह तो देहातीत

है तब उसकी देह कहाँ से आई ? हम मन से कल्पना कर लेते हैं, मान लेते हैं। हम अपना भगवान् कहाँ देखें ? उसको हम अपने कर्मों में देखें। अगर यह समझ कर कार्य करें तो उसमें भगवान् की स्थापना होती है। जैसे कि एक आदमी चर्खा चलाता है और सूत कातता है तो वह उसी सूत के धागे में भगवान् का दर्शन करता है या करती है। जब उसके दिल में ऐसा है कि सारी दुनिया हमारी है और हमारी दुनिया तो भारतवर्ष है, जहाँ गरीब हैं, उनको खाने को नहीं मिलता, उनके निमित्त या दरिद्रनारायण के निमित्त जो वह एक धागा निकालता है उसमें वह भगवान् का दर्शन करता है। स्वराज्य तो तब दूर था लेकिन जब आश्रम ठीक चलता नहीं था, तब मगनलाल के दिल से बाज़ दफा यह आह निकलती थी, 'अजहुँ न निकसे प्राण कठोर'। अब तक भगवान् का दर्शन नहीं हुआ तो भी यह प्राण क्यों नहीं निकला। अब तक हमें स्वराज्य नहीं मिला था, लेकिन १५ अगस्त को तो वह मिल गया, यह माना। मैं उसे स्वराज्य नहीं मानता हूँ। मेरी व्याख्या का तो स्वराज्य मिला ही नहीं और न यह स्वराज्य राम-राज्य कहा जा सकता है। आज तो हम एक दूसरे को दुश्मन समझ कर बैठ गये हैं। हिन्दू के दुश्मन मुसलमान हैं और मुसलमान के दुश्मन हिन्दू और सिख हैं। हम दुनिया में किसी को दुश्मन बनाना नहीं चाहते और न हम किसी के दुश्मन बनना चाहते हैं, यह मेरी व्याख्या का स्वराज्य है। वह अभी आया नहीं है। हिन्दुस्तान में क्या मुसलमान हिन्दू के दुश्मन बनें ?क्या हमारे भाई आपस-आपस में दुश्मन बनेंगे ? मैं यह क्यों कहता हूँ ? एक दफा तो, थोड़ा सा कह दिया था, लेकिन मैं बार-बार यही कहना चाहता हूँ कि अगर हम सचमुच ऊपर जाना चाहते हैं तो हम भाई-भाई बन कर रहें। आज तो हम गिर गये हैं और अभी भी शायद गिरते जा रहे हैं ? हमारे दिल में खून भरा है, द्वेष भरा है, हम मुसलमान को देख कर भड़क जाते हैं, उसको मस्जिद में ईश्वर को भजता हुआ देखते हैं तो उसको मार डालते हैं, उसको अपना दुश्मन मानते हैं, और सोचते हैं कि कब उसको यहाँ से निकाल दें, उसकी मस्जिद को मंदिर बना लें। अरे, उसमें क्या गुनाह हो गया है। जैसा मंदिर है वैसी ही मस्जिद है। फिर क्या चीज़ है इसमें कि मुसलमान मंदिर को ढा दें और हिन्दू मस्जिद को ढा दें। ईश्वर की दृष्टि में दोनों ही गुनाहगार हैं। जो हम करें वह मुसलमान को बुरा लगे और जो मुसलमान करे वह हमें बुरा लगे, तो वह स्वराज्य कैसे हो सकता है ? आज तो हम ऐसे बन गये हैं, लेकिन हम इस अंगार में से निकलना चाहते हैं।

यह तो मैंने कह दिया कि दिल्ली में मैं करूँगा या मरूँगा ऐसा कहकर आया

हूँ। किया तो नहीं, हाँ, यह ठीक है कि अब हमेशा लड़ाई की खबर आती नहीं और यों लगता है कि हम भाई-भाई जैसे पड़े हैं, लेकिन यह तो मन को धोखा देने की बात है। जो मिलिटरी और पुलिस यहाँ पड़ी है, वह तो झगड़े के खतरे की वजह से है। जो चन्द मुसलमान हैं क्या उनके दिल में बेफिकरी है? क्या मेरे दिल में भी ऐसा होगा? मैं तो ऐसा नहीं समझता। मेरे पास यहाँ भी शायद कुछ मुसलमान हों। क्या आप उनका अपमान करेंगे? क्या आप मेरे देखते उनको मार डालेंगे? उनके मारने के पहले आपको मुझे मारना होगा। शेख़ अब्दुल्ला साहब कल यहाँ पीछे बैठे थे। कुछ काश्मीरी पंडित भी उनके साथ थे। शेख़ साहब हमारे दोस्त हैं। हमारे रफी साहब के भाई को भी मसूरी में किसी ने काट डाला। कितना बेगुनाह आदमी था। हमारा जो वह खादिम था। उनकी विधवा बेगम यहाँ आकर बैठी हैं। लोगों के दिल में घृणा न हो, इसलिए मैं इस करुण कथा को खोलना नहीं चाहता। बहुत बातें भरी हैं मेरे दिल में। बहुत कुछ जानता भी हूँ लेकिन मैं उस कथा को बढ़ाना नहीं चाहता। लेकिन निचोड़ तो बता दूँ। अगर हम ऐसे बनें, जैसे गाते हैं कि जब हम भगवान् का दर्शन नहीं करते हैं, तब यह प्राण क्यों नहीं निकल जाते, ऐसी आह दिल से निकले, तो उसका पहला कदम यह है कि हम अपने दोषों को पहाड़ जैसे देखें दूसरे के दोषों को नहीं। अगर हम सारी दुनिया के सामने यह जाहिर करें कि हमारा ही सब दोष है दूसरे सब भले आदमी हैं, तो वह बुजदिली नहीं है, इससे हम गिरते नहीं हैं, हम बढ़ते ही हैं। हम बहादुर बनते हैं।

अगर हम राम राज्य या ईश्वर का राज्य हिन्दुस्तान में स्थापित करना चाहते हैं तो मैं कहूँगा कि हमारा प्रथम कार्य यह है कि हम अपने दोषों को पहाड़ जैसे देखें मुसलमानों के दोषों को नहीं। मैं यह नहीं कहता कि मुसलमानों ने कुछ बुरा नहीं किया, बहुत किया है। छिपाकर रखता हूँ या उसे मैं नहीं जानता, ऐसी बात नहीं है। लेकिन जानते हुए भी मैं उसे नहीं देखूँगा। देखूँ तो दिवाना बन जाऊँ—हिन्दुस्तान की खिदमत नहीं कर सकूँगा। मैं यह समझूँ कि मेरा कोई दुश्मन ही नहीं है और अपना सारा दोष दुनिया के सामने रखूँ और दूसरों के दोषों को न देखूँ तो क्या हुआ, भगवान् तो सब देखने वाले हैं। अगर मुझे कोई थप्पड़ मारे, कान काट ले, गर्दन काट ले तो उसमें कौनसी बात है। मरना तो है ही। इन्साफ़ करने वाला ईश्वर तो है। लेकिन मैं जो कुछ करूँ उसको न भूलूँ। इसलिए मैं इसी चीज़ को बारबार सुनाना चाहता हूँ कि आप अपने दिलों को ऐसा साफ़ करें कि सारी दुनिया में मुझे कोई सुनाने वाला न हो। आज मैं गया था तो

मुझ से पूछा कि दिल्ली में कैसा है, मेरा सिर झुक गया। क्योंकि अभी भी यहाँ हिन्दू मुसलमानों का दिल एक नहीं हुआ दिल तो अब भी जुदा है। यह तो ठीक है कि कोई एक दूसरे का गला नहीं काटता क्योंकि पुलिस पड़ी है, मिलिटरी पड़ी है, सरदार जी सब इन्तज़ाम करते हैं जवाहरलाल जी करते हैं। इसलिए एक दूसरे को काटते नहीं। उससे क्या हुआ, अंग्रेज़ भी तो ऐसा ही करते थे। जो दिल्ली में हम देख रहे हैं, वह हम देखना नहीं चाहते। आज मेरे पंख कट गए हैं। अगर वे पंख फिर आ जायँ तो उड़ कर पाकिस्तान चला जाऊँगा और देखूँगा कि वहाँ हिन्दू या सिख ने क्या गुनाह किया है? और अगर किया भी है तो उससे क्या? उनका वहाँ मकान है, उसमें वे क्यों न रहें? लेकिन आज मैं किसको किस मुँह से ऐसा कह सकता हूँ। मैं तो सबको यही समझाता हूँ कि अगर ईश्वर का दर्शन करना है और यहाँ सच्चे स्वराज्य की स्थापना करना है तो एक दिल होकर सारी दुनिया को कह दो कि हिन्दुस्तान कोई गिरा हुआ मुल्क नहीं है। इसका क्या नतीजा होगा? यही न कि एक तो हम ऊँचे जाएँगे, दूसरे हमारे मुल्क में जो भूख है, प्यास है उसे दूर करने के लिए हमें वक्त मिलेगा।

आज सारी दुनिया हमारी ओर देख रही है। अगर एशिया को ऊँचा जाना है, अगर अफ्रीका के हब्शियों को ऊँचा चढ़ना है, तो हिन्दुस्तान को ऊँचा उठाना चाहिये। हिन्दुस्तान तो एशिया का या अफ्रीका और कहो कि एशिया का मध्य बिन्दु बना हुआ है। अगर हिन्दुस्तान कुछ कर पाये तो सारी दुनिया उससे आश्वासन लेगी।

दुनिया ठंड से काँप उठी है। अगर दुनिया को गर्मी आने वाली है तो हिन्दुस्तान से ही आने वाली है। मेरी तो भगवान् से प्रार्थना है और आप लोगों से भी कि हम इस तरह का बर्ताव रखें कि हमको गर्मी मिले और हमारी मारफत सारी दुनिया को गर्मी मिले। सारे एशिया के लोग और अफ्रीका के लोग हमारी ओर देख रहे हैं। उन सबको ऐसा लगे कि यहाँ अभी तो कुछ होगा, तो फिर सारी दुनिया मानना शुरू कर देगी।

★

२० अक्टूबर, १६४७

राजकुमारी ने प्रार्थना के बाद कल खबर दी कि एक मुस्लिम भाई का जो हेल्थ आफीसर थे, काम पर (ड्यूटी पर) कत्ल किया गया। वे कहती हैं कि अफ़सर अच्छे थे, अपना फर्ज़ बराबर अदा करते थे। उनके पीछे विधवा है और बच्चे। विधवा का क्रंदन यह है कि खूनी के हाथ से उनका और उनके बच्चों का भी खून हो। उनका शौहर सब कुछ था। रोटी वही पैदा करता था। उसके बाद जा कर वह क्या करे ?

मैंने कल ही आपको कहा था कि दिल्ली सचमुच शान्त नहीं हुई है। जब तक, इस तरह के दुखद किस्से बनते हैं, हम दिल्ली की ऊपर-ऊपर की शान्ति पर कैसे खुशी मना सकते हैं। यह तो कब्र की शान्ति है। जब लार्ड इरविन जो अब लार्ड हैलिफैक्स हैं, दिल्ली में वायसराय थे तब उन्होंने ऊपर-ऊपर की हिन्दुस्तान की शान्ति को कब्र की शान्ति कहा था। राजकुमारी ने मुझे यह भी बताया कि कुरान-शरीफ़ के मुताबिक शव को दफ़न करने के लिये काफी मुसलमान मित्र इकट्ठे करना भी कठिन हो गया था।

इस किस्से को सुन कर मेरी तरह हरेक रहमदिल स्त्री-पुरुष काँप उठेगा। दिल्ली की यह हालत बहुमत के लिये अल्पमत से डरना चाहे वह कितना ही ताकतवर क्यों न हो, बुजदिली की पक्की निशानी है। मैं आशा रखता हूँ कि सत्तावाले, गुनाहगारों को ढूँढ निकालेंगे और उन्हें सजा देंगे। अगर यह आखिरी गुनाह है तो मुझे कुछ कहना नहीं। अगर्चे इस किस्म के गुनाह हमेशा शर्मनाक तो होते ही हैं मगर मुझे बहुत डर है कि यह तो एक निशानी है इससे दिल्ली की आत्मा को जागृत होना चाहिये।

कम्बलों के लिये पैसे आ हो रहे हैं। सब दाताओं का बहुत-बहुत आभार मानता हूँ। यह खुशी की बात है कि किसी ने भी यह नहीं कहा कि हमारा दान हिन्दू को या मुसलमान को दिया जावे।

मुझे दुख से एक और खतरे की तरफ भी आपका ध्यान खींचना है। मैं नहीं जानता यह खतरा सचमुच है या नहीं। एक अंग्रेज भाई एक खुली चिट्ठी में "जिसके साथ उसका सम्बन्ध हो, उसके लिये" लिखते हैं, "हम काफी लोग एक निर्जन से दंगे फिसाद वाले इलाके में पड़े हैं। हम ब्रिटिश हैं और बरसों से दुख तकलीफें सहन करके भी हमने इस मुल्क के लोगों को सेवा की है। हमें पता चला है कि यह खुफ़िया सन्देश भेजा गया है कि हिन्दुस्तान में जितने अंग्रेज बच गये हैं उन्हें कत्ल कर दिया जावे। मैंने अखबारों में, पंडित नेहरू का कहना कि सरकार हरेक वफ़ादार शख़्स के जान, माल की हिफ़ाज़त करेगी, पढ़ा है मगर देहातों में पड़े लोगों की रक्षा का करीब-करीब कोई साधन नहीं है। हमारी रक्षा का तो बिलकुल नहीं।" इस खुली चिट्ठी के और भी कई हिस्से यहाँ दिये जा सकते हैं। मैंने खतरे से आगाह होने के लिये यहाँ काफी दे दिया है, हो सकता है कि यह झूठा डर ही हो। मगर ऐसी चीजों की तरफ लापरवाही न रखना ही अकलमन्दी है। मेरी आशा तो है कि पत्र लिखने वाले का डर सर्वथा निर्मूल होगा। मैं उनके साथ सहमत हूँ कि दूर-दूर देहाती इलाकों में पड़े लोगों की हिफ़ाज़त करने का सरकार का वायदा कुछ मानी नहीं रखता। सरकार वह कर नहीं सकती, मिलिटरी और पुलिस कितनी ही होशियार क्यों न हो और हमारी मिलिटरी और पुलिस तो इतनी होशियार है भी नहीं। रक्षा का पहला साधन तो अपने हृदय में पड़ा है। वह है ईश्वर में अटल श्रद्धा। दूसरा है पड़ोसियों की सद्भावना। अगर यह होता नहीं है तो अच्छा यही है कि हिन्दुस्तान को जहाँ मेहमानों की ऐसी बेकद्री है छोड़ दिया जावे। मगर हालत इतनी खराब आज है नहीं। हम सबका फर्ज है कि जो अंग्रेज हिन्द के वफ़ादार नौकर बन कर रहना चाहें, उनकी तरफ हम खास ध्यान दें। उनका किसी तरह का अपमान नहीं होना चाहिये। उनकी तरफ जरा भी लापरवाही नहीं होनी चाहिये। अगर हमें स्वमान वाला आजाद राष्ट्र बन कर दिखाना है तो प्रेस को और सामाजिक संस्थाओं को इस बारे में भी, दूसरी कई चीजों की तरह, खूब चौकन्ना रहना है। अगर हम अपने पड़ोसियों का स्वमान नहीं रखते चाहे वे गिनती में कितने ही थोड़े क्यों न हों, तो हम खुद स्वमान रखने का दावा नहीं कर सकते।

*

२१ अक्तूबर, १९४७

आज भी मैंने एक कत्ल के किस्से की बात सुन ली। उसमें किसी मुसलमान भाई का कत्ल नहीं हुआ। वह हिन्दू था और गवर्नमेंट की नौकरी में था। वह अपना काम कर रहा था। उसको वहां भेजा गया था। वहाँ कोई होगा जिसके हाथ में बन्दूक पड़ी थी, उसने बन्दूक से उसे मार डाला। उसने कोई गुनाह किया था, ऐसा मैं नहीं सुनता हूँ। बस बन्दूक वाले के दिल में आया कि यह आदमी ऐसा है कि हम जैसा कहते हैं ऐसा नहीं करता, इसलिए इसे मार डालो। तो मैं इसमें से कहना तो इतना ही चाहता था कि यह जो हमारी आदत हो गई है और अभी तो शुरू की आज़ादी है, आज़ादी शुरू करते ही हमारे दिल में ऐसा आ गया है कि हमारे पास बन्दूक है, इसलिए जिसे चाहे मार डालो, जैसे एक बड़ा शिकारी उड़ते पक्षी को मारता है, उसका निशाना बनाता है। ऐसे ही एक इन्सान है, जो अमलदार है, उसको भी निशाना बना लेता है। बस दिल में आ गया कि मारो तो मार डाला। हिन्दुस्तान में ऐसे हम बन जायँगे तो आखिर हमारा हाल बहुत ही बुरा होने वाला है। पीछे कोई आदमी यहां आराम से नहीं रह सकता। कहते हैं कि ऐसे जंगली मुल्क कई पड़े हैं जिनमें कोई सही सलामत रह नहीं सकता। क्योंकि जिसके पास बन्दूक पड़ी है वह खून करता है। उसके दिल में ऐसा नहीं, कि इन्सान का खून कैसे करें। जो खून करता है, वह जिन्दा तो कर ही नहीं सकता। हकीकत तो यह है और कानून भी ऐसा है कि जिसने इन्सान को बनाया है वह ही ले भी जाय। तो वह तो ईश्वर का काम हुआ। जो आदमी जीव को बना नहीं सकता उसको उसे लेने का अधिकार कैसे आया? इन्सान जीव को बना थोड़े ही सकता है। लेकिन हिन्दू के दिल में होता है मुसलमान का शिकार

करना, मुसलमान के दिल में होता है सिख का शिकार करो और सिख के दिल में होता है मुसलमान का। आज तो वे करें। लेकिन जिसका शिकार करना था वे जब चले जायेंगे तो पीछे आपस-आपस में शिकार करेंगे, यही कानून दुनिया का चला आया है।

दूसरी बात यह है कि मेरे पास एक प्रश्न आ गया है। काफी लोगों को हुकूमत ने पकड़ा है। पुराने ज़माने में हमारे हाथ में आज़ादी नहीं थी। आज भी सच्ची आज़ादी नहीं आई। जो आदमी पकड़े, वे तो पकड़ लिये गये। उनके बारे में बहुत कर सकते हैं तो वायसराय साहब के पास अर्जी करो। वह कहें कि छोड़ना है, तो वे छूटें। लेकिन वायसराय साहब खुद नहीं छोड़ सकते। वे बाकानून काम करते आये हैं। मार्शल ला चले तो भी वह बाकानून काम करते थे। उनके कानून के अफसर रहते हैं। जिसको वे कह देते कि छोड़ो वह छोड़ दिया जाता है। बाकी को वे कहते कि तहकीकात करने के बाद ही छोड़ सकता हूँ। यह तो ठीक कानूनी बात है। जिसको पुलिस ने पकड़ा है और बाकानून पकड़ा है उसको पीछे अगर वह सजावार होगा तो सजा हो जायगी। लेकिन आज तो हमारे हाथ में हुकूमत आ गई है। हमने तो हुकूमत कभी चलायी नहीं थी। कोई यह ठान ले कि मैं तो यहाँ का प्रधान हूँ और प्रधान की हैसियत से, चलो इसको या उसको छोड़ देता हूँ। ऐसा अगर हम शुरू कर दें तो हमारा खात्मा हो जायगा। मानो कि किसी को खून करने के गुनाह में पकड़ लेते हैं, और पीछे शिकायत आने पर छोड़ देते हैं, यह होना नहीं चाहिये। अभी भी मैं कहूँगा कि यह हुकूमत का काम नहीं है कि एक आदमी को पकड़ लिया, बाकानून पकड़ा है, पुलिस ने पकड़ा है, मगर पीछे शिकायत आई या कि फरियाद आई तो हुकूमत किस कारण से और कैसे उसे छोड़े। हमने पुलिस बनाई है, कोर्ट बनाए हैं, प्रोसीक्यूटर बनाये हैं, तो क्या वे सब फिजूल हैं? मेरे दिल में आया कि एक आदमी रिश्तेदार है, दोस्त है, उसके लिए सिफारिश आई सो मैंने उसको छोड़ दिया। वह कैसे बन सकता है? मेरे हिसाब से तो वह छूट नहीं सकता अगर वह बेगुनाह है, तो उसको सजा हो ही नहीं सकती, इस तरह से हमारा जो न्याय का दफ्तर है, उसको हम साफ रखें। जज भी हमारे पास ऐसे ही होने चाहियें। जो पुलिस है और जो प्रोसीक्यूटर हैं वे खामख़ाँ केस चलायें और यह सोचें कि इतने केस तो कोर्ट से सजायाफता हों ही, ऐसा नहीं होना चाहिने। जिनको सजा होनी चाहिये उनको ही हो। लेकिन यह सब कानून में कोर्ट का काम रहा। माना कि एक आदमी ने फरियाद की कि इसने मुझ पर हमला किया है, उसको

पकड़ो। पुलीस ने पकड़ लिया। क्या उसको छुड़ाने के लिए मैं प्रधान के पास जाऊँ ? प्रधान कहेगा कि कोर्ट के पास जाओ। अगर फरियादी पीछे यह कहे कि पकड़ कर क्या करेंगे, हमारी दुश्मनी बढ़ेगी, उसको छोड़ो तो वह छूट जायगा। वह कहे कि मैंने फरियाद तो की, लेकिन उस बारे में मैं पुराना (सबूत) देना नहीं चाहता मैं उसको छोड़ देना चाहता हूँ। तब पीछे कोर्ट उसे छोड़ सकती है। पीछे प्रोसीक्यूटर रहा, उसको भी वह वही सम्मति दे सकता है फिर वह छूट सकता है। मगर मानो कि कोई खूनी है और उसने खून किया है उसको छुड़ाना है तो वह फरियादी के कहने पर भी छूट नहीं सकता। वह छूटे तो हमारा काम नहीं चल सकता। मैंने तो वकालत की है और ऐसे आदमी भी छुड़ाये हैं। तो कैसे ? जो खूनी है उसको कहना है और वह कह सकता है कि खून तो मैंने किया, लेकिन अब मेरा दिल साफ़ है, किये का सच्चा पश्चात्ताप है। जिस आदमी ने फरियाद की है या शिकायत की है वह भी यह कहे कि इसको अब सजा नहीं होनी चाहिए, हम तो अब दोस्त बन गये हैं, गुस्से में आकर उसने खून कर दिया था अब उसका खून करने में मुझको क्या फायदा ? अब तो वह मेरा दोस्त बनता है, खिदमत भी कर सकता है। खुदापरस्त हो जायगा, ईश्वर की भक्ति करेगा तो फिर ईश्वर भक्ति से मैं उसको महरूम क्यों करूँ ? खूनी भी कोर्ट से कहेगा कि खून तो किया, गुनाह किया, लेकिन इस वक्त तो माफ़ करो। जो शिकायत करता है वह तो मुझको माफ़ करता है। अब मैं अच्छा काम करूँगा और सारे समाज की सेवा करूँगा। इसलिए मुझे छोड़ा जाय। वह तरीका है खूनी को छुड़वाने का। वह तरीका बाकानून हो सकता है। लेकिन हमारे हाथ में जो हुकूमत आई है उसका हम गैर इस्तेमाल न करें। अगर आज हम गैर उपयोग करने लगेंगे तो सब कहेंगे कि इसको छोड़ो, उसको छोड़ो। बेचारा प्रधान भी क्या करेगा ? ग़लती से किसी को छोड़ने का हुक्म उसने कर भी दिया, तो हुक्म तो कर सकता है, लेकिन वह छूटेगा नहीं। उसका भाई है, दोस्त है, पत्नी है, कुछ भी है। अगर उसने गुनाह किया है तो भी वह यही कहेगा कि उसे छोड़ना मेरा काम नहीं है, कोर्ट के पास जाओ, प्रोसीक्यूटर है उसके पास जाओ, शिकायत करने वाला है उसके पास जाओ, मेरे पास कुछ हो नहीं सकता। प्रधान जब तक ऐसा साफ नहीं होता तब तक हम अपना काम नहीं कर सकते।

★

२२ अक्टूबर, १९४७

पहले तो मैं आपको यह खबर दे दूँ कि कम्बल अभी भी आ रहे हैं। मुझको अभी पता लगा है कि दो सौ कम्बल आज आ गये हैं। ऐसे ही आते रहते हैं और पैसे भी आते रहते हैं। सो मैं उम्मीद करता हूँ जो बहुत से आदमी पड़े हैं उनको ओढ़ने की चीज़ मिल जायगी और मिलने वाली हैं। यह अच्छा है कि इतनी उदारता हमारे लोगों में रही है।

एक भाई मेरे पास आ गये थे। मैं कोई हमेशा, हमेशा, क्या शायद ही, उर्दू अखबार पढ़ता हूँ। उर्दू पढ़ तो लेता हूँ लेकिन उसको पढ़ने में थोड़ी दिक्कत होती है। जब एक बच्चा बारह खड़ी पढ़ लेता है तो आहिस्ता-आहिस्ता पढ़ने लगता है, ऐसा ही मेरा हाल समझो। बच्चे से कुछ थोड़ा ज़्यादा जानता हूँ लेकिन शीघ्रता से पढ़ना हो तो नहीं पढ़ सकता। तो उस भाई ने मुझको एक उर्दू अखबार में से इस तरह से जो चीज़ आई है उसे पढ़ कर सुनाया। उसको सुना और मुझ को दुःख हुआ। सब चीज़ों का पूरा बयान तो मैं यहाँ करना नहीं चाहता। उसमें लिखा है कि अब तो हमने तय कर लिया है—वह जो अखबारनवीस हैं एडीटर साहब, उन्होंने अपने दिल में तय कर लिया है, लेकिन उम्मीद है कि सारे हिन्दुस्तान ने ऐसा तय नहीं किया है—कि सब के सब मुसलमान पाकिस्तान चले जायँ, जो रहता है उसको कट जाना है। या तो उसको काटो या वह पाकिस्तान चला जाय। यह अखबार या एडीटर साहब जो लिखते हैं वह अगर सच्ची पड़े तो यह बड़ी शर्म की बात है। उनकी कलम से ऐसी चीज़ नहीं निकलनी चाहिये थी। ऐसे अखबार तो निकलने ही नहीं चाहियें। अगर वह सचमुच ऐसा मानते हैं कि मुसलमानों को इधर नहीं रहने देना, तो वे लोगों को अपनी राय बता सकते हैं। लेकिन जब वे ऐसा

लिखते हैं तो वह तो ढोंढी पीट कर कहने की सी बात हो गयी कि या तो मुसलमान सब पाकिस्तान चले जायँ या उनको मारो। तो कल मैंने कह दिया था कि जब वे सब पाकिस्तान चले जायँगे तो पीछे क्या करोगे ? आपस में लड़ोगे ? एक सज्जन ने तो मुझ को कह भी दिया कि आपस में लड़ाई शुरू भी हो गयी है। यह लड़ाई तो आपस में होनी ही है। जब एक दफ़ा खून का स्वाद ले लिया तो पीछे वह छूट नहीं सकता। वही हमारा हाल होने वाला है। अखबारनवीस ने ऐसा छापा सो ठीक नहीं है। हमारे लोग तो अखबार के पीछे पागल बन गये हैं। गीताजी को छोड़ो, बाइबिल को छोड़ो, कुरान शरीफ को छोड़ो, अखबार ही हमारी गीताजी है सब कुछ है और उसमें जो आता है उसको हम ब्रह्म वाक्य मान लेते हैं। लोग तो इस तरह से पागल बन गये हैं और अखबार उस पागलपन का लाभ उठा कर ऐसा छापें तो यह बुरी बात है। मैं इस बारे में इससे अधिक नहीं कहना चाहता।

दूसरी बात तो यह है कि हर जगह से देशी रियासतों की शिकायतें आ रही हैं। यह अंग्रेजी जमाने में देशी रियासतें थीं, वे अपने दिल में आये वैसा करती थीं। थोड़ा सा अंकुश तो अंग्रेजी सल्तनत रखती थी। उसको वह रखना ही था क्योंकि उसको सल्तनत चलानी थी। आज तो अंग्रेज़ी ताकत चली गयी है। हाँ, आज सरदार पटेल हैं, उनके हाथ में उनका महकमा है। इसलिए वह तो कुछ करें। लेकिन वे बेचारे क्या कर सकते हैं ? उनकी तो अपनी ज़बान है, हिन्दुस्तान की सेवा कर ली है, इसलिए सरदार बने हैं, लेकिन उनके पास तलवार नहीं, बन्दूक नहीं, लश्कर नहीं। वे खुद थोड़े लश्करी हैं ? वे कमांडर भी नहीं हैं कि उनका हुक्म चले। जब तक सिपाही लोग समझते हैं कि वे तो हिन्दुस्तान का नमक खाते हैं उनके वे हाकिम हैं। मतलब यह कि वे बड़े सेवक हैं, ऐसा मान कर सब चलें, और उनकी मानें तो काम बड़ा सीधा-सीधा चल सकता है।

आज रियासत वाले कहते हैं कि हमने प्रवेश-पत्र पर दस्तख़त तो कर दिये, मगर उससे क्या हुआ ? इससे क्या हमारे पास से कुछ छीन थोड़े ही लिया ? हमारे पास भी तो सिपाही हैं। जब अंग्रेजी सल्तनत थी तब वे खिलौने से थे, लेकिन अब थोड़े ही ऐसे हैं ? देशी रियासतें जो कुछ करना चाहती हैं कर सकती हैं। मैं खुद भी तो देशी रियासत का हूँ। इसलिये मैं जानता हूँ कि वे क्या कर सकती हैं, कितना भला भी कर सकती हैं। मैं देशी रियासतों के राजाओं से बड़े अदब से कहूँगा कि अगर आप इतना अहंकार रखेंगे कि जो रैयत पड़ी है, उसको मार सकते हैं, काट सकते हैं, तो वे रह नहीं सकते हैं। मैंने तो कह दिया है कि जो राजा लोग हैं उनका स्थान है,

अगर वे रैयत के ट्रस्टी बन जाते हैं तो। अगर वे रैयत का हाकिम बन कर रहना चाहते हैं, उसको चूसना चाहते हैं और दबाना चाहते हैं, तो उनका आज कोई स्थान नहीं रह सकता, इसमें मुझे कुछ भी शक नहीं। हिन्दुस्तान का क्या हाल होगा, वह तो ईश्वर ही बेहतर जानता है। राजा लोग पड़े हैं उनके पास तो कोई चारा नहीं है, वे कभी हिन्दुस्तान का राज चला नहीं सकते। पीछे चाहे हम गुलाम ही बन जायँ तो क्या राजा लोग भी गुलाम बनेंगे? वह जमाना चला गया जब वे मन-मानी कर सकते थे। वह एक युग था। अंग्रेजी सल्तनत थी, उसने सोचा कि जो यहाँ राजा लोग हैं वे भी अच्छे हैं, उनकी मारफत हम राज चलायेंगे। वह तो उन्होंने अपना स्वार्थ समझ कर ही किया। तो फिर उसमें उनका दोष क्या निकालना? लेकिन आज हम ऐसे कमनसीब हैं कि हम दोनों पागल बनें और आपस-आपस में लड़ें। उनमें से कोई एक जीते या दोनों को कोई दूसरी या तीसरी ताकत जीत ले या दो चार ताकतें मिल-जुलकर जीतें और हिन्दुस्तान को खा जायँ। तो फिर उसके साथ ही राजा लोगों को भी खा जायँगे। अगर वे हिन्दुस्तान के वफादार रहते हैं और रैयत के नौकर बनते हैं तो खैर है। मैं तो रैयत से भी कहूँगा कि वह बुजदिल क्यों बने? अगर राजाओं के पास हथियार हैं और वे बेहथियार हैं, तो क्या हुआ? हम भी तो सल्तनत के सामने लड़ते थे। हम भी बेहथियार थे। कोई छुपकर भी हथियार रखे हों, ऐसा नहीं था। अगर होता तो मुझको तो इसका इल्म होना ही चाहिये था, लेकिन ऐसा नहीं था। करोड़ों लोगों ने अंग्रेज़ी सत्ता का हृदयबल से सामना किया। हमने सोचा कि अगर वे काटेंगे तो एक लाख को काटेंगे, दो लाख को काटेंगे, तीन लाख को काटेंगे, आखिर कितनों को काटेंगे? हम ४० करोड़ की आबादी हैं, काटते-काटते उसके हाथ काँप जायँगे। ऐसी जो रैयत पड़ी है, उसको आज़ादी तो मिलनी ही चाहिये थी और वह मिली। उस आज़ादी का हम क्या उपयोग करते हैं, यह अलग बात है।

मैं तो कहूँगा कि राजा लोगों को पागल नहीं बनना चाहिये। उनको समझना चाहिये कि वे स्वेच्छाचारी नहीं बन सकते, व्यभिचारी नहीं बन सकते। वे शराब में सारा दिन भर पड़े रहें ऐसा नह हो सकता। यह तो मैंने आप लोगों को और आपकी मारफत राजा लोगों को कह दिया।

एक वक्त तो मैंने कह दिया था, कि अब दशहरा आ रहा है और पीछे एक दिन छोड़कर बकरीद आ रही है, दोनों करीब-करीब एक साथ मिलते हैं। हम हिन्दू और मुसलमान दोनों भयभीत हैं, हमेशा रहते हैं, आज तो ज्यादा भयभीत हैं। क्योंकि आज यहां तो एकतरफा ही ज़्यादती हो सकती है। अगर हिन्दू

पागल बन जायँ और समझें कि मौका मिल गया, क्योंकि बकरीद है, मुसलमानों को काटो। वह बहुत ही बुरी बात होगी। हमारा दशहरा भी है। दशहरा क्या है ?राम जी की जीत मनाने के लिये ही दशहरा का त्योहार है। पीछे कहते हैं कि एकादशी है, उस दिन तो राम का भरत के साथ मिलाप होगा। उसमें से हमें संयम सीखना है, भलापन सीखना है, धर्म क्या चीज़ है उसको सीखना है। अगर वह हम सीख लें तो हम दशहरा सच्चे अर्थ में मनाते हैं। दशहरे के दिन दुर्गा पूजा भी होती है। वह क्या चीज़ है ? हम सब खून के प्यासे रहें यह दुर्गा का अर्थ नहीं है। दुर्गा का अर्थ यह है कि वह एक बड़ी शक्ति पड़ी है, उसकी उपासना करके हम ऊँचे चढ़ सकते हैं।

* *